ते पुण्यवंतः खलु भाग्यवंतः
परं पदं यान्ति स्ववर्गयुक्ताः ॥७॥

श्रीसीता समेत जो श्रीरामनाम महामंगलधाम सकल पाप विनाशक जपते हैं सो महापुण्यात्मा निश्चय करिके बड़े बड़भागी रंगरमरागी हैं, अपने परिवार समेत परमपद जायँगे ॥७॥

रोमाञ्चितशरीराश्च त्यक्तसर्वदुराग्रहाः ।
रटन्ति रामनामाख्यं मन्त्रं ते पावनेश्वराः ॥८॥

जिनके शरीर में रोमांच हो जाता है औ सकल दुराग्रह को त्यागि बैठे हैं औ श्रीरामनाम अखण्ड उच्चारन करते हैं सो पवित्रन में शिरोमनि हैं । पूजनीय हैं ॥८॥

येऽभिनन्दन्ति नामानि जपन्ति च अहर्निशम् ।
मनसा वचसा नित्यं ते वै भागवतोत्तमाः ॥९॥

श्रीरामनाम की प्रशंसा गुनानुकथन जो सर्वदा करते रहते हैं मन वचन करिके ते भक्तन में शिरोमनि हैं ॥९॥

दृढाभ्यासेन ये नित्यं रामनाम्नि रमन्ति च
तेषामभयदाता च श्रीरामोजानकोपतिः ॥१०॥

दृढ़ अभ्यास समेत एकांत में शांत चित्त सर्वोपरि श्रीरामनाम में मति करिके जौन अनुरागी नित्य प्रति रमन करते हैं श्रीनाम महासुधारस का स्वाद लेते हैं, तिन महात्मन को अत्यन्त अभय-दाता श्रीराम जानकीपति हैं उनको कदाचित् भय नहीं ॥१०

विचित्रनाटके

प्रभावतो यस्य हि कुम्भजन्मना
प्रशोषितः सिंधुरपारपारणः ।
तथैव विन्ध्याचलरोधिताद्भुता

मुनीन्द्रराजेन प्रभाकरेण ॥११॥

विचित्र नाटक में कहा है—श्रीरामनाम के प्रभाव से अगस्त्य महाराज अपार सागर को पी गये बिन्दु सम औ बिन्ध्याचल बहुत बड़ा था, सूर्य्याच्छादित करता था, तिसको रोक दिया महामुनीश्वरजू ने जौन श्रीनाम शक्ति द्वारा श्रीनाम की सब आश्चर्य्य शक्ति है ॥११॥

न नामतः साधनमन्यदस्ति वै
न साध्यसौभाग्यमतः परं क्वचित् ।
परात्परं प्रेमप्रकाशकं वरं
सुधासरं सारमनन्तवैभवम् ॥१२॥

श्रीरामनाम से भिन्न साधन साध्य और कुछ नहीं है। परम सुन्दर सौभाग्यताई श्रीरामनाम से है। परात्पर प्रेम के प्रकाशक सुधासार अनन्त विभूति सहित श्रीरामनाम हैं सबसे श्रेष्ठ हैं ॥१२॥

यदीक्षणाच्छम्भुसुतो गणाधिपः
सुरासुरैः प्राथमिकः प्रपूज्यः ।
प्रदक्षिणा यस्य कृते समस्ता
क्षमावती स्यात् परितः प्रदक्षिणा ॥१३॥

जौन श्रीरामनाम की कृपा कटाक्ष किंचित् पायके गनेशजी सब देवता असुर मनुष्यन से पूजनीय होत भये प्रथम ही औ श्रीनारदजी उपदेश सुनिके श्रीरामनाम अखिल ब्रह्माण्डमय की पूजा प्रदक्षिणा करिके सब सृष्टि की प्रदक्षिणा स्वामी कार्तिकेय से प्रथम करि लियो यह पद्मपुरान में कथा है ॥१३॥

सारणां सारमित्याहुर्मुनयः सत्यवादिनः ।
श्रीरामनाम सर्वेशं नित्यानां नित्यमव्ययम् ॥१४॥

सकल सारन का सार महामुनीश्वर सत्यवादी श्रीरामनाम परमेश्वर शुद्ध अविनाशी सब नित्यन को प्रकाशक परम नित्य कहते हैं इसके भिन्न सब साधन श्रमदायक हैं ॥१४॥

सर्वेषां सुलभं नाम सदा सर्वत्र सौख्यदम् ।
ये जपन्ति सदा भक्त्या तेभ्यो नित्यं नमो नमः ॥१५॥

सब जीवमात्र को सुखदायक श्रीरामनाम महामोदधाम जो छन-छन प्रेम प्रतीत बढ़ाय के जपते हैं सो कृतार्थ हो जाते हैं, तिनको मेरा बार बार नमस्कार है ॥१५॥

प्रमोदनाटके

वन्दे श्रीरामचन्द्रस्य नाम मुक्तिप्रदं परम् ।
यत्कृपालेशतोऽस्माकं सुलभं सर्वतः सुखम् ॥१६॥

दोहा—रामनाम महिमा अगम श्रुतिन कह्यो सिद्धान्त ।
युगलानन्य कृपा सुगम समुझि मिटत मन भ्रान्त ॥

प्रमोद नाटक में कहा है—श्रीरामचन्द्र महाराज का परात्पर नाम तिनका हम बन्दन करते । परम मुक्तिदायक श्रीरामनाम है, जिनकी कृपा से हम सबको सब सुख दुर्ल्लभ भी परम सुलभ है ॥१६॥

अनामयं रूपयुगप्रकाशकं सदैवभक्तार्तिहरं कृपानिधिम् ।
स्मरामि श्रीराघवनाम निर्मलं
प्रपूजितं देवमुनीश्वरेश्वरैः ॥१७॥

सकल साधन विनाशतादि रोगन से रहित श्रीसीताराम रूप के प्रकाश करनहारे भक्तन के आरतहरनहारे, कृपा के सागर

श्रीरामनाम हैं। सब मुनीश्वरन करके पूजित, परम निर्मल श्रीरामनाम हैं, तिनका स्मरन हम सदा करते हैं ॥१७॥

नाम्नः पराशक्तिपतेः प्रभावं प्रजानते मर्कटराजराजः।
यद्रूपरागीश्वरवायुसूनुस्तद्रोमकूपेध्वनिमुल्लसन्तम् १८

श्रीरामनाम पराशक्ति पति के प्रभाव को श्रीमहावीर धीर भली भांति जानते हैं. जिनके रोम रोम में श्रीनाम की धुनि उठती रहती है औ श्रीराम रूप उपासक अनुरागिन में श्रेष्ठ श्रीमहावीर जू हैं, श्रीनाम महत्त्व विना जाने जनसमुदाय अन्य साधनन में पचते रहते हैं जब श्रीनाम महिमा जानेंगे तब सब भूल जायगा १८

कषायविक्षेपलयादिहारकं सुतारकं संसृतिसागरस्य।
सदैव दीनार्तिहरं दयानिधिं
स्मरामि भक्त्या परमेश्वरप्रियम् ॥१९॥

वासना विक्षेप तन्द्रादिक समाधि के विघ्न हैं सो सब श्रीरामनाम सनेह समेत उच्चारन किये नाश हो जाते हैं संसार सागर से तारि देते हैं, दीनन के कष्टहारी हैं, दया के समुद्र हैं, परमेश्वर के प्रानप्रिय हैं, ऐसे परमेश्वर श्रीनाम को हम सदा स्मरन करते रहते हैं ॥१९॥

गुणानां कारणं नाम तथैश्वर्यवतां सदा।
संकीर्तनाल्लभेन्मर्त्यः पदमव्ययमुज्ज्वलम्।२०॥

दिव्य गुन समुदाय के तथा सब ऐश्वर्य वालन के कारन श्रीरामनामहैं, संकीर्तन मात्र से परम पद देते हैं जौन एक रस धाम है ॥२०॥

रहस्य नाटके

मधुर मधुरमेतं मङ्गलं मङ्गलानां
सकलनिगमवल्लीसत्फलं चित्स्वरूपम्।

सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा
स भवति भवपारं रामनामानुभावात् ॥२१॥

रहस्य नाटक में कहा है—मधुर-मधुर स्वर से महामंगलन को मंगलदाता सकल श्रुति रूप चैतन्य वृक्ष तिनका परम चैतन्य फल श्रीरामनाम है। एकबार भी जो श्रद्धा अथवा अनादर समेत उच्चारन करता है सो भवसागर के पार हो जाता है श्रीरामनाम शक्ति सामर्थ से ॥२१॥

चेतोऽलेः कमलद्वयं श्रुतिपुटीपीयूषपूरद्वयं
वागीशानयनद्वयं घनतमश्चण्डांशुचन्द्रद्वयम्।
छान्दस्सिन्धुमणिद्वयं मुनिमनः कासारहंसद्वयं
मोक्ष श्रीश्रवणोत्पलद्वयमिदं रामेति वर्णद्वयम् ॥२२॥

श्रीरामनाम को वरन सुजस परत्व श्रवन करो। कैसे हैं श्रीरामनाम! चित्त रूप भ्रमर के रस देने को परम रसमय दो कमल है, श्रवन रूप दोनों के पूरन करने के अर्थ दो अमृत की धारा हैं, सरस्वती बागदेवी को परम प्रकाश देने को दो नेत्र हैं। महामोह तम का नाश करने को आश्चर्य सूय चन्द्रमा लौकिक हैं, वेद रूप समुद्र के दो अनुपम रत्नेश हैं औ मुनिन का मन सोई मानसरोवर तिसके निवासी दोऊ हंस हे औ मोक्ष रूपा लक्ष्मी तिसके शोभादायक दोऊ कान के करनफूल हैं ॥२२॥

रामनाम परब्रह्म दुराराध्यं दुरात्मनाम्।
साध्यं च सुलभं नित्यं प्रमसम्पन्नमानसैः ॥२२॥

रामनाम परमब्रह्म है, दुष्ट कुतर्कवादी चित्तवालन को दुराराध्य है सहित सनेह मन वालन को सुलभ भांति से साध्य हैं ॥२३॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानि रामनाम्नि चसंस्थितम्।

यथैव लोके सुस्पष्टसूत्रे मणिगणा इव ॥२४॥

श्रुति स्मृति पुरान सब रामनाम में स्थित हैं। जैसे लोक में प्रसिद्ध सूत्र में सम मनिका गुथे रहते हैं ऐसे ही सब शब्द समुदाय श्रीरामनाम में टिके हैं नाम से बाहर कुछ पदार्थ नहीं है ॥२४॥

स्मरणाद्रामनाम्नस्तु यत् सुखं न लभेन्नरः ।
तत्सुखं खे गतं पुष्पं वन्ध्यापुत्रमिवाद्भुतम् ॥२५॥

जौन सुख शक्ति ऐश्वर्य श्रीरामनाम उच्चारन से जीव सचेत को अभिप्राय जापक को प्राप्त न होय सो सब पदार्थ मिथ्या आकाश का फूल बांझ पुत्र सम है तात्पर्य इह है के सब पदार्थ नाम नेही को प्राप्त होता है आश्चर्य्य न जानना॥२५॥

प्रेमार्णवनाटके

चित्राच्चित्रतरं लोके दृष्टं न कथितं मया ।
सार्वभौमस्य रामस्य नाम्नैव सुजपत्यलम् ॥२६॥

प्रेमार्णव नाटकमें कहा है—आश्चर्य्य सेआश्चर्य महा हमने लोक में देखा है परन्तु कहा नहीं सोकौन अद्भुत बात है महा चक्रवर्त्तीश्वर श्रीरामनाम प्रगट हैं तौ भी मूढ़तथा पण्डित नहीं जप करते औ तुच्छ साधनन में पचते है समर्थ शरन त्यागि के।२६॥

क्षणं विहाय श्रीरामनाम यः पामराधमः ।
कुरुते चान्यवस्तूनां चिन्तनं स तु गर्दभः ॥२७

छनमात्र जौन श्रीरामनाम को त्यागि के अन्य पदार्थन का चिन्तवन श्रद्धा समेत करते हैं सो महा खर से खर हैं मनुष्य नहीं हैं ॥२७॥

प्रेमवैचित्र्यता प्रोक्ता दुर्लभा साधनान्तरैः ।
तां लभेद्रामनाम्नातु जपाच्छीघ्रं न संशयः ॥२८॥

प्रेम की विचित्रता उसको कहते हैं जहां वियोग में साक्षात् संयोग और संयोग में वियोगाभास हो जाय सो ऐसा महादुर्ल्लभ से दुर्ल्लभ हैं अन्य साधनन से परन्तु श्रीरामनाम जप करने से शीघ्र प्राप्त हो जात है तत्परता चाहिए ॥२८॥

सर्वाशां संपरित्यज्य संस्मरेन्नाम मङ्गलम् ।
यदीच्छा वर्तते स्वच्छा प्राप्तिरूपा परात्परा ॥२९॥

सकल आशा त्यागि के महामंगलमय श्रीरामनाम जपो । जो परात्पर श्रीरामिलने की इच्छा सांची होय तौ श्रीरामनाम में तत्पर हो जावो ॥२९॥

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्य्यदायके भाषाटीकायां श्रीनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरण संगृहीते नाटकवाक्यप्रमाण-निरूपणनाम चतुर्थः प्रमोदः ॥ ४ ॥

अथ स्मृत्युक्तवचनानि

मनुस्मृतौ

सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्तविभ्रमकारकाः ।
एक एव परो मन्त्रः श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥१॥

अब स्मृतिन के वचन कहते हैं—स्मृति पुराण दो प्रकार के हैं लघु दीर्घ भेद से । मनुस्मृति में कहा है—सात कोटि महामन्त्र हैं सो सब चित्त को भ्रमदायक श्रम सौंपनवाले हैं परममन्त्र शिरोमनि राम दोऊ वरन अति अभिराम है ॥१॥

येषां नित्यं रमेच्चित्तं रामनाम्नि सदोज्ज्वले ।
तेषां पुण्यौघमुत्कृष्टं जायते हि प्रतिक्षणम् ॥२॥

जिनका चित्त निरन्तर महाउज्जवल श्रीराम में रमण करता

है तिनको महा उत्कृष्ट सुकृत पल-पल में प्राप्त होत हैं जौन कहा नहीं जाता ।।२।।

दक्षस्मृतौ

धन्या माता पिता धन्यो धन्याद्धन्यतमं कुलम् ।
यत्र श्रीरामनाम्नस्तु जापको जायते शुचिः ।।३।।

दक्षस्मृति में कहा है—वह माता पिता कुल देश सम्बन्ध सब श्रेष्ठ सर्वोत्तम है जहां श्रीरामनाम जापक बड़भागी परम पवित्र निवास करे ।।३।।

विषं तस्य सुधा प्रोक्तं शत्रुस्तस्य सुहृद्भवेत् ।
सर्वेषां प्रेमपात्रं सः यस्य नाम्नि सदा रुचिः ।।४।।

श्रीरामनाम जापक को महाकालकूट विष अमत हो जाता है। महाशत्रु परम मित्र हो जाता है सब चराचर उनपर प्रीति करते हैं श्रीनाम सम्बन्ध से ।।४।।

धर्मराजस्मृतौ

दृष्ट्वा श्रीरामनाम्नस्तु जापकं ध्यानतत्परम् ।
अभ्युत्थानं सदा स्नेहात् करिष्येऽहं महामुने ।।५।।

श्रीधर्मराज की स्मृति में कहा है—श्रीरामनाम जप ध्यान में तत्पर महात्मा को देखिके हम उठ खड़े होते हैं, हे श्रीनारद जी ! सब प्रकार हमसे पूजित होय के परम पदमें जाते हैं ।।५।।

स वै धन्यतरो देशः साक्षाच्छ्रीधामसन्निभः ।
यत्र तिष्ठन्ति श्रीरामनामसंलापनैष्ठिकाः ।।६।।

सो देश धन्य है साक्षात् श्रीधाम के सम महापावन है जहां श्रीरामनाम जापक सनेही निवास करते हैं ।।६।।

कात्यायनस्मृतौ

मिथ्यावादे दिवा स्वापे बहुशोऽम्बुनिषेवणे ।
रामनामाक्षरं जप्त्वा सद्यः पूतः प्रजायते ।।७।।

कात्यायन स्मृति में कहा है—मिथ्या बचन बोलने से दिन के सोने से बहुत जल पीने से जो पाप हो जाता है सो श्रीरामनाम स्मरन से शीघ्र नष्ट हो जाता है परम पुनीतता प्रदायक श्रीरामनाम हैं ॥७॥

कृतैश्च क्रियमाणैश्च भविष्यद्भिश्च पातकैः
रामेति द्व्यक्षरं नाम सकृज्जप्त्वा विशुध्यति ॥८॥

भूत भविष्य वर्त्तमान संबंधी सब पाप ताप श्रीरामनाम एक बार कहे मे अनायास नाश हो जाते हैं बड़ा प्रताप श्रीनाम दोऊ वरनराज का है परम शुद्धता श्रीरामनामाधीन है ॥८॥

आयासः स्मरणे कोऽस्य मोक्षं यच्छति शोभनम् ।
पापक्षयश्च भवति स्मरतां तदहर्निशम् ॥९॥

आयास श्रीरामनाम उच्चारन में कौन है औ थोरे सुमिरन किये दुर्ल्लभ मोक्ष देते हैं। जो दिन-राति स्मरन करते हैं सो निष्पाप होके परमेश्वर स्वरूप हो जाते हैं ॥९॥

अभिमानं परित्यज्य चेतसा शुद्धगामिनाम् ।
शृणवन्तु रामभद्रस्य नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम् ॥१०॥

अभिमान त्यागिके शुद्ध चित्त होय के श्रीराननाम माहात्म्य परम उज्ज्वल श्रवन करना चाहिए ॥१०॥

सांखल्यस्मृतौ

श्रवणात्कीर्तनाद्यस्य नरो याति निरापदम् ।
तच्छ्रीमद्रामनामाख्यं मन्त्रं वै संश्रयाम्यहम् ॥११॥

सांखल्य स्मृति में कहा है—श्रीरामनाम के श्रवन कीर्त्तन से निरापद पदको प्राप्त होत हैं, ऐसे श्रीरामनाम रूप महामन्त्र शिरोमनि को हम सदा स्मरन करते हैं, श्रीरामनाम को निरन्तर

रटन करना चाहिए प्रीति बढ़ाय के ॥११॥

पापानां शोधकं नित्यं परानन्दस्यबोधकम् ।
रोधकं चित्तवृत्तीनां भजध्वं नाम मंगलम् ॥१२॥

सब पापन के शुद्धकरन हारे परमानन्द के बोधक श्रीराम-नाम हैं, चित्त की जो पांचो वृत्ति प्रमान विपर्य्यय विकल्प निद्रा स्मृति रूप तिनको नाश करि डारते हैं, ऐसे श्रीरामनाम को जप करना चाहिए ॥१२॥

हारीतस्मृतौ

इमं मन्त्रमगस्त्यस्तु जप्त्वारुद्रत्वमाप्तवान् ।
ब्रह्मत्वं काश्यपश्चैव कौशिकोऽप्यमरेशताम् ॥१३॥

हारीतस्मृति में कहा है—श्रीरामनाममय महामन्त्र को श्री-अगस्त्य जू जप करिके रुद्र पद को प्राप्त भये, काश्यपमुनि ब्रह्माके पद को प्राप्त भये, विश्वामित्रजी देवतन के स्वामी होत भये १३

कार्तिकेयो मनुश्चैव इन्द्रार्कगिरिनारदाः ।
वालखिल्यादि मुनयो देवतात्वं प्रपेदिरे ॥१४॥

कार्तिकेय,, मनु, इन्द्र, सूर्य्य, पर्वत, मुनि, श्रीनारद बालखिल्यादि महामुनि सब देवता होत भये, श्रीरामनाम प्रताप से अपनी-अपनी इच्छानुसार, ॥१४॥

अद्यापि रुद्रः काश्यां वै सर्वेषां त्यक्तजीविनाम् ।
दिशत्येतन्महामन्त्रं तारकं ब्रह्मनामकम् ॥१५॥

अब भी श्रीशंकर जू काशी में सब शरीर त्यागने वालों के दच्छिन कान में श्रीरामनाम तारक महामन्त्र उपदेश करते हैं जिसके सुनने मात्र से चराचर परमधाम जाते हैं।

यस्य श्रवणमात्रेण सर्व एव दिवं गताः ।

प्रजप्तव्यं सदा प्रेम्णा तन्मन्त्रं रामनामकम् ॥१६॥

तातें परात्पर श्रीरामनाम को सर्वदा सनेह समेत जपना सबको उचित है, अनुरागिन विवेकिन को और साधन करना केवल श्रमदायक है ॥१६॥

विनैव दीक्षां विप्रेन्द्र पुरश्चर्यां विनैव हि ।
विनैव न्यासविधिना जपमात्रेण सिद्धिदः ॥१७॥

श्रीरामनाम बिना दीक्षा लिये भी जप करने वालेन को कृतार्थ करते हैं, महामहिमा है, पुरश्चरनकी भी अपेक्षा नहीं करते हैं न्यासादिक की भी चाह नहीं है केवल जपमात्र करने से परम फल दायक है, सतगुरु बिना श्रीरामनाम में यथार्थ प्रतीत नहीं होता है, तातेश्रीगुरुन के शरन होना उचित है ॥१७॥

तस्मात् सर्वात्मना रामनाम रूपं परं प्रियम् ।
मन्त्रं जपेत सदा धीमान् संविहायान्यसाधनम् ॥१८

हे प्रिये ! ताते श्रीरामनाम रूप परम प्रेमास्पद मन्त्रराज सर्वदाकाल विवेकिन को जप किया जाना चाहिए सब कर्त्तव्य का आशा छोड़िके बुद्धिमान्को श्रीरामनाममें तत्पर होना चाहिये १८

वैष्णवस्मृतौ

राममनामरता ये च रामनामपरायणाः ।
वर्णा वा वर्णबाह्या वा ते कृतार्थाः सदा भुवि ॥१९॥

वैष्णवस्मृति में लिखा है—जौन बड़भागी श्रीरामनाम से प्रीति किये है औ निरन्तर रटन में तत्पर हैं । चाहे चार बरन में होय चाहे बरन से बाहर चांडालादिक शरीर से होय परन्तु श्रीरामनाम प्रताप से वह परम कृतार्थ रूप है भूमि में, संशय बिना ॥१९॥

स्वपन् भुञ्जन् व्रजंस्तिष्ठनुत्तिष्ठंश्च वदंस्तथा ।
योवक्ति रामनामाख्यं मन्त्रं तस्मै नमो नमः ॥२०॥

सोते भोजन पावते उठते बैठते बोलते चलते सब समय में जौन जन श्रीराममनाममय महामन्त्र जप करता है। तिनको मेरी बारम्बार नमस्कार है ॥२०॥

अत्रिस्मृतौ

कवले कवले कुर्वन् रामनामानुकीर्तनम् ।
यः कश्चित् पुरुषोऽश्नाति सोऽन्नदोषैर्न लिप्यते ॥२१॥

अत्रि स्मृति में कहा है—जौन बड़भागी ग्रास ग्रास प्रति श्रीरामनाम भीतर बाहर से उच्चारन करते हैं तिनको अन्न का दोष कुछ नहीं लगता है चाहे जैसा मलीन अन्न होय परम पावन हो जाता है। परन्तु जानि के मलीन अन्न तथा मांस मद्य तामसी जन्तुन के अहार को ग्रहन न करे ॥२१॥

सिक्थे सिक्थे लभेन्मर्त्यो महायज्ञाधिकं फलम् ।
यःस्मरेद्रामनामाख्यं मन्त्रराजमनुत्तमम् ॥२२॥

दाने-दाने पर महायज्ञ से विशेष फल है जो श्रीरामनाम महामन्त्रराज समेत भोजन पावते हैं सो धन्य हैं ॥२२॥

साम्वर्तकस्मृतौ

असंख्यजन्मसुकृतैर्युक्तो यदि भवेज्जनः ।
तदा श्रीरामसन्मन्त्रे रतिस्संजायते नृणाम् ॥२३॥

साम्बर्तक स्मृति में कहा है—अनन्त जन्मन के पुण्य सहित जब जीव होता है तब श्रीरामनाम सतस्वरूप में प्रीति करता है ॥२३॥

तन्नामस्मरतां लोके कर्मलोपो भवेद्यदि ।

तस्य तत्कर्म कुर्वन्ति त्रिंशत्कोटयो महर्षयः ॥२४॥

श्रीरामनाम स्मरन करते हुए जो सन्ध्या बन्दनादिक कर्म लोप हो जाय तौ उसके निमित्त तीस करोड़ बड़े-बड़े ऋषि कर्म करते हैं, देखो श्रीरामनाम का प्रताप कैसा है ॥२४॥

आङ्गिरसस्मृतौ

कान्तारवनदुर्गेषु सर्वापत्सु च संभ्रमे ।
दस्युभिस्संनिरुद्धे च यस्तु श्रीनाम कीर्तयेत् ॥२५॥

आङ्गिरस स्मृति में कहा है—महा उजाड़ भयानक वन सकल कष्ट महामूल भ्रम तथा चोरन के घेरे में महा खेद में ॥२५॥

ततः सद्यो विमुच्येद्वै रामनामप्रभावतः ।
एतादृशं सदा स्वच्छं स्वतन्त्रं रामनाम च ॥२६॥

ऐसे कष्ट में भी जो श्रीरामनाम उच्चारन करता है सो श्रीनाम प्रभाव से सब उपाधि रहित हो जाता है, ऐसे स्वच्छ सकल भांति स्वतन्त्र श्रीनाम को सदा भजन करना योग्य है ॥२६॥

शनैश्चरस्मृतौ

मत्कृता या भवेद्बाधा महादुःखौघदायिनी ।
रामनाम्नो जपोत्साही मुच्यते स्वल्पकालतः ॥२७॥

शनैश्चर स्मृति में कहा है—मेरी जो बाधा साढ़े सात वर्ष वाली महादुःखदायिनी सो सब श्रीरामनाम स्मरन से थोरे काल में विनष्ट हो जाती है ॥२७॥

सर्वोपद्रवनाशार्थं रामनाम जपेद् बुधः ।
सत्यं सत्यं न संदेहो मन्तव्यं सततं जनैः ॥२८॥

सब उपाधिन के विनाशार्थ श्रीरामनाम जप किया चाहिये सत्य-सत्य हमारा वचन मानना योग्य है सज्जन को ॥२८॥

याज्ञवल्क्यस्मृतौ

परमात्मानमव्यक्तं प्रधानपुरुषेश्वरम् ।
अनायासेन प्राप्नोति कृते तन्नामकीर्तनम् ॥२९॥

याज्ञवल्क्य स्मृति में कहा है—परमात्मा अप्रगट रूप माया पुरुष दोनों के ईश्वर जो श्रीराम हैं सो श्रीनाम उच्चारन से साक्षात् प्राप्त होता है श्रम बिना थोरे दिन में ॥२९॥

ज्ञानविज्ञानसम्पन्नं वैराग्यं विषयेष्वनु ।
अमलां प्रीतिमुन्निद्रां लभते नामकीर्तनात् ॥३०॥

शास्त्रीय ज्ञान तथा अपरोक्ष बोध औ विषय में वैराग्य औ सांची प्रीति महाप्रकाशमान उज्ज्वल स्वरूप इह सब श्रीरामनाम उच्चारन संकीर्त्तन से प्राप्त होता है, कोई बस्तु दुर्लभ नहीं रहता है। श्रीरामनाम का बड़ा प्रताप है ताते सावधान होय के जपो।३०

वशिष्ठस्मृतौ

रामनामजपेनैव तदर्चा चोत्तमा स्मृता ।
अन्येषां लौकिकी पूजा प्रतिष्ठावर्द्धिनी भुवि ॥३१॥

श्रीवशिष्ठ स्मृति में कहा है—श्रीरामनामजप करने से श्रीरामनाम की उत्तम पूजा श्रुतिसम्मत है औ श्रीरामनाम बिना सब पूजा लोक में प्रतिष्ठा बढ़ानेहारी यात्रा लगानेहारी है जिस युग का जौन धर्म है सोई कर्तव्य है ॥३१॥

श्रीराम राम रामेति ये वदन्त्यपि पापिनः ।
पापकोटिसहस्रेभ्यस्तेषामुद्धरणं क्षणात् ॥३२॥

श्रीरामरामराम जौन पापी भी उच्चारन करता है तिसका उद्धार कोटिन पापन से हो जाता है छनमात्र में ॥३२॥

गौतमस्मृतौ

तावद्विजृम्भते पापं ब्रह्महत्या पुरस्सरम् ।
याबच्छ्रीरामनाम्नस्तु नास्ति संभाषणं नृणाम् ॥३३॥

गौतम स्मृति में कहा है—ब्रह्महत्यादिक पाप तबहीं तक शरीर में गाजि रहे हैं जब तक श्रीरामनाम का उच्चारन मनुष्य नहीं करते हैं ॥३३॥

रामनाम्नः परं तत्त्वं समं वा यस्त्वघो वदेत् ।
संसर्गं तस्य यः कुर्याद्रामद्वेषी भवेत्तु सः ॥३४॥

श्रीरामनाम के सम अथवा अधिक जौन मूढ़ आन तत्त्व सिद्धांत करते हैं सो बड़े पापी हैं, तिनके संग करने से श्रीसीताराम का विरोधी हो जाता है ॥३४॥

माण्डव्यस्मृतौ

सुरापी ब्रह्महा स्तेयी चौरो भग्नव्रतोऽशुचिः ।
स्वाध्यायोपार्जितः पापी लुब्धो नैष्कृतिकः शठः ॥३५

मांडव्यस्मृति में कहा है—मद्यपी, ब्राह्मनघाती चोर, ब्रत त्याग करनेहारा ,अपावन, वेदाध्ययन करिके पेट भरने वाला पापी लोभी, कृतघ्नी सठ ॥३५॥

अव्रती वृषलीभर्ता कुनखी सोमविक्रयी ।
सोऽपि मुक्तिमवाप्नोति रामनामानुकीर्तनात् ३६॥

अपने आश्रम वरन के ब्रत को न करने वाला, शूद्र स्त्री का पति, बुरे नखवाला, सोमलता को बेचने वाला, इत्यादिक महापापी सब श्रीरामनाम उच्चारन करने से कृतार्थ हो जाते हैं। श्रीनाम उच्चारन किये जाय और आशा छोड़िके तौ शीघ्र ही मोच्छ पावै, सन्देह नहीं है ॥३६॥

बृहस्पतिस्मृतौ

यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु स्मरणं नास्ति भो मुने ।
तावद् यमभटाः सर्वे विचरन्तीह निर्भयाः ॥३७॥

बृहस्पति स्मृति में कहा है—जबतक श्रीरामनाम का स्मरन नहीं है हे मुने ! तबहीं लौं भूमि में यमन के भट निर्भय घूमते हैं, जब लोक में श्रीरामनाम के जप का प्रचार होयगा तब शंकित होय के जहां तहां जमदूत ढूँढते फिरेंगे पापिन को ॥३७॥

रामनाम परं ब्रह्म सर्वदेवैः प्रपूजितम् ।
सर्वेषां सम्मतं शुद्धं जीवनं महतामपि ॥३८॥

श्रीरामनाम परब्रह्म सब देवतन से पूजित, सब श्रुति संतन का सम्मत है। सब महात्मन को परम जीवन श्रीरामनाम है। ३८॥

आतातपस्मृतौ

नित्यंधिक् क्रियतेऽस्माभिस्तेषां भाग्येषु निश्चितम् ।
नो पीतं रामनामाख्यं पीयूषं मानवाऽकृतौ ॥३९॥

आतातप मुनि के स्मृति में कहा है—तिन नीचन के भाग्य पर हम सब मुनिन का नित्य धिक्कार है, जौन श्रीरामनाम परम पियूष का स्वाद मनुष्य तन में न चखा, सो महा अधम है ॥३९॥

सूक्ष्ममत्यन्तमात्मानं प्रवदन्ति विपश्चितः ।
तस्याऽप्यनुभवः साक्षाज्जायते नामकीर्तनात् ॥४०॥

विवेकी सन्त आत्मा के स्वरूप को अत्यन्त सूक्ष्म कहते हैं, तिसका भी यथार्थ अनुभव श्रीरामनामोच्चारन से हो जाता है४०

ज्ञानानां परमं ज्ञानं ध्यानानां परमो लयः ।
योगानां परमो योगो रामनामानुकीर्तनम् ॥४१॥

ज्ञानन में मुख्य ज्ञान, ध्यानन में मुख्या लय, समाधि योगन

में मुख्य योग, रोग शोग रहित श्रीरामनाम है ॥४१॥

अयमेव परो लाभः सर्वेषां जगतीतले ।
नामव्याहरणं नित्यं श्रीरामस्य सनातनम् ॥४२॥

इस लोक के सब लाभन में परमलाभ इह है के सनातन परमेश्वर श्रीरामनाम का निरन्तर उच्चारन होय सब व्यवहार त्यागि के इसके परे कोई कर्त्तव्य नहीं है ॥४२॥

परं ब्रह्ममयं नाम वेदानां गुह्यमुत्तमत् ।
यत्प्रसादात् परां शान्ति लभते पातकी नरः ॥४३॥

श्रीरामनाम परमब्रह्ममय है, सब बेदन का सार सिद्धांत परम गुह्यन में उत्तम है। अनन्त पाप भी किये होय सो भी परम शान्ति को प्राप्त होता है श्रीरामनाम प्रभाव से ॥४३॥

पराशरस्मृतौ

ब्राह्मणः श्वपची भुञ्जन् विशेषेण रजस्वलाम् ।
यदन्नं सुरया पक्वं मरणे नाम संस्मरेत ॥४४॥

पराशर स्मृति में कहा है—जौन ब्राह्मन चांडाली तिसमें भी रजस्वला तिसका संग तथा तिसका किया भोजन पावै, सो अन्न मदिरा में चुराया होय ऐसा पापी भी अन्त में श्रीरामनाम उच्चारन करे ४४॥

स याति परमं स्थानं सर्वपापविवर्जितः ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं रामनामप्रभावतः ॥४५॥

सो विशेष से परमधाम जाता है, सकल पापन से रहित होय के सत्य-सत्य-सत्य कहते हैं श्रीरामनाम के प्रभाव से सब सुगम है ॥४५॥

तद्देहलक्षणं वृक्षं पापरूपास्तु पक्षिणः ।

त्यक्त्वा चोड्डीय गच्छन्ति विलम्बं संविहाय च ॥४६॥

जीवों का देह रूप वृक्ष में पाप रूपी पक्षी बसते हैं सो श्री-रामनाम उच्चारन द्वारे शीघ्र ही उड़ि जाते हैं, बिलम्ब छोड़ि के ॥४६।

क्रतुस्मृतौ

तन्नास्ति कायजं लोके वाक्यजं मानसं तथा।
यत्तु न क्षीयते पापं रामनामजपान्मुने ॥४७॥

क्रतु स्मृति में कहा है—ऐसो पाप शरीरज, मानस, वचनज, कोई पाप नहीं है जौन श्रीरामनाम जप के किये नष्ट न ह्वो जाय भली भांति से ॥४७॥

न तावत् पापमस्तीह यावन्नाम्ना हतस्मृतम् ।
अतिरेकभयादाहुः प्रायश्चित्तान्तरं बुधाः॥४८॥

जितना नाम उच्चारन से पाप विनाश हो जाता है तितना लोक में पाप नहीं ताते महामुनिन ने अधिकता के भय से और नाना प्रकार का प्रायश्चित स्मृतिन में कहा है अभिप्राय इह है के श्रीनाम का जप केवल स्वरूप प्राप्ति के अर्थ है ॥४८॥

महाभारते शान्तिपर्वणि भगवद्वाक्यम्

ऋग्वेदेऽथ यजुर्वेदे तथैवाथर्वसामसु ।
पुराणे सोपनिषदि तदेवं ज्योतिषेऽर्जुन ॥४९॥

महाभारत शांति पर्व्व में श्रीभगवान का वचन है-ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद अथर्वनवेद, पुरान, उपनिषद ज्योतिष में हे अर्जुन ॥४९॥

सांख्ये च योगशास्त्रे च आयुर्वेदे तथैव च ।
बहूनि मम नामानि कीर्त्तितानि महर्षिभिः ॥५०॥

सांख्य योग शास्त्र, आयुर्वेद तथा सब ग्रन्थन में महामुनिन ने हमारे अनन्तनाम कथन किये हैं ॥५०॥

गौणानि तत्र नामानि कर्मजानि च कानि च ।
सर्वेषु मन्त्रतत्त्वेषु रामनामपरात्परम् ॥५१॥

उन नामों में कोई गुन सम्बन्धी कोई कर्म सम्बन्धी नाम हैं औ श्रीरामनाम सर्वोपरि विराजमान हैं, इनसे परे और नाम नहीं हैं स्वरूपमय श्रीरामनाम हैं ॥५१॥

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिव से परात्परैश्वर्यदायके भाषाटीकायां श्रीनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरण सगृहीते नाटकवाक्यप्रमाण-निरूपणंनाम पञ्चमः प्रमोदः ॥ ५ ॥

अथ रहस्योक्तवचनानि

शिव रहस्ये

शोचन्ते ते तपोहीनाः स्वभाग्यानि दिने दिने ।
प्रमादेनापि यैर्नोक्तं श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥१॥

शिव रहस्य में कहा है—सोच करते हैं तीनों काल में जौन तप करिके हीन हैं, अपने भाग्यन को दिन-दिन प्रति, जिसने श्रीरामनाम को प्रमाद से कहिये असावधानता से भी जो नहीं जप करते हैं उह महा अभागी हैं सदा सोचते रहेंगे ॥१॥

रामनाम सुविज्ञेयाः षण्मात्रास्तत्त्वबोधकाः ।
जानन्ति तत्त्वनिष्णाता रामनामप्रसादतः ॥२॥

दोहा-रामनाम अनुराग धन, चिन्तामनि चयसार ।
युगलानन्य सनेह से, जपिये बारहिंबार ॥
सीताराम प्रपन्न बिन, भये न मोद अनन्त ।
युगलानन्य सनेह सजि, पाइअ प्रभा समंत ॥

श्रीरामनाम में तत्त्व पदार्थ की बोध करनहारी छः मात्रा है

जौन यथार्थ रहस्य के ज्ञाता हैं सो श्रीरामनाम प्रसाद से जानते हैं ॥२॥

रामनाम्नि स्थितो रेफो जानकी तेन कथ्यते ।
रकारेण तु विज्ञेयः श्रीरामः पुरुषोत्तमः ॥३॥

श्रीरामनाम में अर्द्धमात्रा है सो श्रीजानकी जी का स्वरूप है। श्रीराम भेदही है। अकारसमेत श्रीराम पुरुषोत्तम समझो।३

अकारेण तु विज्ञेयो भरतो विश्वपालकः ।
व्यञ्जनेन मकारेण लक्ष्मणोऽत्र निगद्यते ॥४॥

दीर्घाकार श्रीब्रह्मरूप भरत जी का स्वरूप है। सब विश्व को पालनहारे हैं । अकार रहित मकार श्रीलक्ष्मन स्वरूप अनूप हैं ॥४॥

ह्रस्वाकारेण निगमैः शत्रुघ्नः समुदाहृतः ।
मकारार्थो द्विधा ज्ञेयः सानुनासिकभेदतः ॥५॥

ह्रस्वाकार को वेद शत्रुघ्न जी का स्वरूप कहते हैं। अक्षर में दो भेद हैं । सानुनासिक—निरनुनासिक । इहां मकार सानुनासिक है ॥५॥

प्रोच्यन्ते तेन हंसा वै जीवाश्चैतन्यविग्रहाः ।
संसारसागरोत्तीर्णाः पुनरावृत्तिवर्जिताः ॥६॥

मकार में जो अर्द्धचन्द्र है सो शुद्ध हंस जीवन का वाचक है। चैतन्य विग्रह है, संसार सागर से पार है, पुनः इस लोक में नहीं आवता ।६।

सेवाधिकारिणः सर्वे श्रीरामस्य परात्मनः ।
एतत्तात्पर्यमुख्यार्थादन्यार्थो योऽनुभूयते ॥७॥

सब जीव ईश्वर श्रीराम परमात्मा के सेवाधिकारी हैं। इह

मुख्य तातपर्य्य अर्थ है, इससे भिन्न जो अर्थ है सो अनर्थ रूप है। श्रीरामनाम का अर्थ अनन्त प्रकार का है मुनिन के मत अनुसार जिस अर्थ में जिसकी प्रीति होय सो मनन करिके श्री-रामनाम पारायन हो जाय। केवल कथनी में दिन-राति अटक न जाय। अभ्यास में तत्पर हो जाय सब आशा छोड़िके ॥७॥

सोऽनर्थ इति विज्ञेयः संसारप्राप्तिहेतुकः ।
तस्मात्तात्पर्यमर्थं च मन्तव्यं नामतन्मयैः ॥८॥

सोई अनर्थ रूप है संसार प्राप्ति का कारन है जौन मुख्य अर्थ से भिन्न अर्थ है। श्रीरामनाम तत्परन को मुख्य अर्थ का विचार करना चाहिए बारम्बार ॥

नारायणरहस्ये श्रीनारायणवाक्यं नारदं प्रति

यथौषधं श्रेष्ठतमं महामुने
अजानतोऽप्यात्मगुणं प्रकुर्वते ।
तथैव श्रीराघवनामतो जनाः
परं पदं यान्त्यनयासतः खलु ॥९॥

नारायन रहस्य में श्रीनारायन का वचन है श्रीनारदजी से-जैसे श्रेष्ठ शक्तिमान औषधि बिना जाने भी अपना गुन करत है तैसे ही श्रीरामनाम के परत्व को बिना जाने भी परम पद होता है अन्त समय ज्ञान हो जाता है श्रीरामनाम कृपा से श्रीनामप्रताप से निश्चय करना चाहिए ॥९॥

यथा दीपेन धाम्नस्तु तमस्तोमविनाशनम् ।
तथा श्रीरामनाम्ना तु अविद्यासन्निवर्तते ॥१०॥

जैसे दीपक करिके अनेक युगन का तम छन भर में शांति हो जाता है तैसे हीश्रीरामनाम प्रताप बोध से अज्ञान नाश हो

जाता है ॥१०॥

यन्नामकीर्तनाद्दोषास्सर्वे नश्यन्ति तत्क्षणात् ।
विनिर्दोषायते तस्मै श्रीरामाय नमोनमः ॥११॥

जिन श्रीराम के नाम कीर्त्तन से सब दोष छन भर ने विनष्ट हो जाते हैं ऐसो निर्दोष स्वरूप श्रीराम को मेरी नमस्कार है।११॥

त्यजेत् कलेवरं रोगी मुच्यते सर्वकर्मभिः ।
भक्त्याऽऽवेश्य मनो यस्मिन् वाचा श्रीनाम कीर्तने॥१२

रोग ग्रसित शरीर छूटने समय जो सनेह समेत श्रीराम स्वरूप में चित्त देय के बचन से नामोच्चारन करे तो सब पाप उसके छूटि के कर्म रहित होय के परमधाम जाता है ॥१२॥

यस्तारयति भूतानि त्रिलोकीसंभवानि च ।
स्वनामकीर्तनेनैव तस्मै नामात्मने नमः ॥१३॥

जो श्रीराम परात्परेश अपनो नाम उच्चारन कराय के तीनों लोकों के जीव को तारते हैं सो श्रीरामनाम स्वरूप को मेरी नमस्कार है ॥१३॥

श्रीरामेत्युक्तमात्रेण दैहिकः क्लेशबन्धनः ।
पापौघो विलयं याति दानमश्रोत्रिये तथा ॥१४॥

श्रीरामनाम उच्चारन करन मात्र से सांसारिक बन्धन छूटि जाता है परिवार का । औ पापन का समूह ऐसे निर्मूल हो जाता है जैसे बिना वेद पढ़े ब्राह्मण को दान दिया शीघ्र नष्ट हो जाता ॥१४॥

ब्रह्म रहस्ये

नियतं रामनाम्नस्तु कीर्तनाच्छ्रवणाच्छिवे ।
महतोऽप्येनसः सत्यमुद्धरेद्राघवो बली ॥१५॥

ब्रह्म रहस्य में कहा है—सदा श्रीरामनाम का कीर्त्तन श्रवन करते-करते समस्त सूक्ष्म स्थूल पाप श्रीराघवबली नाश कर देते हैं, विलम्ब नहीं लगता है ॥१५॥

सत्यंब्रवीमि देवेशि श्रुत्वेदमवधारय ।
नामसंकीर्तनादन्यो मोचकोऽत्र न विद्यते ॥१६॥

हे पार्वति ! हम सत्य कहते हैं तुम श्रवन करिके सत्य अपने मन में दृढ़ धारन करो भली भाँति से । श्रीरामनाम उच्चारन विना जीवन का उद्धारकर्त्ता यथार्थ संसार में कोई नहीं है सत्य जानना ॥१६॥

सकृदुच्चारयेद्यस्तु रामनामेतिमंगलम् ।
हेलया श्रद्धया वापि स पूतः सर्वपातकैः ॥१७॥

श्रीरामनाम महामंगल प्रद नाम जो एक बार कोई श्रद्धा अथवा अनादर से उच्चारन करता है सो सब पापन से रहित हो जाता है बारम्बार सब ठौर कथन करते हैं । एक बार श्रीरामनाम का माहात्म्य तिसका अभिप्राय इह है के अन्त में एकबार बहुत है श्रीनाम कहिके फेर और संकल्प न करे तौ एकबार बहुत है अन्यथा बारम्बार कहना चाहिए ॥१७॥

सर्वाचारविहीनोऽपि तापक्लेशादि संयुतः ।
श्रीरामनाम संकीर्त्य याति ब्रह्म सनातनम् ॥१८॥

सकल स्मृति आचार से रहित है, तीनो ताप पांचों क्लेश सहित है सो भी श्रीरामनाम उच्चारन से सब उपाधि रहित होयके परमधाम जाते हैं श्रीरामनाम का बड़ा प्रताप है ॥१८॥

विष्णुरहस्य

यस्य नाम सततं जपंतियेऽज्ञानकर्मकृतबंधनंक्षणात् ।

सद्य एव परिमुच्य तत्पदं याति
कोटिरविभास्वरं शिवम् ॥१६॥

विष्णु रहस्य में कहा है—जौन श्रीरामनाम सदा जपते हैं तिनका अज्ञान कृत बन्धन शीघ्र कटि जाता है, छनमात्र में कोटिन सूर्य्य से प्रकाशित श्रीरामधाम में जाते हैं ॥१६॥

सर्वकाले शुचिर्नाम महामोक्षैककारणम् ।
इति मत्वा जपेद्यस्तु स तु सिद्धान्तपारगः ॥२०॥

श्रीरामनाम सकल समय महा पावन है, महामोक्ष का कारन है, ऐसा जान के जो जपे सो परम सिद्धांत के भी पार है ॥२०

श्रीरामदिव्यनामानि सर्वदा परिकीर्तयेत् ।
यतः सर्वात्मकं नाम पावनानां च पावनम् ॥२१॥

श्रीराम के दिव्य सब नामन का कीर्त्तन करै जाते सब में पूरन श्रीरामनाम महापावन से पावन है ॥२१॥

गणेश रहस्ये

सर्वजातिबहिर्भूतो भुञ्जानो वा यतस्ततः ।
कदाचिन्नारकं दुःखं नाम वक्ता न पश्यति ॥२२॥

गणेश रहस्य में कहा है—सब जाति से रहित है औ जहां तहां भोजन पावता फिरता है श्रीरामनाम को भी कभी कहि देता है, परन्तु श्रीराम सम्बन्ध से नरक में न जायगा सुखी होयगा परलोक में ॥२२

स्मरणे रामनाम्नस्तु मानसं यस्य वर्तते ।
तस्य वैवस्वतो राजा करोति लिपिमार्जनम् ॥२३॥

श्रीरामनाम के स्मरन में जिनका मन लगा है तिसके पुण्य पाप का हिसाब धर्मराज धो डालते हैं ॥२३॥

एकस्मिन्नप्यतिक्रान्ते मुहूर्ते नामवर्जिते ।
दस्युभिर्मोषितस्तेन युक्तमाक्रन्दितुं भृशम् ॥२४॥

एक घड़ी पल जो श्रीरामनाम बिना बीत जाय तो इह विचारे के पाप रूप चोर ने मेरो समय सुखदायक चुराय लियो। हाय करिके बारम्बार रुदन करे पीटे तब सांचा सनेही होय ॥२४॥

शक्तिरहस्य

रामेति ब्रुवतोऽनिशं भुवि जनस्यैतावता संक्षयं
पापानामतिशोधकं खलु पुनर्नान्यत कृतं चिन्तनम्।
मार्तण्डोदयकाल एव तमसो नास्ति क्षतिस्स्यात् क्षयं
किं कार्यं पुरुषैः प्रदीपकरणे चार्थानभिज्ञैर्वृथा ॥२५॥

शक्ति रहस्य में कहा है-श्रीरामनाम जो दिन-राति उच्चारन करते हैं सहज में सब पाप संक्षय हो जाता है फेर उसको और कर्तूति नहीं रहता है श्रीरामनाम उच्चारन करते ही सब पाप नष्ट हो जाता है जैसे सूर्य प्रकाश करिके महा तम तोम नाश होता है फिर दीपादिक करने से कहा प्रयोजन है जो अन्य प्रकाश की अपेक्षा करे सो महा मूढ़ है ॥२५॥

अहो मूर्खमहो मूर्खमहो मूर्खमिदं जगत् ।
विद्यमानेऽपि मत्स्वामी मूढा नैव रमन्ति च ॥२६॥

महामूर्ख आश्चर्य रूप मूर्ख उह संसार में है जौन श्रीरामनाम रहते हुए और साधन में ममता रमन करते हैं ॥२६॥

शिद्धान्तरहस्ये

श्रीराम राम रघुवंशकुलावतंस
त्वन्नामकीर्तनपरा भवतीहवाणी ।

नान्यं वरं रघुपते भ्रमतोऽपि याचे
सत्यंवदामि रघुवीर दयानिधेऽहम् ॥२७॥

सिद्धांत रहस्य में कहा है—हे श्रीरामभद्र श्रीरामचन्द्र श्रीरघुकुलावतंस जू ! हम यह वरदान मांगते हैं के आपके श्रीनाम में मेरी बानी निरन्तर लगी रहे और कुछ न कहे काहू समय में अन्य पदार्थ मोक्षपर्यन्त हम नहीं चाहते हैं भ्रमते भी। हे कृपा सागर जू ! इह वचन श्रीनारद जू का है ॥२७॥

तस्मात् मूर्खतरः कोऽपि कोऽन्यस्तस्मादचेतनः ।
यस्य नाम्नि परा प्रीतिर्नास्ति सर्वेश्वरेश्वरे ॥२८॥

तिससे मूर्ख अचेतन जड़ पापी कौन है जिसकी प्रीति प्रतीति सर्वेश्वर श्रीरामनाम में नहीं है सो महा राक्षसाधम है॥२८

परमानन्दजलधौ नाम्नि सिद्धान्तमौलिनि ।
नास्ति यस्य रतिर्नित्या स विप्रः श्वपचाधमः ॥२९

दोहा—श्रीसियपिय गुननिधि नवल नाम सकल सुख खान ।
जो न जपे अनुराग सजि तामस कौन मलान ॥

परमानन्द को सागर सब सिद्धान्तन को शिरोमनि श्रीरामनाम में जिसकी सांची रति नहीं है यद्यपि महाश्रेष्ठ ब्राह्मन है तो भी चांडाल से नीच है। जिसकी प्रीति नाम में है सोई महाकुलीन है ॥२९॥

अहो चित्रमहो चित्रमहोचित्रमिदं द्विजाः ।
रामनाम परित्यज्य संसारे रुचिमुल्वणाम् ॥३०॥

बड़ा आश्चर्य है हे द्विज! जो श्रीरामनाम महामोदधाम को छोड़िके संसार दुखरूप में लोग रुचि करते है, क्लेश पावते हैं ॥३०

यावन्नेन्द्रियवैक्लव्यं यावद्व्याधिर्न बाधते ।
तावत् संकीर्तयेद्रामं सहजानन्ददायकम् ॥३१॥

जब तक इन्द्रिन में शक्ति है और शरीर रोगन करिके घायल नहीं हुआ है तब तक इह उचित है के श्रीरामनाम सहजानन्द दायक का स्मरन करि लेवो, फेर शिथिलता में कुछ न हो सकेगा पछितावा रहि जायगा ॥३१॥

मातृगर्भाद्यदा जीवो निष्क्रान्तश्च तदैव हि ।
मृत्युवक्त्रागतो वाढं तस्माद्रामं प्रकीर्तयेत् ॥३२॥

जब माता के गर्भ से जीव निकलता है उसी समय मृत्यु के मुख में प्रवेश करता है सत्य-सत्य समुझो, ताते विलम्ब छोड़िके श्रीरामनाम में आसक्त हो जाना चाहिए ॥३२॥

नारदपञ्चरात्रे

कदाऽहं विजनेऽरण्ये निरन्तरमितस्ततः ।
प्रलपन् राम रामेति गमिष्यामि च वासरान् ॥३३॥

श्रीनारद पञ्चरात्र में श्रीमुनिवर्य्य की उत्कन्ठा है—के ऐसा कब होयगा के महा एकांत बन में खटका रहित विचरेंगे । श्रीरामनाम उच्चारन प्रेम समेत करते अपने दिनों को छन सम वितावेंगे ॥३३॥

यन्नाम स्मरतां पुंसां सद्यो हरति पातकम् ।
जायते चाक्षयं पुण्यं तं वन्दे जानकीपतिम् ॥३४॥

श्रीरामनाम उच्चारन करते हुये जनों का पातक सब नष्ट हो जाता है, अक्षय पुन्य प्राप्त होता है, ऐसे श्रीजानकीवर को हम सदा भजते हैं ॥३४॥

स्वग्रामनाममणिकस्य च यस्य कण्ठे ।

संराजते प्रतिदिनं स तु मुक्तिरूपः ।
जन्मादिदुःखपरिपूर्णमहार्णवस्य
साक्षात्परं परतरं प्लवनं पवित्रम् ॥३५॥

श्रीरामनाम रूप महामनिमाला जिसके कण्ठ में विराजमान है सो सच्चा जीवनमुक्त है जन्म मरनादि महादुःखसागर के तरने को साक्षात् परम पुष्ट पवित्र नौका श्रीरामनाम है। जिसको पार होने की इच्छा होय सो श्रीरामनाम जप किया करे सर्वदा।३५।

अयं सर्वेषु मन्त्रेषु चूड़ामणिरुदाहृतः ।
मन्त्राणां सिद्धदो मन्त्रः श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥३६॥

श्रीरामनाम सब मन्त्रन के चूरामनि श्रुति सत शास्त्र सम्मत हैं औ सब मन्त्रन का सिद्धि दाता है। श्रीरामनाम दोनों वरन सब प्रकार परम हितकारी हैं ॥३६॥

सर्वार्थसिद्धियुक्तेषु नाम्नामेकार्थतापतः ।
अतः श्रीरामनामेदं भजेद्धावैकवल्लभम् ॥३७॥

सब अर्थ सिद्धि युक्त जेते हरिनाम हैं तिन सबको समेटि के सिद्धि श्रीरामनाम में स्थिति है ताते श्रीरामनाम परम प्रेम प्रिय का स्मरन नित्य करना उचित है सब सुख लाभ के अर्थ ॥३७॥

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके भाषाटीकायां श्रीनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरण संगृहीते रहस्यवाक्यप्रमाण-निरूपणंनाम षष्ठः प्रमोदः ॥ ६ ॥

अथ यामलोक्तवचनानि

ब्रह्मयामले

रकारः सर्वदेवानां साक्षात् कालानलः प्रभुः ।

रकारः सर्वजीवानां सर्वपापस्य दाहकः ॥१॥

ब्रह्मयामले—रकार परमब्रह्म रूप सब देवतन में साक्षात् महाकाल पावक सम प्रबल प्रकाशमान हैं। परम समर्थ औ सब जीवन के पाप दाहक हैं। रकार में अपार गुन शक्ति है ॥१॥

रकारः सर्वभूतानां जीवरूपी परात्परः ।
रकारः सर्वदेवानां तेज पुञ्जः सनातनः ॥२॥

रकार सब जीवन का जीवन है सनातन है। सबसे श्रेष्ठ श्रीरामनाम है सब देवतन में तेजपुञ्ज स्वरूप है ॥२॥

रकारः सर्वसौख्यानां सिद्धिदस्तु पुरातनः ।
रकारः सर्वविद्यानां वेद्यस्तत्त्वं सनातनः ॥३॥

रकार सकल सुख सिद्धिदाता हैं, पुरातन हैं, रकार ही सकल विद्यन करिके वेद्य कहिये जानने लायक हैं ॥३॥

रकारः सर्वभूतानामीश्वरोऽनन्तरूपधृक् ।
रकारः सर्वभूतानां व्याप्यव्यापकमीश्वरः ॥४॥

रकार सकल भूतन को ईश्वर है, अनन्त रूप धारनकरते हैं। रकार ही सबमें व्यापक है तथा व्याप्य व्यापक को ईश्वर हैं ॥४॥

रकारोत्पद्यते नित्यं रकारे लीयते जगत् ।
रकारो निर्विकल्पश्च शुद्धबुद्धस्सदाऽद्वयः ॥५॥

सब विश्व रकार से उत्पत्ति पालन लय होता है। रकार ही शुद्ध सच्चिदानन्दघन निर्विकल्प अद्वैत हैं ॥५॥

रकारः सर्वकामश्च परिपूर्णमनोरथः ।
रकारः सर्वदुष्टानां नाशको रघुनायकः ॥६॥

रकार ही सकल काम मनोरथ पूरन करनहारे हैं, रकार ही सकल दुष्टन के नाशक रघुनायक स्वरूप हैं ॥६॥

रकारः सर्वसत्त्वानां महामोदमयः स्वराट् ।
रकारः सर्ववेदानां कारणः प्रकृतेः परः ॥७॥

सब जीवन के महामोदप्रद हैं, आपही करिके शोभित हैं, रकार ही सब वेदन के कारन माया ते परे हैं ॥७॥

तत्रैव पार्वतीवाक्यम्

गुटिकापादुका सिद्धिः परकायप्रवेशनम् ।
वाचा सिद्धिश्चार्थसिद्धिस्तथा सिद्धिर्मनोमयी ॥८॥

इसी स्थल में शिवा का बचन श्रीशंकर प्रति है—श्रीराम-नाम का महामहिमा गुन है तिसको पार्वती जी प्रगट कराया चाहती हैं गुटिका पादुका सिद्धि उड़ने की शक्ति, जल में चले जाने की शक्ति पराये शरीर में प्रवेश करने की शक्ति, बचन सत्य होने की शक्ति, सब सृष्टि के धन देखने की शक्ति, मन में आवै सो सिद्धि प्राप्त हो जाय ॥८॥

ज्ञानविज्ञानकर्माणि नानासिद्धिकराणि च ।
लक्ष्मी कुतूहला सिद्धिर्वाञ्छासिद्धिस्तु खेचरी ॥९॥

ज्ञान विज्ञान के नाना प्रकार का चमत्कार औ अनेक सिद्धि तमाशा रंग-रंग का तथा आकाश में उठना ॥९॥

केनेदं सर्वमाप्नोति देव मे वद तत्त्वतः ।
सर्वतो निर्णयं कृत्वा ज्ञात्वा मामनुगामिनी ॥१०॥

इत्यादिक अनन्त सिद्धि किस प्रकार प्राप्ति होती है, सो कृपा करिके हे महादेवजी प्रानप्रिय ! कहिये सब भांति निरनय करिके हमको अपनी दासी जानिके छुपा न राखिये ॥१०॥

श्रीशिव उवाच

सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वसिद्धिदं परमार्थदम् ।
महामाङ्गलिकं नित्यं रामनाम परात्परम् ॥११॥

श्रीशंकर जी बोले—हे प्रिये! सकल ऐश्वर्य्यप्रद सिद्धिप्रद परमार्थ प्रेमप्रद श्रीरामनाम महामंगलमय सबसे श्रेष्ठ है। इनके अन्तर सब सुख है ॥११॥

नातः परतरोपायः सुखार्थं वर्त्तते प्रिये ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं नान्यथा वचनं मम ॥१२॥

श्रीरामनाम से और उपाय सुख के अर्थ नहीं है सत्य सत्य मेरा वचन है ॥१२॥

अत्रैव स्थानान्तरे

रामनामपरा वेदा रामनामपरा गतिः ।
रामनाम परायज्ञा रामनाम पराक्रियाः ॥१३॥

उसी ग्रन्थ में अन्य स्थान में कहा है—श्रीरामनाम को सब वेद प्रतिपाद करते हैं, सब शुभगति श्रीनामाधीन है। सब यज्ञ क्रिया श्रीरामनाम निमित्त है ॥१३॥

रामनाम सदानन्दो रामनाम सदागतिः ।
रामनाम सदातुष्टो रामनाम सदाऽमलः ॥१४॥

श्रीरामनाम से सदा आनंद परम सुगति परम संतोष उज्ज्वलता सब सुस्थिति है, श्रीरामनाम से भिन्न कुछ नहीं है ॥१४॥

रामनाम परं ज्ञानं रामनाम परो रसः ।
रामनाम परो मन्त्रो रामनाम परो जपः ॥१५॥

श्रीरामनाम ही परम ज्ञान परम रस है, श्रीरामनाम परम मन्त्र जप है ॥१५॥

रामनाम परं ध्यानं सदा सर्वत्र पूर्णकम्
रामनाम सदा सेव्यमीश्वराणां मम प्रिये ॥१६॥

रामनाम परम ध्यान है, श्रीरामनाम परिपूर्ण हैं श्रीरामनाम सब ईश्वर करिके सेवित हैं हे प्रिये ! ॥१६॥

रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति ।
मनः प्रसन्ननामेति रामनामाभिशंकया ॥१७॥

रकार जिसके आदि में होय ऐसे सुनिके हम प्रसन्न हो जाते हैं के हमारे परम प्रिय स्वामी का नाम लेवेगा जाते उचित है के रकार कहिके मकार ही का उच्चारन करे और वरन न कहे ॥७॥

रुद्रयामले श्रीशिववाक्यं शिवां प्रति

मकारः सर्व साध्यानां सर्व सौख्यप्रदस्तथा ।
मकारः सर्वदेवानां सिद्धिदस्तु सदा प्रिये ॥१८॥

रुद्रयामल में श्रीशिवजी का वचन पार्वतीजी से है—मकार सर्व सिद्धन को परम सुखदायक है और सब देवतन को सिद्धि देनेहारे मकार है ॥१८॥

मकारः सर्वमूलानां मूलं मोदमयः स्वराट् ।
मकारश्च पराशक्तिरुज्ज्वला सर्वकामदा ॥१९॥

मकार सब मूलन को महामूल हैं आनन्दमय हैं, आप ही करिके शोभित हैं मकार परम शक्ति उज्ज्वल रूप सकल कामप्रद है। श्रीरामनाम दोनों वरन की सब में पूरन है। बारबार श्रीराम-नाम का अभ्यास करना चाहिए सब प्रपंच छोड़िके ॥१६॥

मकारः सर्वजीवानां पालको जगदीश्वरः ।
मकारः सर्वसिद्धीनां कारणं नात्र संशयः ॥२०॥

मकार सब जीवन को पालनहारे जगदीश्वर हैं मकार ही सब

सिद्धिन के कारन हैं ॥२०॥

मकारो लोकलोकानां मकारः सर्वव्यापकः ।
मकारः सर्वशास्त्राणां सिद्धान्तः सर्वमुक्तिदः ॥२१॥

सब लोकालोकन में मकार ही व्यापक है, सकल शास्त्रन का सिद्धान्त मोक्षप्रद मकार है ॥२१॥

रकारादिर्न सिद्धिःस्यान्मकारादि विना शिवे ।
मकारादिर्न सिद्धिःस्याद्रकारादि विना प्रिये ॥२२॥

रकार मकार बिना सिद्धि नहीं औ मकार रकार बिना सिद्धि नहीं ॥२२॥

तस्माद्विवेकिभिर्नित्यं जप्तव्यमुभयात्परम् ।
सिद्धान्तं सर्ववेदानां रामनाम परात्परम् ॥२३॥

ताते विवेकिन को दोनों वरन मनहरन निरन्तर जपना चाहिए। श्रीरामनाम परात्पर सब वेदन का मुख्य सिद्धांत सबसे श्रेष्ठ है ॥२३॥

सम्मोहनतन्त्रे श्रीशिववाक्यं शिवां प्रति

यन्मयोदितमुल्लासं मंत्राणां भूधरात्मजे ।
तत सर्वं रामनाम्ना वै सिद्धिमाप्नोति निश्चितम् ।२४

संमोहनतन्त्र में श्रीशंकर बचन पार्वतीजी से है–जेते मन्त्र तन्त्रन में हमने निरूपन किया है। हे शिवे ! सो सब श्रीरामनाम शक्ति से सिद्ध होते हैं सत्य सत्य जानना ॥२४॥

रामनामप्रभावेण पञ्च तत्त्वात्मकस्तनुः ।
स भवेत् सच्चिदानन्दः सत्यं सत्यं वचो मम ॥२५॥

श्रीरामनाम प्रभाव से पञ्चतत्त्व का शरीर निर्विकार चित् स्वरूप हो जाता है आश्चर्य्य परत्व श्रीरामनाम का है ॥२५॥

चित्तैकाग्रतया नित्यं ये जपन्ति सदाप्रिये ।
रामनाम परं ब्रह्म किञ्चित्तेषां न दुर्लभम् ॥२६॥

चित्त रोकिके जो सदा जप करते हैं तिनको कोई पदार्थ इहां उहां का दुर्लभ नहीं है सत्य-सत्य जानो ॥२६॥

सर्वेषां सुप्रयोगाणां सिद्धिरन्यत्र दुर्लभा ।
श्रीरामनामस्मरणादनायासेन सिद्ध्यति ॥२७॥

षट् प्रयोग से आदि सब प्रयोगन की सिद्धि और साधनन से दुर्लभ है । केवल श्रीरामनाम स्मरन से सब सिद्धि होती है ॥२७॥

तस्माच्छ्रीरामनाम्नस्तु कीर्तनं सर्वसिद्धिदम् ।
कर्तव्यं नियतं देवि त्यक्त्वाऽन्यान्मन्त्रसञ्चयान् ॥२८॥

ताते श्रीरामनाम का कीर्त्तन सकल सिद्धिप्रद सबको करना चाहिये सकल मन्त्रन के आश को त्यागि के ॥२८॥

प्राणात् प्रियतरं मह्यं रामनाम सदा प्रिये ।
क्षणं विहातुं शक्तोऽस्मि नैव देवि कदाचन ॥२९॥

प्रान से परम प्रिय हमको श्रीरामनाम है । हे प्रिये! क्षनमात्र हम त्यागने में समर्थ नहीं हैं । सत्य-सत्य हम कहते हैं ॥२९॥

तन्त्रसारे

इदमेव परं सारं सर्वेषां मन्त्रसंहतेः ।
वेदानां हृदयं सौम्य रामनामसुधास्पदम् ॥३०॥

तन्त्रसार में कहा है—सब मन्त्र शिरोमनि का परमसार श्रीरामनाम है । सब वेदन को हृदय हे शिष्य ! श्रीरामनाम सुधासदन है ॥३०॥

यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु पानं नास्ति नृणां शिवे ।

तावन्मन्त्राणि यन्त्राणि रुचिः स्याद्धृदयस्थले ॥३१॥

जब तक श्रीरामनाम रस को पान नहीं है मनुष्यन को तबहीं तक नाना मन्त्र तन्त्र में मनुष्यन की रुचि है ॥३१॥

दुर्लभं सर्वजीवानामिमं मन्त्रेश्वरेश्वरम् ।
कथं भजन्ति पापिष्ठाः सुकृतौघं विना प्रिये ॥३२॥

सब मन्त्र ईश्वरन के ईश्वर श्रीरामनाम सब जीवन को दुर्लभ है। महापुण्य वालन को प्राप्त होत है पापिन को भाव नहीं होता है ॥३२॥

मन्त्रमहोदधौ

असारतरसंसारसागरोत्तारकारकम् ।
हारकं दुःखजालानां श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥३३॥

मन्त्र महोदधि में कहा है, असाररूप संसार सागर के तारक हैं—सब दुःख समूह के हरनहारे श्रीरामनाम दोऊ बरन हैं ॥३३

श्रीरामनामसर्वस्वं मंत्राणां परमं गुरुम् ।
यस्यसंकीर्तनाज्जन्तुर्याति निर्वाणमुत्तमम् ॥३४॥

श्रीरामनाम सर्वस्व पदार्थ है, सकल मन्त्रन के परमगुरु हैं। जिनके कीर्त्तन मात्र से सामान्य जीव भी परम निर्वान को प्राप्त होता है ॥३४॥

मन्त्रप्रकाशे

कृतं सद्ग्रन्थशास्त्राणां निर्णयं मया ।
श्रीरामनामस्मरणं सारमन्यं निरर्थकम् ॥३५॥

मन्त्रप्रकाश में कहा है—सकल सत शास्त्रन का निरनय भलीभांति हमने किया तिसमें सार सिद्धान्त श्रीरामनाम ही निकस्यो और सब निरर्थक है ॥३५॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदस्त्वथर्वणः ।
अधीतास्तेन येनोक्तं श्रीरामेत्यक्षरद्वयम् ॥३६॥

चारों वेद संहितादिक तिसने भलीभांति विधि सहित अध्ययन किया । जिसने श्रीरामनाम दो अक्षर सावधान समेत उच्चारन किया, उसको फेर पढ़ने से कौन प्रयोजन है ॥३६॥

श्रीरामनाम संत्यक्त्वा ह्यन्यस्मिन् यस्य संरुचिः ।
स तु बध्यतमो लोके पुनरायाति याति च ॥३७॥

श्रीरामनाम का जप स्मरन छोड़िके जिसकी और ठौर प्रीति रुचि है सो महाबध्य है उसका जन्म मरन कदाचित छूटि न सकेगा, सदा खेदित रहेगा ॥३७॥

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके भाषाटीकायां श्रीनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरण संगृहीते तन्त्रवाक्यप्रमाण-निरूपणंनाम सप्तमः प्रमोदः ॥ ७ ॥

अथ यामलोक्तवचनानि

श्रीजानकीविनोदविलासे

सीतां विना भजेद्रामं सीतां रामं विना भजेत् ।
कल्पकोटिसहस्त्रैस्तु लभते न प्रसन्नताम् ॥१॥

श्रीजानकीविनोदविलासे-श्रीसीतानाम महामोद धाम बिना जो श्रीरामचन्द्र परम पुरुष नाम लेते हैं। औ श्रीरघुनन्दन भक्त-चित्चंदन बिना जो विचारहीन केवल श्रीसीतानाम लेते हैं ऐसे मनुष्यन को कोटिन कल्पन लौं प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती है ।१

सीतारामात्मकं ध्यानं सीतारामात्मकार्चनम् ।
सीतारामात्मकं नामजपं परतरात्परम् ॥२॥

सीताराम सम्बन्धी ध्यान, पूजा, जप, ज्ञान सब साधन श्रेष्ठ है। परम उत्तम है केवल करना सामान्य है ॥२॥

श्रीजानकीविलासोत्तमे

स रामो न भवेज्जातु सीता यत्र न विद्यते ।
सीता नैव भवेत् सा हि यत्र रामो न विद्यते ॥३॥

श्रीजानकी विलासोत्तम में कहा है—सो श्रीराम नहीं है जहां श्रीजानकी जी न होंय औ जहां श्रीसीतावर राम न होंय सो श्रीसीता भी नहीं हैं। दोनों की शोभा परस्पर है ॥३॥

सीता रामं विना नैव रामः सीतां विना नहि ।
श्रीसीतारामयोरेष संबन्धः शाश्वतो मतः ॥४॥

श्रीसीता बिना श्रीराम नहीं श्रीराम बिना सीता नहीं इह श्रीसीताराम का परस्पर नित्य सम्बन्ध है। एक रस बीच नहीं पड़ता है ॥४॥

रामः सीता जानकीरामचन्द्रो
नाहुर्भेदो ह्येतयोरस्ति किञ्चित् ।
सन्तो मत्वा तत्त्वतद्विचित्रं
पारं याताः संसृतेर्मृत्युकालात् ॥५॥

श्रीरामसीता सीताराम इह दोनों में भेद नहीं है किंचित्। इस रहस्य को संत जानि के संसार समुद्र के पार हो गये मृत्युकाल से रहित होय के ।५॥

राममन्त्रार्थो

रकारार्थो रामः सगुणपरमैश्वर्यजलधि-
र्मकारार्थो जीवस्सकलविधिकैंकर्य निपुणः ।

तयोर्मध्याकारो युगलमथ सम्बन्धमनयो ।
रनन्योऽर्थः सिद्धस्स्मृतिनिगमरूपोऽयमतुलः ॥६॥

श्रीराममन्त्रार्थ में कहा है—रकार का अर्थ कहिये वाच्य श्रीराम अनन्त गुनधाम हैं। मकार का अर्थ जीव सकल विधि किंकिरता में निपुन हैं। दोनों के बीच में अकार जो है सो जीव ईश का नित्य शेषशेषी सम्बन्ध सूचक है। तीनों वेद का स्वरूप कारन रीति से श्रीरामनाम है ॥६॥

जानकीरत्नमाणिक्ये

सीता विना ये सखि कोटिकल्प
समास्तु रामं जनकात्मजाशु ।
ध्यायन्ति निंदाश्रमभागिनस्ते
रामप्रसादाद्विमुखाः भवन्ति ॥७॥

श्रीजानकीरत्नमाणिक्य में कहा है—श्रीसीतानाम बिना जो कोटिन वर्ष तक श्रीरामनाम कहे तौ श्रीरघुनन्दन प्रसन्न न होंय औ निन्दा श्रम विमुखता का भागी होय, ताते श्रीसीताराम उपासना करना श्रेष्ठ है। श्रीजानकी जू परम आल्हादिनी शक्ति श्रीराम की परम प्यारी हैं प्राण विशेष ॥७॥

रामस्तु वश्यो भवतीह सीता
प्रोच्चारणाद् ये तु जपन्ति सीताम् ।
भूत्वानुगामी भजते जनस्तान्
ब्रह्मेशशक्रार्चितराजपुत्रः ॥८॥

सी अक्षर उच्चारन किये से श्रीराम वश में हो जाते हैं जो स्पष्ट सीताराम कहे तिसके पीछे-पीछे आप महाराज फिरते हैं, यद्यपि ब्रह्मादिकन करिके पूजनीय हैं ॥८॥

राम रामेति रामेति वदन्तं विकलं भवान् ।
यमदूतैरनुक्रान्तं वत्सं गौरिव धावतु ॥६॥

भरद्वाज स्तोत्र में कहा है—मरने समय राम राम कहते हुये जो हम अत्यन्त विकल यमदूतन के त्रास करिके उस समय आप आवोगे जैसे गौ बछरा के पास सनेह समेत शीघ्र आवती है ॥६॥

स्वच्छन्दचारिणं दीनं राम रामेतिवादिनम् ।
तावन्मामनु निम्नेन यथा वारीव धावतु ॥१०॥

स्वच्छन्दाचरन समेत महा दीन मुख से राम राम कहते हुए जो हम हैं सो आप मेरे पास आवोगे जैसे नीच थल में जल आवे है ॥१०॥

रामत्वं हृदये येषां सुखलभ्यं वनेऽपि तैः ।
मण्डं च नवनीतं च क्षीरसर्पिमधूदकम् ॥११॥

हे श्रीराम ! जिनके हृदय रसना में आप विराजमान हैं, तिनको बन में भी मण्ठा, माखन, दूध, सहत, घी, जल सहज ही में प्राप्त होता है यतन बिना ॥११॥

सीतापते राम रघूत्तमेति
यो नाम्निजल्पेद्युधि तस्य तत्क्षणात् ।
दिशं द्रवन्त्येव युयुत्सवोऽपि
भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः ॥१२॥

सीतापति राम रघुनन्दन रघुपति इत्यादि नाम को जो युद्ध में कहता है तिसके शत्रु सब भयाकुल होय के दशों दिशा में भागि जाते हैं भीतर बाहर के ॥१२॥

प्रपन्नगीतायां लोमश उवाच

रामान्नास्ति परो देवो रामान्नास्ति परं व्रतम्।
न हि रामात्परं योगो नहि रामात्परो मखः ॥१३॥

प्रपन्न गीता में लोमश मुनिश्वर का वचन है—श्रीरामनाम से श्रेष्ठ देवता श्रीराम से श्रेष्ठ व्रत, योग, यज्ञ कोई नहीं है। सब श्रीराम सम्बन्ध से उत्तम है श्रीराम बिना सब वृथा है ॥१३॥

तत्रैवपुष्कर वाक्यम्

ये केचिद्दुस्तरं प्राप्य रघुनाथं स्मरन्ति हि।
तेषां दुःखोदधिः शुष्को भवत्येव न संशयः ॥१४॥

पुष्कर जी का वचन है—जौन कठिन दुःख पाय के श्री रघुनाथ जी का स्मरन करता है तिनका कठिन कलेशरूप सागर सूख जाता है सन्देह बिना ॥१४॥

ऋतुपर्ण उवाच

भज श्रीरघुनाथस्त्वं कर्मणा मनसा गिरा।
नैष्कापट्येन लोकेशं तोषयस्व महामते ॥१५॥

ऋतुपर्ण जी का वचन है—शरीर मन वचन से श्रीराम का स्मरन भजन करो कपट छोड़िके श्रीराम को रिझाओ शीघ्र ही भलीभांति से ॥१५॥

विश्वामित्र प्रातः पञ्चके

प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम
वाग्दोषहारि सकलं कलुषं निहन्ति।
यत्पार्वती स्वपतिना सह भोक्तुकामा
प्रीत्या सहस्र हरिनाम समं जजाप ॥१६

श्रीविश्वामित्र प्रातः पञ्चक में कहा है—प्रातःकाल वचन से श्रीरामनाम लेते हैं जिनके उच्चारन से समस्त वचन को दोष मलीनता

नाश हो जायगा जौन परात्पर श्रीरामनाम हजारों को हरिनाम सम जानिके पार्वती जी शंकर के साथ भोजन पावती भईं ऐसे श्रीरामनाम हैं ॥१६॥

सुयज्ञ संहितायाम्

रामनाम कथयामोऽपरमपहाय ।
सीता नाम युतं यत् स्वादुसुखाय ॥१७॥

सुयज्ञ संहिता में कहा है—श्रीरामनाम का उच्चारन हम करते हैं और नामन्न को बिसारिके, जो श्रीसीतानाम समेत परम स्वादु सुखार्थ है ॥१७॥

विरञ्चिसर्वस्वे

श्रीरामनामस्मरतः प्रयाति
संसारपारं दुरितौघयुक्तः ।
नरस्ससत्यं कलिदोषजन्यं
पापं निहन्त्याशु किमत्र चित्रम् ॥१८॥

विरञ्चि सर्वस्व में कहा है—समस्त दुरितन करिके सहित भी है सो भी श्रीरामनाम जप से कृतार्थ हो जाता है। सब कलिकाल का पाप ताप शीघ्र शांत हो जाता है इसमें आश्चर्य्य नहीं है ॥१८॥

शिवसर्वस्वे

यावन्न कीर्त्तयेद्रामं कलिकल्मषनाशनम् ।
तावत्तिष्ठति देहेऽस्मिन् भयं संसारदायकम् ॥१९॥

शिव सर्वस्व में कहा है–जब तक श्रीराम सकल कल्मषहारी का सनेह सहित कीर्तन नहीं करता है तब तक संसृतिदायक भय हृदय में प्रबल होय के गाजि रहे हैं। श्रीरामनाम शरन भये फेर नहीं देखि पड़ते के कहां गये ॥१९॥

श्रुतस्मृतिपुराणेषु रामनाम समीरितम् ।
यन्नामकीर्तनेनैव तापत्रयविनाशनम् ॥२०॥

श्रुति स्मृति पुरान में श्रीरामनाम ही का परत्त्व कथन है वारबार। औ श्रीरामनाम जप से तीनों ताप नाश हो जाते हैं २०

सर्वेषामेव पापानां प्रायश्चितमिदं स्मृतम् ।
नातः परतरं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥२१॥

सब पापन का परम प्रायश्चित्त इह है के श्रीरामनाम उच्चारन करे इसके सिवाय तीनों लोक में और नहीं है ॥२१॥

नामसंकीर्त्तनादेव तारकं ब्रह्म दृश्यते ।
सत्यं वदामि ते देवि नान्यथा वचनं मम ॥२२॥

श्रीरामनाम स्मरन कीर्त्तन से तारक ब्रह्म श्रीराम प्रत्यक्ष हो जाते हैं। हे पार्वती ! हम सत्य कहते हैं मेरा वचन अन्यथा न जानना ॥२२॥

वैष्णवचिन्तामणौ

कालोऽस्ति दाने यज्ञे वा स्नानेकालोऽस्ति सज्जपे ।
श्रीनामकीर्त्तने कालो नास्त्यत्र पृथिवीपते ॥२३॥

वैष्णव चिन्तामनिग्रन्थ में कहा है—दान, यज्ञ, स्नान, जप सब सुकृतन के अर्थ काल है परन्तु श्रीरामनाम उच्चारन निमित्त समय नहीं है सदा कहा करें ॥२३॥

राम रामेति यो नित्यं मधुरं गायति क्षणम् ।
स ब्रह्महा सुरापी वा मुच्यते सर्वपातकैः ॥२४॥

श्रीराम राम राम जो मधुर मधुर धुनि से प्रेम उमगाय के छनभरि कीर्त्तन करता है सो चाहे जैसा पापी होय कृतार्थ हो जाता है। श्रीरामनाम महत्त्व ज्ञाता को हिंसा सर्वथा त्याग

करना चाहिये ॥२४॥

शिवसिद्धान्तेशंकरवाक्यम्

ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुषः स्तेयी सुरापोऽपि वा
मातृभ्रातृविहिंसकोऽपि सततं भोगैकबद्धस्पृहः ।
नित्यं राममिमं जपन् रघुपतिं भक्त्या हृदिस्थं तथा
ध्यायन् मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ स्वाचारयुक्तो नरः ।२५

शिव सिद्धन्त में श्रीशंकर का बचन है—ब्रह्म हत्यारा गुरुशय्या भोगी चोर सुरापी, माता पिता भाई का घातक कुत्सित भोगन में रुचि करनेहारा जो पुरुष सो भी नित्य श्रीरामनाम उच्चारन करते हुए सनेह समेत श्रीराम को हृदय में ध्यान करते हुये मोक्ष पावता है। जौन जन अनुराग समेत पाप रहित होय के श्रीरामनाम स्मरन करते हैं तिनकी कौन कथा कहे ॥२५॥

हिमवद् विन्ध्ययोर्मध्ये जना भागवता मताः।
उच्चारयन्ति श्रीरामनाम प्राणात् प्रियं मम ॥२६॥

हिमालय विन्ध्याचल के मध्य में जन परम भागवत हैं जाते श्रीरामनाम परम प्रिय हमारे स्वामी का सदा उच्चारन करते रहते हैं ॥२६॥

रामनामरतानां वै सेवकानां च सेवया ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो महापातकवानपि ॥२७॥

श्रीरामनाम में जो रत हैं तिनको जो सेवक हैं तिनकी सेवा से सकल पापन से महापापी छूट जाता है ॥२७॥

श्रीरामस्य कृपासिन्धोर्नाम्नः प्रोच्चारणं परम् ।
ओष्ठस्पन्दनमात्रेण कीर्त्तनं तु तपोऽधिकम् ॥२८॥

श्रीराम कृपासिन्धु के नाम का उच्चार परम उत्तम है। ओंठ के चलाने मात्र से संकीर्त्तन होता है सो सब तप से महाश्रेष्ठ है ॥२८॥

बृहद्गौतमीये

कुष्ठरोगी भवेल्लोके बहुधा ब्रह्महा नरः।
सकृदुच्चरितं नाम शीघ्रं तत् क्षपयत्यघम् ॥२६॥

बृहत्गौतमीय में कहा है—कोढ़ का रोग विशेष से ब्रह्महत्यारे को होता है सो महाकठिन है। ऐसा ब्रह्म हत्यारा एकबार श्रीनामोच्चारन से नाश हो जाता है तौ भी मूढ़ लोग आलस करते हैं ॥२६॥

यत्फलं दुर्लभं सर्वसाधनैः कल्पकोटिभिः।
तत् फलं शीघ्रमाप्नोति रामनामानुकीर्त्तनात् ॥३०॥

जौन फल सब साधनन से कोटिन कल्पन में दुर्ल्लभ है सोई फल श्रीरामनाम उच्चारन से स्वल्प श्रम से प्राप्त होता है ताते श्रीरामनाम जप करो ॥३०॥

आश्वलायनतन्त्रे

ये कीर्त्तयन्ति नामानि रामस्य परमात्मनः।
सर्वधर्मवहिर्भूतास्तेऽपि यान्ति परं पदम् ॥३१॥

आश्वलायन तन्त्र में कहा है—श्रीराम परमात्मा का परात्पर राम दो अक्षर उच्चारन स्मरन करते हैं यद्यपि सब श्रुति स्मृति धर्म से रहित हैं परन्तु श्रीरामनाम प्रताप से परम पद पावेंगे सही ॥३१॥

स्वप्नेऽपि रामनाम्नस्तु स्मरणान्मुक्तिमाप्नुयात्।
प्रीत्या संकीर्त्तयेद्यस्तु न जाने किं फलं लभेत् ॥३२॥

स्वप्न में जो निद्रावश से बड़राय के श्रीरामनाम कहते हैं सो भी मोक्षाधिकारी हैं। जौन जन श्रीरामनाम को सर्वस्व मानि के भक्ति समेत स्मरन करते हैं तिनके फलको को कहे ॥३२॥

वैरञ्च्यतन्त्रे

पूजयस्व रघूत्तमं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।
गुह्याद् गुह्यतमं नाम कीर्त्तयस्व निरन्तरम् ॥३३॥

विरञ्चि तन्त्र में कहा है—श्रीरघुकुलावतंस का पूजन करो सब शास्त्रन में गोपतर रहस्य है। गुप्त से गुप्त श्रीरामनाम संकीर्त्तन करो सदा सावधान होय के ॥३३॥

त्यक्त्वाऽन्यसाधनान् सर्वान् रामनाम परो भव ।
नातः परतरं यत्नं सुलभं सकलेष्टदम् ॥३४॥

और सब साधनों को त्याग के श्रीरामनाम में तत्पर हो जावो इनसे परे और यत्न सुलभ सकल मनोरथदाता कोई नहीं है ॥३४॥

मेरुतन्त्रे

नाम्ना मुख्यतमं नित्यं रामनामप्रकीर्तितम् ।
नातः परतरं नाम ब्रह्माण्डेऽपि प्रदृश्यते ॥३५॥

मेरुतन्त्र में कहा है–सब नामन में महा मुख्य नाम श्रीराम है, श्रुति संत कहते हैं। इनसे परे यद्वा सम और नाम ब्रह्मांडन में नहीं, सकल नामन में शक्ति श्रीरामनाम की है ॥३५॥

रामनाम्नि सुधाधाम्नि यस्य प्रीतिर्न विद्यते ।
पापिनामग्रगण्यस्स भूमेर्भारो महत्तरः ॥३६॥

श्रीरामनाम करुना सुधाम में जिसकी सांची प्रीति भीतर से नहीं सो पापिन का राजा है औ भूमि का महाभार है उसका

साथ सर्वथा त्याग योग्य है, कलियुग में नाना मन्त्र उपासना पाखंडिन ने बना लिया है उनमें प्रीति करना उचित नहीं ॥३६॥

नारायणतन्त्रे

ये गृह्णन्ति निरन्तरं परपदं रामेति वर्णद्वयं
ते वै भागवतोत्तमाः सुखमया पूज्यास्तु ते सर्वथा
ते निस्तीर्य भवार्णवं सुतकलत्राद्यैस्तु नक्रैर्युतं
तृष्णावारि सुदुस्तरं परतरे सायुज्यमायान्ति वै ॥३७

श्रीनारायण तन्त्र में कहा है—सर्वोपरि श्रीरामनाम का जो उच्चारन करते हैं सो भागवतन में शिरोमनि हैं। सुख समूह समेत सबसे पूजित हैं औ भवसागर महाघोर सुत दारादि ग्राह सहित तृष्णा जल सम्पन्न तिसको अनायास तरिके श्रीराम अङ्ग सङ्गी होते हैं, सन्देह बिना ॥३७॥

यानि धर्माणि कर्माणि महोग्रफलदानि वै ।
निष्फलानि च सर्वाणि रामनामरतात्मनाम् ॥३८॥

जितने धर्म कर्म महा उग्र फल प्रदाता हैं सो सब श्रीराम नाम सनेहिन के दृष्टि में निष्फल हैं। अभिप्राय इह है के उनके तरफ दृष्टि नहीं देते हैं ॥३८॥

वामनतन्त्रे

पृथिव्यां कतिधा लोका न जाताः कति नो मृताः ।
मुक्तास्तेऽत्र न संदेहो रामनामानुकीर्तनात् ॥३९॥

वामन तन्त्र में कहा है—भूमि में बहुत लोग जन्म लेते हैं मरते हैं, तिससे बड़भागी वही है जो रामनाम उच्चारन करके कृतार्थ होते हैं मुक्त होते हैं ॥३९॥

ब्रह्माण्डे सन्ति यावन्ति महोग्राः पुण्यसंचयाः ।

रामनाम्नो जपस्यापि कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥४०॥

ब्रह्माण्ड में जेते सुकृत समूह हैं सो सब श्रीरामनाम की किञ्चित् कला सम नहीं हो सकते हैं। श्रीरामनाम के सम कौन पुन्य होयगा जिनके उच्चारन करनहार के चरन रेनु से श्रीगङ्गा पवित्र होती हैं ॥४०॥

वशिष्ठतन्त्रे

रामनामपरा ये च रामनामार्थचिन्तकाः ।
तेषां पादरजःस्पर्शात् पावनं भुवनत्रयम् ॥४१॥

वशिष्ठ तन्त्र में कहा है—श्रीरामनाम में जो ततपर हैं श्रीरामनाम के अर्थ को सदा चिन्तन करते हैं तिन महात्मन के चरनरज स्पर्श से तीनों लोक पावन हो जाता है, ऐसे श्रीराम को सदा सचेत होय के सुमिरन करो ॥४१॥

कृष्ण नारायणादीनि नामानि जपतोऽनिशम् ।
सहस्रैर्जन्मभिः रामनाम्नि स्नेहो भवत्युत ॥४२॥

श्रीकृष्ण नारायनादि नाम को जो सदा जपते हैं सनेह समेत सहस्रन जन्म तक विघ्न बिना, तब परात्पर श्रीरामनाम में परम प्रीति प्रगट होती है सहज न जानना ॥४२॥

राम एवाभिजानाति रामनाम्नः फलं हृदि ।
प्रवक्तुं नैव शक्नोति ब्रह्मदीनां तु का कथा ॥४३॥

श्रीरामनाम जप को अकथ फल श्रीराम पुरुष आप ही जानते हैं, परन्तु प्रगट कहि नहीं सकते हैं। जब परमेश नहीं कह सकते हैं तब ब्रह्मादिकन की कहा वार्त्ता है ॥४३॥

श्रीरामरक्षायाम्

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।

न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥४४॥

श्रीरामरक्षा में कहा है—पाताल, भूमि, आकाश के जेते जीव विघ्नकारी हैं सो सब श्रीरामनाम करिके रक्षित जीव को कुदृष्टि से ताकि नहीं सकते हैं, सब श्रीरामनाम से डरते हैं।४४

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥४५॥

श्रीरामचन्द्र श्रीरामभद्र श्रीरामनाम को जो स्मरन करते हैं सो मनुष्य पाप से स्पर्श नहीं करता है, मुक्ति भुक्ति दोनों उसको प्राप्त होती हैं ॥४५॥

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नैव रक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥४६॥

सब सृष्टि के विजयी सर्वोपरि श्रीरामनाम से जो रक्षित यन्त्र है तिसको जो कण्ठ में धारन करते हैं तिनको सब सिद्धि हाथ में सुलभ हो जाती है ॥४६॥

शाश्वततन्त्रे

वाङ्मनोगोचरातीतः सत्यलोकेश ईश्वरः ।
तस्य नामादिकं सर्वं रामनाम्ना प्रकाशते ॥४७॥

शाश्वत तन्त्र में कहा है—वचन मन के गोचर नहीं सत्यलोक श्रीअयोध्याजी तिसके ईश्वर स्वामी जो श्रीरामचन्द्र तिनका सब नाम गुनादिक श्रीरामनाम करिके प्रकाशित है ॥४७॥

यस्य प्रसादाद्देवेशि मम सामर्थ्यमीदृशम् ।
संहरामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥४८॥

जौन श्रीरामनाम के प्रसन्नता पायके मेरी ऐसी समर्थता है के क्षन मात्र में तीनों लोक संहारि करि डारते हैं विलम्ब बिना॥४८

धाता सृजति भूतानि जगत विष्णुर्धारयते ।
तथा चेन्द्रादयः सर्वे रामनाम्नासमृद्धिमान् ॥४९॥

ब्रह्माजी उत्पत्ति करते हैं, विष्णु भगवान पालते हैं तैसे इन्द्रादिक सब श्रीरामनाम शक्ति से ऐश्वर्य्यमान भये हैं ॥४६॥

रहस्यसारे श्रीनारायणवाक्यम् मुनीन् प्रति

रसनायां विशेषेण जप्तव्यं नाम सज्जनैः ।
कलौ संकीर्तनं विप्राः सर्वसिद्धान्तसम्मतम् ॥५०॥

रहस्यसार में श्रीनारायन का वाक्य मुनिन प्रति है—रसना स्थान में विशेष नाम जपना चाहिए सज्जनन को । कलियुग में विशेषता उच्चारन की है और होना कठिन है कोटिन में कोई मन से जपने वाले हैं, कथनी करना सहज है॥५०॥

प्रेमसंक्लिन्नया वाचा ये रमन्ति रटन्ति वै ।
नाम सर्वेश्वराधारं ते कृतार्था महामुने ॥५१॥

प्रेमरस भीजी वानी से जो श्रीरामनाम में रमन रटन समेत करते हैं सो श्रीनाम सर्वेश्वर की कृपा से कृतार्थरूप हैं, हे मुनि जी ! नाम का बड़ा प्रताप है ॥५१॥

नामप्रोच्चारणं नित्यं रसनायां प्रशस्यते ।
भक्तानां योगिनां चैव ज्ञानिनां कर्मिणां तथा ५२॥

श्रीरामनाम का उच्चारन रसना से विशेष कहा है, सुन्दर है । भक्त योगी, ज्ञानी, कर्मी सबको अधिकार है ॥५२॥

यत्र संगृह्यते नाम प्रेमसम्पन्नमानसैः ।
तत्रतत्र परा वाणी नाभिस्था सर्वतः शुभा ॥५३॥

प्रेम सम्पन्न मन होय के जहां से श्रीरामनाम कहे सो परावानी नाभि वाली है ॥५३॥

रामनाम परंब्रह्म सर्वमोदैकमन्दिरम् ।
जीवनं दिव्यनित्यानां परिकराणां महात्मनाम् ॥५४॥

श्रीरामनाम परमब्रह्म हैं। महामोद के मन्दिर हैं, नित्य परिकरन के जीवन हैं, अप्राकृत परम दिव्य हैं ॥५४॥

यस्य रामरसे प्रीतिर्वर्तते भक्तिसंयुता ।
स एव कृतकृत्यश्च सर्वशास्त्रार्थकोविदः ॥५५॥

श्रीरामरस में जिसकी प्रीति सनेह नम्रता समेत बरतती है सो कृत्य कृत्य हैं औ सब शास्त्र सिद्धान्त का ज्ञाता है, औ सब कुपथ कलाप में भूले हैं, परम पण्डित वही हैं ॥५५॥

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके भाषाटीकायां श्रीनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरण संगृहीते नानारहस्यतन्त्रवाक्यप्रमाण-निरूपणंनाम नामाष्टमः प्रमोदः ॥ ८ ॥

अथ रामायणोक्तवचनानि

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणे

रामो रामो राम इति प्रजानां समभूद्ध्वनिः ।
रामभूतमिदं विश्वं रामे राज्यं प्रशासति ॥१॥

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणे–राम राम राम इह महामङ्गलमय धुनि सब प्रजन की दशो दिशि में होत भई, जिस समय श्रीराम राज्य करते भये सब सृष्टि श्रीराममयी होत भई। रीति से श्रीनाम परत्व कहा है ॥१॥

यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति ।
निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माऽप्येनं विगर्हति ॥२॥

जिसको श्रीराम महाराज ने न देखा औ जिसने श्रीरघुराज

का दरशन न किया सो सब लोकन में निन्दित है, उसकी अपनी चितशक्ति निन्दा करतो है ॥२॥

क्षणार्द्धेनापि यच्चित्तं त्वयि तिष्ठत्यचञ्चलः ।
तस्याज्ञानमनर्थानां मूलं नश्यति तत् क्षणात् ॥३॥

आधा क्षन भी जिसका चित्त हे श्रीराम ! आप में स्थिर होय तिसका अज्ञान सब अनर्थन का मूल उसी क्षन नाश हो जाता है श्रीअगस्त जी का वचन श्रीराम से इहां नामरूप की एकता है ॥३॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥४॥

श्रीराम राम उच्चारन करते कविता रूप शाखा पर विचरते हैं ऐसे वाल्मीकि मुनि कोकिल तिनको नमस्कार करते हैं । इह लवकुश का मङ्गलाचरन है ॥४॥

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम ॥५॥

श्रीराम का वचन है एकबार जो शरन होयके कहे के हम आपके हैं तिसको हम अभय देते हैं । मेरा प्रन है, नाम नामी दोनों के स्वभाव हैं ।५॥

कथञ्चिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति ।
न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया ॥६॥

एक बार उच्चारन जो श्रीनाम का करता है तिसका उपकार परम मानते हैं, तैसेही सकृत प्रनाम का । और प्रसन्न बहुत होते हैं, जो शरन होयके फिर अपराध हजारों करे तिनका स्मरन ही नहीं करते हैं, अपनपो मानिके । श्रीनामनामी दोनों का एक स्वभाव है ॥६॥

ब्रह्मरामायणे श्रीरामवाक्यं श्रीजानकी प्रति

ये त्वां स्मरन्ति सद्भक्त्या ते मे प्रियतमाः प्रिये ।
तेषां भाग्योदयं न वक्तुं शक्तोऽहं कदाचन ॥७॥

ब्रह्म रामायन में श्रीरामजू का वचन श्रीजानकी जी से है- जौन सनेह समेत आपका स्मरन करते हैं सो हमारे परम प्रिय हैं, उनके भाग्य की प्रशंसा हम नहीं कर सकते हैं काहू भांति से ॥७॥

क्वचित् त्वां ये स्मरन्त्यन्तर्मम पार्षदतां पराम् ।
कोटि जन्मार्जितैः पुण्यैः दुर्लभामपि यान्ति ते ॥८॥

जो कभी कहीं भीतर से आपका सुमिरन करतेहैं सो मेरी पारषदता सर्वोत्कृष्ट को प्राप्त होते हैं जौन परिकर का होना कोटिन जन्मन के सुकृत से अति दुर्ल्लभ है ॥८॥

श्रीसीतारामनाम्नस्तु मदैक्यं नास्ति संशयम् ।
इति ज्ञात्वा जपेद्यस्तु स धन्यो भाविनां वरः ॥९॥

श्रीसीतारामनाम दोनों एक हैं, इनमें भेद नहीं ऐसा जो जानते हैं सो भाविकन में श्रेष्ठ हैं ॥९॥

ज्ञानं सीतानाम तुल्यं न किञ्चिद्
ध्यानं सीतानाम तुल्यं न किञ्चित् ।
भक्तिस्सीतानाम तुल्या न काचित्
तत्त्वं सीतानाम तुल्यं न किञ्चित् ॥१०॥

ज्ञान, ध्यान, भक्ति, तत्त्व, श्रीसीतानाम सम कुछ नहीं है कोई स्थल में ॥१०॥

एकं शास्त्रं गीयते यत्र सीता

कर्माण्येकं पूज्यते यत्र सीता।
एका लोके देवताचापि सीता
मन्त्रश्चैकोऽप्यस्ति सीतेति नाम ॥११॥

जहां श्रीसीतानाम का परत्व है सोई मुख्य शास्त्र औ कर्म है, पूजादिक हैं एक ही देवता सर्वोपरि श्रीजानकी जू हैं औ सर्वोपरि श्रीसीतानाम महामन्त्र है ॥११॥

नान्यः पन्था विद्यते चात्मलब्धौ
नान्योभावो विद्यते चापि लोके।
नान्यद् ज्ञानं विद्यते चापि वेदे-
ष्वेवं सीतानाममात्रं विहाय ॥१२॥

आत्मा परमात्मा के प्राप्ति वास्ते और राह नहीं है तथा और भाव नहीं है और ज्ञान भी वेद में नहीं है सीता नाम छोड़िके। ताते श्रीजानकी परात्पर नाम से सनेह करना चाहिए ॥१२॥

सीतेति मङ्गलं नाम सकृच्छ्रुत्वा कृपाकरः।
श्रीरामो जनकीजानिर्विशेषेण प्रसीदति ॥१३॥

श्रीसीता महामङ्गलमय नाम से श्रीकृपासिंधु-श्रीराम जानकी-प्रानवल्लभ विशेष ही प्रसन्न हो जाते हैं ॥१३॥

श्रीसीतानाममाहात्म्यं सुगोप्यं सर्वतः शुभम्।
रसिकाः प्रेम संमग्नाः जानन्ति तदनुग्रहात ॥१४॥

श्रीसीतानाम माहात्म्य महा गुप्त मङ्गलमय है। तिनके भेद को केवल रसिक संत प्रेमरस भीने जानते हैं। श्रीसीतास्वामिनी के कृपा से, औ रूच्छ भक्तन को दुर्ल्लभ है ॥१४॥

अध्यात्मरामायणं

येषु येष्वपि देशेषु रामनाम उपासते।

दुर्भिक्षदैन्यदोषाश्च न भवन्ति कदाचन ॥१५॥

अध्यात्म रामायन में कहा है–जिस जिस देश में श्रीरामनाम की उपासना होती है तहां दुकाल उपाधि व्याधि सब शान्त हो जाते हैं फेर कभी नहीं होता श्रीनाम प्रताप से ॥१५॥

राम रामेति ये नित्यं पठन्ति मनुजा भुवि ।
तेषां मृत्युभयादीनि न भवन्ति कदाचन ।१६॥

राम राम राम जौन जन भूमि में सदा सनेह समेत कहता है तिनको मृत्यु से आदिक कोई भय नहीं होता है कदाचित् ॥१६

राम रामेति सततं पठनाल्लभते फलम् ।
वाचा सिद्धियादिकं सर्वं स्वयमेव भवेद्ध्रुवम् ॥१७॥

श्रीराम राम राम सदा उच्चारन करते जौन फल होता है सो अकथ है, बचन सिद्धि से लेकर अनन्त शक्ति उसको प्राप्ति होती है ॥१७।

यन्नाम विवशो गृणन् म्रियमाणः परं पदम् ।
याति साक्षात् त्वमेवासि मुमूर्षो मे पुरस्थितम् ॥१८॥

श्रीरामनाम परबश से भी जो मरन समय उच्चारन करता है, सो परम पद जाता है ऐसे आप साक्षात् मेरे मरने समय समीप खड़े हैं फिर हम शरीर काहे को राखें इह बचन बालि का श्रीराम से है ॥१८॥

यस्मिन् रमन्ते मुनयो विद्यया ज्ञानविप्लवे ।
तं गुरुः प्राह रामेति रमणाद्राम इत्यपि ॥१९॥

जिसमें सब मुनि रमन करते हैं, ज्ञान द्वारे अज्ञान के नाश करने को सोई श्रीराम है । जो सबको अपने गुन शक्ति द्वारा रमावाते हैं ताते राम सुखधाम नाम है इह श्रीवशिष्ठ जी का

वचन नामकरन सयम का है ॥१६॥

इत्युक्त्वा राम ! ते नाम व्यत्ययात्त्वरपूर्वकम् ।
एकाग्रमनसा चैव मरेति जप सर्वदा ॥२०॥

वाल्मीकि जी अपनी सब पूर्व कथा कहिके श्रीरामचन्द्र परम प्रभु से कहते हैं के सातों ऋषियों ने आपका नाम उलटि करके कहि दिया हमको मरा मरा जप करो एकाग्र होके ॥२०॥

त्वन्नामामृतहीनानां मोक्षः स्वप्नेऽपि नो भवेत ।
तस्माच्छ्रीरामनाम्नस्तु संकीर्त्तनपरो भव ॥२१॥

हे श्रीराम ! आपके नाम की महिमा कौन कह सकता है, जिनकी कृपा से हम परम पद ब्रह्मर्षित्व को प्राप्ति भये आपके श्रीरामनाम रस से जो हीन हैं तिनको स्वप्न में भी मोक्ष दुर्ल्लभ है, ताते सबको उचित हैं के श्रीरामनाम में तत्पर हो जाय सब भरोसा त्यागि के ॥२१॥

नाधीतवेदशास्त्रोऽपि न कृताध्वरकर्मकः ।
यो नाम वदते नित्यं तेन सर्वं कृतं भवेत् ॥२२॥

जिसने वेद पुरान न पढ़ा यज्ञादिक कर्म न किया औ श्रीरामनाम रसना से कहता है उसको कुछ करने को रह न गया ॥२२॥

मानसरामायणे

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् २३

मानस रामायन में कहा है । सो सुकृती शिरोमनि धन्य है जौन श्रीरामनाम महा अमृत रस का पान करत हैं । कैसे है श्री-

नामामृत ? वेदसागर से प्रगट भये हैं कलिमल को दूरि करते हैं। नित्य शुद्ध हैं, श्रीशंकर मुखचन्द्र से सदा शोभित हैं संसार रोगहारी हैं, महामधुर हैं, श्रीजानकीजी के जीवन हैं ॥२३॥

प्रमोदरामायणे

रामनाम्नांशतो जातास्सुमन्त्राश्चाप्यनन्तकाः ।
अबुधा नैव जानन्ति नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम् ॥२४॥

प्रमोद रामायन में कहा है—श्रीरामनाम के अंश से अनंत मन्त्र उत्पत्ति भये हैं । अज्ञानी श्रीनाम परात्पर परत्व को नहीं जानते हैं ॥२४॥

भुशुण्डिरामायणे

श्रीरामनामदीप्ताग्निर्दग्धदुर्जातिकिल्विषः ।
श्वपचोऽपि बुधैः पूज्यो वेदाढ्योऽपि न नास्तिकः ॥२५

भुशुण्डि रामायन में कहा है—श्रीरामनाम उच्चारन रूप महापावक से कुजाति रूप मैल जिसका जल गया है सो श्वपच बड़े-बड़े पण्डित ब्राह्मन से पूजनीय है और नामहीन विप्र महा नास्तिक नीच है ॥२५॥

वेदशास्त्रशतं वापि तारयन्ति न तं नरम् ।
यस्तु स्वमनसा वाचा न करोति जपं परम् ॥२६॥

जौन मन, वचन, शरीर से श्रीरामनाम में रुचि नहीं किये हैं तिसको कोई साधन वेद पुरान शास्त्र तारि नहीं सकते हैं॥ २६॥

रामनामविहीनस्य जातिशास्त्रं जपस्तपः ।
अप्राणस्यैव देहस्य मण्डनन्तु वृथा यथा ॥२७॥

श्रीरामनाम से हीन का जाति, शास्त्र, जप, तप सब वृथा है जैसे मृतक का शृङ्गार करना व्यर्थ है ॥२७॥

ये शृण्वन्ति हि सद्भक्त्या रामनामपरात्परम् ।
तेऽपि यान्ति परं धाम किं पुनर्जापको जनः ॥२८

सनेह समेत जो श्रीरामनाम का श्रवन करते हैं सो भी श्रीराम परमधाम में जाते हैं तब जापकन की कौन कथा है ॥२८॥

द्विजो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा।
राम रामेति यो वक्ति स मुक्तो भवबन्धनात् ॥२९॥

ब्राह्मन होय चाहे राक्षस होय पापी अथवा परम सुकृती होय श्रीराम राम राम जो कहते हैं सो मुक्त हो जायँगे सन्देह बिना ॥२९॥

यत्र यत्र समुद्धारो दृश्यते श्रूयतेऽथवा ।
रामनाम्नैव नित्यं च यत्र तत्र न संशयः ॥३०॥

जहां-जहां उद्धार देखि सुनि पड़ता है सो सब श्रीरामनाम शक्ति से समुझना योग्य है सत्य सत्य हम कहते हैं। श्रीरामनाम की सामर्थ्यता से सब अवतार तारते हैं ॥३०॥

दिवा रात्रौ च ये नित्यं रामनाम जपन्ति हि ।
साक्षात्परिकरा दिव्या नित्या रसमयाः सदा ॥३१॥

दिन राति जो सनेह समेत श्रीरामनाम उच्चारन करते हैं, सो साक्षात् श्रीसीताराम के परम दिब्य परिकर हैं एक रस से पूर्ण तिनके समान कोई नहीं है। सकल फलन के महाफल श्रीरामनाम हैं ॥३१॥

क्षणार्द्धमपि चैकान्ते स्थित्वा येषां रतिः परे ।
रामनामात्मके मन्त्रे तेषां जन्मादिकं नहि ॥३२॥

छनमात्र एकान्त में बैठिके सावधान समेत जिनकी प्रीति

श्रीरामनाम महामंत्रेश में है तिनको जन्म-मरन नहीं होता है ३२

अहो श्रीभारतं वर्षं धन्यं पुण्यालयं परम् ।
प्राप्य यत्रापि श्रीरामनाम नैव जपन्ति ये ॥३३॥

आश्चर्य श्रीभरतखण्ड महापुण्य मंगलमय है तिसमें मनुष्य तन पाय के जो श्रीरामनाम नहीं जपते हैं ॥३३॥

नान्यस्तत् सदृशो मूढश्चाण्डालो लोकगर्हितः ।
भ्रमन्ते भवचक्रेऽस्मिन् सर्वदा तस्य वै मतिः ॥३४॥

तिनके सम मूढ़ चाण्डाल हत्यारा कोई नहीं है अनन्त जन्मन तक तिसकी मति संसार चक्र में भ्रमेगी ॥३४॥

असंख्यकोटिलोकानामुपादानं परात्परम् ।
तथैव सर्ववेदानां कारणं नाम उच्यते ॥३५॥

अनन्त कोटि लोकन को कारन सबसे श्रेष्ठ तथा सकल श्रुतिन को कारन श्रीरामनाम सर्वेश्वर हैं। इनसे जो अभिलाष होय सो मांगि लेवो, सकल पदार्थ देने में समर्थतर हैं ॥३५॥

स्वप्ने तथा संभ्रमतः प्रमादाच्
चेज्जृम्भणात् संस्खलनाद्यभावात ।
रामेति नाम स्मरतः सकृद्वै
नश्यत्यसंख्यद्विजधेनुहत्या ॥३६॥

स्वप्न में भ्रम वश से भूलि से जँभाई छींक के समय, अभाव से, निन्दा द्वारे, भी जो श्रीरामनाम उच्चारन एकबार करता है तिसके असंख्य गौ, विप्र हत्या नष्ट हो जाती हैं। ३६॥

प्रायो नामावलम्बेन सानुभूता प्रतीयताम् ।
अद्यत्वे तद्विशेषेण नामीप्राप्तिर्हि नामतः ॥३७॥

विशेष से चारों युग में श्रीरामनाम सम्बन्ध से अनुभव समेत कृतार्थ होते थे अब तौ सब भांति से श्रीपरात्पर पुरुषोत्तम श्रीराम की प्राप्ति श्रीरामनाम ही से है और सब उपाय मिथ्या प्रपञ्च है, जगत ठगने को है ॥३७।

शारदारामायणे

श्रीमतो जानकीजानेर्नाम नित्यं जपन्ति ये।
ते सर्वैस्त्रिदशैः पूज्याः वन्दनीयाश्च सर्वदा ॥३८

शारदा रामायन में कहा है—अनन्त शोभा सम्पन्न श्रीजानकी वल्लभ सकल विधि सनेह सुलभ जू के नाम दोऊ वरन हिय हरन अनन्त कोटि लोकाभरन को जो नित्यप्रति सनेह बढ़ाय के सदा जपते हैं सो सब देवतन करिके पूजनीय बन्दनीय सब समय होते हैं ।।३८।।

चतुर्युगेषु श्रीरामं नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम् ।
सर्वोत्कृष्टं न संदेहो कलौ तत्रापि सर्वथा ॥३९॥

श्रीरामनाम की महिमा चरों युग में महा उज्ज्वल सर्वोपरि है तौ भी कलियुग में और उपाय का अभाव ही है ॥३९॥

प्रेमरामायणे

श्रीरामनामसंल्लापे तत्परं पुरुषं भजेत् ।
मुक्तिस्यात् सेवनाद्दे विह्यनायासेन सत्वरम् ॥४०॥

प्रेम रामायन में कहा है—श्रीरामनाम में जो निरन्तर तत्पर है तिन पुरुष बड़भागिन का सेवा करना परम भजन है। श्रीरामनाम रसिक सन्तन के सेवा से श्रम बिना मोक्ष शीघ्र प्राप्त होता है ॥४०॥

यन्मुखे रामनामास्ति सर्वदा प्रेमतःशिवे ।

दृष्ट्वा तद् वदनं पुण्यं सुगमं शाश्वतं सुखम् ॥४१॥

जिनके मुख में श्रीरामनाम सदा प्रेम नेम समेत विराजमान हैं, तिनके मुख पावनास्पद का दर्शन करिके अखंड अविनाशी सुख प्राप्त होता है, सन्तन में अनुराग करना सार है, सब सुकृतन का और ब्यवहार है, स्वर्ग नर्क का ॥४१॥

अहो ह्यभाग्यं खलु पामराणां
रामेति नामामृतशून्यमास्यम् ।
जीवन्ति ते देवि ! कथं मनुष्याः
पापात्मकाः मूढतमा धियास्ते ॥४२॥

बड़ा अभाग दुष्ट नीचन का है के श्रीरामनाम सुधासार से रहित शून्य जिनके मुख हैं, ऐसे जीव महामूढ़ पापिष्ठ जीवते कैसे हैं, उनके बुद्धि विनष्ट भई है ॥४२॥

असंख्यकोटिनामानि नैव साम्यं प्रयान्ति च ।
खद्योतराशयो यान्ति रवेः सादृश्यतां कथम् ॥४३॥

अनन्त नाम परमेश्वर के हैं, सो श्रीराम की समता को एक ठौर होय के भी प्राप्त नहीं हो सकते हैं। जैसे जुगुनू असंख्यात सूर्य सम न हो सकते हैं ॥४३॥

यत्रास्ति तिमिरं घोरं महादुःखौघसञ्चयम् ।
तन्मार्गे रामनाम्नस्तु प्रभा संदृश्यते परम् ॥४४॥

जहां महाघोर अन्धकार दुःखन का आगार ऐसा जो यमपुरी की राह महाकठिन तिसमें श्रीरामनाम की प्रभा से महाप्रकाश सुख प्राप्त होयगो ॥४४॥

यस्मिन्देशे न कोऽप्यस्ति जनाः संबंधिनस्तथा ।
तादृशे क्लेशसंपन्ने नामैको दुःखहारकः ॥४५॥

जिस धर्मराज के पुर में कोई सम्बन्धी जान पहिचान नहीं है, उस राह पुर में केवल क्लेश विनाश करनहारे एक श्रीरामनाम हैं और सब सम्बन्ध धोखा है ॥४५॥

निरालम्बं परं नाम निर्विकल्पं निरोहकम् ।
ये रटन्ति सदा भक्त्या ते कृतार्थाः सुमुक्तिदाः ॥४६

श्रीरामनाम को किसी साधन वस्तु की अपेक्षा नहीं है। सब कल्पना से रहित प्राकृतिक चेष्टा रहित श्रीरामनाम है। जौन बड़भागी सनेह समेत रटन करते हैं, सो मुक्त रूप तथा और जीवन को मोक्षदाता है कृतार्थ स्वरूप हैं ॥४६॥

वशिष्ठरामायणे

नानातर्कविवादगर्तकुहरे पाताश्च ये जन्तवस्
तेषामेकमसंशयं सुशरणं श्रीरामनामात्मकम् ।
मंत्रं नास्ति यतः परं सुललितं प्रेमास्पदं पावनं
स्वल्पायासफलप्रदानपरमं प्रोत्कर्षसौख्यप्रदम् ॥४७

वशिष्ठ रामायन में कहा है—नाना प्रकार के कुतर्क रूप अन्धेरा गड़हा तिसमें गिर पड़ा हैं जौन अभागी तिनको शरन कहिये मुख्य रक्षक श्रीरामनाम हैं इनसे परे परम प्रेम का घर सुन्दरता का सदन थोरे श्रम में विपुल फलदायक मोक्षप्रद और नहीं है कोई मन्त्ररूप ॥४७।

नवद्वाराणि संयम्य ये रमन्ति समादरात् ।
रामनाम्नि परे मन्त्रे धन्या भागवतोत्तमाः ॥४८॥

नवों द्वार रोकि के जो श्रीरामनाम में सादर प्रीति करते हैं सो भक्त शिरोमनि हैं ॥४८॥

भगवद्वाक्यम्

यदि वातादिदोषेण मद्भक्तो मां च न स्मरेत् ।
अहं स्मरामि तं भक्तं नयामि परमां गतिम् ॥४६॥

श्रीराम का वचन है—अन्तकाल में जो कफ बात सम्बन्ध से मेरा नाम मेरे भक्त को उच्चारन न होय तौ हम उसका स्मरन करते हैं औ परमपद देते हैं ताते धीरज राखे रहें ॥४६॥

मन्नामोच्चारकं साधुं सादरं पूयजन्ति ये ।
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ॥५०॥

मेरे नाम उच्चारन करने हारे सन्तन को जो आदर समेत पूजत हैं तिनको बिना जप तप किये हम मृत्युमय संसार सागर से उद्धार कर देते हैं। उनको क्लेश नहीं पड़ता है ॥५०॥

ये स्मरन्ति सदा स्नेहात् ममनाम सुधासरः ।
तेऽतिधन्याः प्रिया स्माकं सत्यं सत्यं ब्रवीम्यहम् ॥५१

जौन सनेह समेत श्रीरामनाम सुधासागर जपते हैं सो हमारे परम प्रिय हैं सत्य सत्य हम कहते हैं ।५१॥

एतदेव परं तत्त्वं मत् प्रसादाय निश्चितम् ।
मनसा वचसा नित्यं भजेत् मन्नाम मङ्गलम् ॥५२॥

मेरो नाम प्रीति प्रतीति समेत संकीर्त्तन करना सर्वदा तत्पर होय के मन बचन शरीर से इह परम तत्त्व शिरोमनि हैं। महामंगलमय नाम जपना जीवन का फल है ॥५२॥

मद्वाक्यमादरेद्यस्तु स मे प्रियतमो नरः ।
तस्यार्थं सर्ववस्तूनि सृजामि वसुधातले ॥५३॥

मेरे वचन का जो आदर करता है सो मेरा परमप्रिय है। उसी सज्जन सनेही के अर्थ सकल पदार्थ सृष्टि में प्रगट करता हौं भूमि में।।३३॥

मन्नाम संस्मरेद्यस्तु सततं नियतेन्द्रियः ।
तस्मात् प्रियतमः कश्चिन्नास्ति ब्रह्माण्डमण्डले ॥५४॥

मेरो नाम महा अभिराम जो निरन्तर इन्द्रियन को जीति के जपते हैं तिनके समान महाप्रिय ब्रह्मांड में कोई नहीं है, सत्य जानो ॥५४॥

आदिरामायणे श्रीमुखवाक्यं नारदं प्रति

यावन्तो ब्रह्मणो वक्त्रान्निर्गता वेदराशयः ।
ते च सर्वेऽप्यधीताः स्युर्नाम्नि नारायणात्मके ॥५५॥

आदि रामायन में श्रीरघुनाथ जी का वचन श्रीनारदजी से है—जितना ब्रह्माजी के मुख से वेदसमूह प्रगट भये हैं सो सबके पाठ का फल श्रीनारायन नाम एक बार कहे प्राप्त होता है ॥५५॥

नारायणस्य यावन्ति पुराणेष्वागमेषु च ।
दिव्यनाम्नां सहस्राणि कीर्तयन् यत्फलं लभेत् ॥५६॥

और नारायन के जितने नाम वेद पुरान शास्त्र में कहे हैं। दिव्य नाम अनन्त प्रकार के गुन क्रियादिक सम्बन्ध वाले हैं, तिनका उच्चारन करिके जो फल होता है ॥५६॥

ततः कोटिगुणं पुण्यं फलं दिव्यं मदात्मकम् ।
लभते सहसा ब्रह्मन् सकृद् रामेति कीर्तनात् ॥५७॥

तिससे कोटि गुन फल अधिक मेरो सम्बन्धी नित्य एकरस एकबार श्रीरामनाम उच्चारन किये प्राप्त होता है संदेह बिना ॥५७

मन्नामकीर्त्तने हृष्टो नरः पुण्यवतां वरः ।
तस्यापि पादरजसा शुद्ध्यति क्षितिमण्डलम् ५८॥

मेरे नाम कीर्त्तन करने सुनने में जो हर्षित होते हैं सो सुकृतिन में राजा हैं तिनके चरन रेनु संबंध से पृथ्वी पावन होती है ॥५८॥

तत्रैव स्थानान्तरे

असंख्यैः पुण्यनिचयैः कोटिजन्मार्जितैरपि ।
पञ्चाङ्गोपासनाभिश्च रामनाम्नि रतिर्भवेत् ॥५६॥

उसी ग्रन्थ में स्थानान्तर में कहा है—कोटिन जन्मन का असंख्य पुण्य समूह विष्णु आदि पञ्चदेवता की उपासना जब यथार्थ किये होय तब श्रीरामनाम में सांची प्रीति होती है, अन्यथा नहीं ॥५६॥

यावन्न रामभक्तानां सततं पादसेवनम् ।
रामनाम्नि परे तावत् प्रीतिस्संजायते कथम् ॥६०॥

जब तक श्रीराम भक्तन के चरन रज की सेवा यथार्थ नहीं भया है तबतक श्रीरामनाम में प्रीति प्रतीत दुर्ल्लभ है ॥६०॥

पापिष्ठा भाग्यहीनाश्च पापकर्मणि तत्पराः ।
रामनाम्नः कथं तेषां मुखादुच्चारणं भवेत् ॥६१॥

पापी अधर्मी वेद विरुद्धाचरन में सनेह करनहारे तिन नीचन के मुख से श्रीरामनाम स्मरन होना दुर्ल्लभ है ॥६१॥

रकारेणाघसंनाशो मकारान्मुक्तिरुत्तमा ।
पूर्णेन वश्यतां याति रामो रामेति शब्दितः ॥६२॥

रकार उच्चारन मात्र से पाप समस्त विनष्ट हो जाते हैं। मकार के कहते हुऐ मोक्ष प्राप्त होता है, दो बरनराज के कहे श्रीराम वश हो जाते हैं ॥६२॥

श्रीब्रह्मोवाच

एतद्धनुमता प्रोक्तं रामनामरहस्यकम् ।
श्रुत्वा नलःप्लवंगेशस्तथैव हि चकार सः ॥६१॥

श्रीब्रह्मा जी कहते हैं—इह रहस्य श्रीरामनाम का ब्रह्माजी

के पूज्य श्रीमहाबीर जू ने कहा। तिसको श्रीनलवानरेश ने सुनिके हृदय में यथार्थ धारन किया ॥६३॥

लिखित्वा दृषदां मध्ये नाम सीतापतेर्मुहुः ।
निचिक्षेप पयोराशौ बहूनुच्चावचान् गिरीन् ॥६४॥

पाषान पर श्रीरामनाम लिख के पत्थर छोड़े वरन को सागर में राखत भये ॥६४।

संतरन्तिस्म दृषतो रामनामाङ्किता जले ।
तद् दृष्ट्वा वानराः सर्वे बभूवुर्विस्मतास्तदा ॥६५॥

श्रीरामनामांकित पाषान जल में काष्ठ के सम तरते भये, सब बानर देखके आश्चर्य हो गये ॥६५।

इदं सुगोप्यं भवते वदामि
प्रसंगतः सेतुनिबन्धनेऽस्मिन् ।
न वाच्यमेतद् भवता परस्मै
भक्त्योपसन्नाय तु वाच्यमेव ॥६६॥

श्रीमहावीरजी कहते हैं-इह श्रीरामनाम रहस्य महागोप सेतु बन्धन संबंध से तुमको कहते हैं सामान्य जीवन को इह श्रीनाम सिद्धांत तुम न कहना, जो सनेह श्रद्धासमेत होय तिसको कहना ६६

रामेतिमंत्रं कवयो वदन्ति
यद्द्व्यक्षरं नाम रघूद्वहस्य ।
अस्मत प्रभोरस्य महामहिम्नो
मनुष्यलिङ्गस्य परस्य पुंसः ॥६७॥

श्रीरामनाम महामन्त्र तिसको कवि ज्ञानी महात्मा कहते हैं। हमारे स्वामी सर्वेश्वर श्रीराम मनुष्याकृति परात्पर का नाम

अनन्त शक्ति समेत है ॥६७॥

तदेव सम्यग् विलिखोरुबुद्धे
प्रत्याद्रिपाषाणशिलासु तावत् ।
भवाम्बुधिं येन जनास्तरन्ति
किं तारणं दुष्करमस्य तेषाम् ॥६८॥

ऐसे श्रीरामनाम को पाषान पाषानप्रति लिखके, हे श्रेष्ठमति सम्पन्न ! सागर में डार देवो सहज में सेतु बँध जायगा देर न लगेगा। श्रीरामनाम प्रताप से भवसागर अपार सन्त लोग तरि जाते हैं, समुद्र में पत्थर का तरन कौन कठिन है ॥६८॥

ग्रावाङ्गणेभ्योऽपि जनस्य पापा
न्यतीव सारेण समाकुलानि ।
लघुक्रियन्ते मनुजा यदेतै
र्भृशं विलुप्तैरिह तन्न चित्रम् ॥६९॥

दोहा—श्रीसीतापति नाम को प्रबल प्रताप अनन्द ।
सावधान चिन्तन करत पाइय परमानन्द ॥१॥
रामनाम सुमिरन बिना साधन निखिल अनर्थ ।
युगलानन्य विहाय भ्रम सुमिरिय नाम समर्थ ॥२॥

पाषान समूह से भी जीवन के पाप भारी हैं तिनसे सब व्याकुल हैं ऐसे पाप प्रबल हैं तौ भी श्रीरामनाम उच्चारण से तुच्छ हो जाते हैं श्रीरामनाम प्रताप से जो होय सो आश्चर्य्य है ॥६९॥

नल उवाच

साधु भो साधु हनुमन् भवान् यदुपदिष्टवान् ।
जपन् संतारणं नाम रामस्य करुणानिधेः ॥७०॥

श्रीनल बोले—हे सन्त सिरोमनि श्रीहनुमान जी ! जौन

रहस्य आपने महागुप्त हमको सुनाया जिसके जप करने से जीव शीघ्र कृतार्थ हो जाता है श्रीराम करुनासागर का नाम सबसे श्रेष्ठ है ॥७०॥

सत्यमेतत्प्रभुरयं नराकारो नरोत्तमः ।
कोऽस्य स्वरूपं जानीयात्त्वामृते विदुषां वर ॥७१॥

श्रीराम परम प्रभु सत्य सत्य नराकार परम ब्रह्म पुरुषोत्तम हैं। आप बिना यथार्थ श्रीराम महाराज के स्वरूप को दूसरा कौन जानि सकेगा, हे सब ज्ञातन में श्रेष्ठ ! श्रीरामनाम पारायन आप हैं ॥७१॥

भूयस्त्वां परिपृच्छामि कृपाते मयि मारुते ।
क्षमस्व तन् ममात्यन्तं बहुधा मूढ़चेतसः ॥७२॥

फेर कुछ और प्रशन आप से करते हैं जाते आपकी कृपा हमारे पर बहुत है सो मेरे अपराध को आप क्षमा कीजिये हम महामूढ़ हैं ॥७२॥

भवस्याम्भोनिधेश्चापि त्वया पारः प्रदर्शितः ।
विस्तरेण पुनर्ब्रूहि रामनाम्नोऽस्य वैभवम् ॥७३॥

संसार सागर का पार आपने हमको दिखा दिया विस्तार करिके फेर आप श्रीरामनाम का परत्व कहिये हमको अति उत्कण्ठा है। यद्यपि नाना प्रकार के साधन शास्त्रन में कहा है तो भी इस काल में होना दुर्ल्लभ है जो सब प्रकार परमानन्द की इच्छा होय तौसब साधनन का आशा छोड़िके श्रीरामनाम पारायन हो जावो इसी में भला होयगा ॥७३॥

शृण्वन् स्मरन् प्रभोर्नाम माहात्म्यमिदमद्भुतम् ।
न तृप्यामि मरुत्सूनो कथयस्व ततो मम ॥७४॥

श्रीरामनाम परात्परेश के नाम का माहात्म्य महा आश्चर्य श्रवन करते हुये हम तृप्त नहीं हो सकते हैं, हे पवनपुत्र ! श्रीराम परम प्रिय !! बारम्बार सुनाइये ।।७४।।

श्रीहनुमानुवाच

श्रूयतां सावधानेन रामनामबलं त्वया ।
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ।।७५।।

श्रीहनुमान जी कहते हैं—सावधान होय के श्रीरामनाम का महाबल शक्ति श्रवन करो, जिनके सुनने से सब पाप कलाप सहज में छूटि जायगा संशय न जानोगे ।।७५।।

एकतः सकला मन्त्रा एकतो ज्ञानकोटयः ।
एकतो रामनाम स्यात्तदपि स्यान्न वै समम् ।।७६।।

एक ओर सब मन्त्र कोटिन ज्ञान ध्यान एक ओर श्रीरामनाम तौ भी काहू भांति समता नहीं करि सकेंगे ।।७६।।

देशकालक्रियाज्ञानादनपेक्ष्यं स्वरूपतः ।
अनन्तकोटिफलदं नाममन्त्रं जगत्पतेः ।।७७।।

देश काल क्रिया अनुष्ठानादिक की अपेक्षा श्रीरामनाम को नहीं है। केवल उच्चारन मात्र से अनन्त कोटि फल प्रद श्रीरामनाम हैं ।।७७।।

गङ्गास्नानसहस्रेण यज्ञान्तस्नानकोटिभिः ।
पानशुद्धिर्भवेज्जातु सा रामेतिप्रकीर्त्तनात् ।।७८।।

श्रीगङ्गाजी का कोटिन बार नहाना, बड़े-बड़े यज्ञ करिके अन्त में नहाना तथा अनन्त सुकृतन करिके जो सिद्धि दुर्ल्लभ है, सो श्रीरामनाम उच्चारन से प्राप्त होता है ।।७८।।

अन्यदेव फलं ज्ञाने श्रवणे वान्यदेव तत् ।

कीर्तने चान्यदेवस्य ह्यन्यदा वर्तते फलम् ॥७९॥

ज्ञान ध्यान सत् शास्त्र श्रवन का और फल है, सत् कर्म का और फल है, श्रीरामनाम का भिन्न फल है, अभिप्राय इह है के श्रीरामनाम जप से परम पुरुष वश हो जाते हैं और बातन से मोक्ष पर्यन्त सिद्धि होती है ॥७९॥

ये जानन्ति जनास्तत्त्वं रामनाम्नो महायशः ।
न ते दुष्कृतसंदोहैर्लिप्यन्ते जन्मकोटिभिः ॥८०॥

श्रीरामनाम महायश सिंधु के परात्पर तत्त्व को जो जन जानते हैं अनन्त जन्म तक पाप परिताप का स्पर्श तिनको कदाचित् प्राप्त न होयगा ॥८०॥

शिव एवास्य जानाति सरहस्यं स्वरूपकम् ।
उपदिश्य सकृज्जीवान् यस्तारयति मोहतः ॥८१॥

श्रीरामनाम का यथार्थ स्वरूप रहस्य प्रताप श्रीशंकर जी जानते हैं जौन श्रीमहादेवजी सब जीवन को एकबार श्रीरामनाम सुनाय के महामोह सागर से काशी में तारि देते हैं ॥८१॥

अन्यदाराधनशतैर्मन्त्रं फलति नाथवा ।
गृहीतमात्रफलदं रामनाम स्वरूपतः ॥८२॥

और मन्त्र अनेक प्रकार के अनुष्ठान से फलते हैं अथवा नहीं औ श्रीरामनाम में ग्रहन मात्र से फली होते हैं ॥८२॥

न शौचनियमाद्यत्र न सिद्धारिविचारणम् ।
कल्पवृक्षस्वरूपत्वाज्जनानां रामनामकम् ॥८३॥

श्रीरामनाम में शौच का नियम नहीं, सिद्धि शत्रु आदिक तन्त्रन का विचार नहीं, कल्पतरु स्वभाव जनन को परम मोददायक है श्रीरामनाम ॥८३॥

सकृज्जप्तं धुनोत्याशु पापमाजन्मसंभवम् ।
द्विरावृत्या पुनर्जप्तं कोटियज्ञफलप्रदम् ।।८४।।

एक बार उच्चारन किये जन्मभर का पाप नाश करि देते हैं। दूसरे बार जप से कोटिन यज्ञ का फल प्राप्त होता है ।।८४।।

त्रिरावृत्या पुनर्जप्तं स्वरूपस्थं करोत्यमुम् ।
चतुरावृत्तिजप्तत्वादृणीभवति राघवः ।।८५।।

तीन बार कहे से स्वरूप में स्थिति कर देते हैं। चार बार कहे श्रीरघुनाथ जी ऋनी हो जाते हैं ।।८५।।

चिन्तामणिः कल्पतरुः कामधेनुश्च वै नृणाम् ।
अनल्पफलसंदोहभवनं रामनाम वै ।।८६।।

चिंतामनि कामधेनु कल्पवृक्ष से अनन्त गुन अधिक फलप्रद हैं, सब सुख के भवन हैं ।।८६।।

नास्य रूपं विजानन्ति ब्रह्माद्या देवता अपि ।
वाग्वल्ली बीजमेतद्वै रामनाम जगत्पते ।।८७।।

श्रीरामनाम मन्त्र का यथार्थ स्वरूप ब्रह्मादिक नहीं जानते हैं सम्पूर्ण शब्द ब्रह्मरूप लता का वीज श्रीरामनाम महामोदधाम हैं सब जगत के ईश श्रीराम हैं ।।८७।।

अमृतस्याकरं विद्यादेतदेव महोर्जितम् ।
सर्वलोकमहामोहतिमिरौघनिवारणम् ।।८८।।

श्रीरामनाम महा अमृत के खानि हैं, महा श्रेष्ठ हैं। अनन्त सृष्टि का महामोहतम निवारन करनहारे हैं ।।८८।।

अनन्तकोटिसूर्येन्दुवह्निदीधितिदीप्तिमत् ।
बाह्यान्तरसुसंछन्नं तमोवृन्दनिरासकम् ।।८९।।

असंख्य सूर्य्य चन्द्र अग्नि से अनन्त गुन प्रकाशमान हैं। भीतर बाहर का सब तम शीघ्र नाशक हैं ॥८९॥

ज्ञानधारामृतरसैरात्मनः न स्नपस्फुटम् ।
हृत्पद्मभवने नित्यं दीप्तिकृद्दीपकोपमम् ॥९०॥

विशद विज्ञान रूप सुधा धार से आत्मा के नहवाननेहारे हैं हृदय रूप घर में परम प्रकाश करनवारे हैं महादीप सम हैं ।९०

सर्ववेदान्तविद्यानां सारमेतदुदीरितम् ।
रामनामाखिलाज्ञानरजनीहरभास्करम् ॥९१॥

समस्त वेदान्त विद्या का सार हमने कहा है, सावधान होय के धारन करौ अशेष अज्ञान के हरनहारे महाप्रकाशमान श्रीरामनाम हैं ॥९१॥

पुरा कृतयुगे केचित जनाः सुकृतिनो नल ।
सरहस्यं रामनाम सकृतास्वाद्य सद्गुरुम् ॥९२॥

पूर्व सतयुग में जौन बड़े सुकृति सज्जन शिरोमनि थे सो कोई बड़भागी श्रीरामनाम का रहस्य सांचे सतगुरु पायके पावते थे, अगम से अगम श्रीरामनाम विभव है ॥९२॥

भित्वाऽज्ञानतमोराशिं कृत्वा स्वात्मप्रकाशनम् ।
परे ब्रह्मणि संलीनाः सिद्धिं प्राप्ता बिना श्रमम् ॥९३॥

अज्ञानरूप महातम का ढेर तिसको भेदन करिके अपने आत्मा का प्रकाश परमब्रह्म समेत प्राप्त होता है, श्रीसीताराम-नाम कृपा से सब सिद्धि श्रम बिना प्राप्त होता है ॥९३॥

अपरं साधनानीह बभूवुः कोटिशो नृणाम् ।
मुनीनां मतभेदेन येष्वायासो महान् भवेत् ॥९४॥

और बहुत साधन कोटिन प्रकार के मुनिन ने अपने-अपने

मतभेद से कहा है तिनमें श्रम समुदाय है नफा न्यून है, श्रीरामनाम में फल अनन्त है श्रम थोरा है ॥६४॥

ध्यानतो रामचन्द्रस्य रामचन्द्रस्य भक्तितः ।
रामचन्द्रस्य यजनान्नाम्ना रामस्य मुच्यते ॥६५॥

श्रीरामनाम ध्यान से, सेवन से, पूजन से श्रम बिना जीव परात्पर परम पद को जाता है, सब संसृति बन्धन त्यागि के ।६५।

रामैव यस्य बहिरन्तरपापकोटि
निर्वासनैककरणं शरणं जनानाम् ।
कस्तस्य कोशलपुराधिपराजसूनो
रन्यावतारनिवहस्तुलने प्रयातु ॥६६॥

श्रीरामनाम अनन्त जीवन के भीतर बाहर क तम पाप परिताप नाश करके वासना मिटाय के परम प्रमोद देते हैं। सब जीवन के रक्षक हैं ऐसा सर्वोपरि जिनका नाम है तिनको किसी अवतार के सम कहना महा पाप है ॥६६॥

यावन्ति नामानि रघूत्तमस्य
तेषामिदं मुख्यतमं प्रदिष्टम् ।
यज्ज्ञानमात्रेण विमुक्तबन्धः
स्वरूपनिष्ठां लभतेऽधमोऽपि ॥६७॥

श्रीरामचन्द्र महाराज के जितने नाम हैं तिनमें श्रीरामनाम महामुख्यन में मुख्य हैं, इनके समान और नाम नहीं है। जिन श्रीरामनाम के जानने मात्रसे बन्धन छूटि जाता है और अधम भी यथार्थ स्वरूप निष्ठा को प्राप्त होता है ।६७।

अज्ञानेन्धननिर्दाहो ज्ञानदीपप्रदीपनम् ।

एतदेवमतं नाम्नि रामेति द्वयक्षरात्मके ॥९८॥

अज्ञानरूप काष्ठ के नाशक ज्ञानरूप दीप के प्रकाशक श्रीरामनाम हैं दोनों बात एक ही समय श्रीराम सम्बन्ध से प्राप्त होता है ॥९८।

जिह्वाग्रे यस्य लिखितं रामेति द्वयक्षरं परम् ।
कथं स्पृशन्ति तं दूताः यमस्य क्रोधभीषणाः ॥९९॥

जिसके जीभ में श्रीरामनाम दो अक्षर लिखा है तिसको यमदूत भयानक कदाचित् देखि न सकेंगे स्पर्श की कौन कथा है ॥९९॥

रामनामाङ्किता मुद्रा प्रत्यङ्गं येन वै धृताः ।
आबद्धं तेन कवचं मोहशत्रु मूजये ॥१००॥

श्रीसीतारामनाम सम्बन्धी छाप जिसने अपने अङ्ग में धारन किया है तिस महात्मा ने मोह रिपुगन जीतने को प्रबल कवच पहिरा है ॥१००॥

जाग्रंस्तिष्ठन् स्वपन् क्रीडन् विहरन्नाहरन्नपि ।
उन्मिषन् निमिषंश्चैव रामनाम सदा जपेत ॥१००१

जागते, सोते, चलते; बैठते, बिहार करते, पलक के खोलते बन्द करते, व्यवहार समय तथा सकल काल में जो श्रीरामनाम उच्चारन करते हैं सो धन्य हैं ॥१०१॥

पापं कृत्स्नं विधूयाशु मुक्तभारः स मानुषः ।
अनायासेन मोहाख्यं सिन्धुं तरति दुस्तरम् ॥१०॥

ऐसे बड़भागी सब पाप ताप संसार के भार से रहित होय के महा मोहरूप सागर तरिबे योग नहीं तिसको श्रम बिना तरि जाते हैं, देर नही लगता ॥१०२।

प्रारब्धकममर्मापहतिप्रवीणं

रामेति नामैव बुधैर्निरुक्तम् ।
यज्ज्ञानमात्रादधमा किराती
मुनीन्द्रवन्द्यैरभवन्नमस्या ॥१०३॥

प्रारब्ध कर्म का नाश नहीं होता है । परन्तु श्रीरामनाम उच्चारन से प्रारब्ध शक्ति का भी नाश हो जाता हैं । जौन श्रीराम स्वरूप बोध से नीच किरात जाति की वामा भी कृतार्थ होती भई, सब मुनि समूह से पूजनीय होत भई ॥१०३॥

कस्तेन तुल्यः सुकृती भवेऽस्मिन्
कस्तेन तुल्यश्च सदाप्रकाशः ।
कस्तेन तुल्यश्च विशोकमोहो
यो राम रामेति जपेदजस्रम् ॥१०४॥

इस संसार में श्रीरामनाम जापक समान सुकृती परम प्रकाश मान शोक रहित मोह रहित नहीं हैं । सबसे श्रेष्ठ वही हैं जो निरन्तर श्रीरामनाम में तत्पर हैं ॥१०४॥

एतन् मया संपरिपृच्छ्यते ते
भूयः प्रदिष्टं परमं रहस्यम् ।
हृदावधार्यं स्वयमेव विद्धि
वाच्यं भजित्वा सति नो परस्मिन् ॥१०५॥

इह परम रहस्य जो आपने कहा हमारे प्रति सो हमने धारन किया औ हम इस रहस्य को अधिकारी बिना और से न कहेंगे, आपकी आज्ञानुसार सदा छिपावेंगे परमतत्त्व जानिके १०५

श्रीमन् महारामायणे श्रीपार्वतीवाक्यं श्रीशंकर प्रति

मुहुर्मुहुस्त्वया प्रोक्तं रामनाम परात्परम् ।

तदर्थं ब्रूहि भो स्वामिन् कृत्वा मह्यं दयां हृदि॥ १०६॥

श्रीमहारामायन में पार्वतीजी का वचन श्रीशंकर प्रति है—बार-बार श्रीरामनाम को आपने परात्पर कहा तिनका अर्थ हम पर कृपा करिके कहिये ॥१०६॥

श्रीशिव उवाच

त्वमेव जगतां मध्ये धन्या धन्यतरा प्रिये ।
पृष्टं त्वया महत्तत्वं रामनामार्थमुत्तमम् ॥१०७॥

श्रीशंकर जी बोले—हे प्रिये ! सब जगत् में धन्य से धन्य तुम हो जाते श्रीरामनाम का महत्व परम उत्तम आपने पूछा जिसको सुनि जीव कृतार्थ होयँगे ॥१०७॥

वेदास्सर्वे च शास्त्राणि मुनयो निर्जरर्षभाः ।
नाम्नः प्रभावमत्युग्रं ते न जानन्ति सुव्रते ॥१०८॥

सम्पूर्ण वेद, शास्त्र, मुनि, देवता समूह श्रीरामनाम का महा प्रभाव नहीं जानि सकते हैं ॥१०८॥

राम एवाभिजानाति कृत्स्नं नामार्थमद्भुतम् ।
ईषद्वदामि नामार्थं देवि तस्यानुकम्पया ॥१०९॥

समस्त श्रीरामनाम का प्रताप श्रीराम आपही जानते हैं, कहि नहीं सकते हैं । श्रीराम कृपा से संक्षेप अर्थ प्रताप हम भी कहते हैं ॥१०९॥

कोटिकन्दर्पशोभाढ्ये सर्वाभरणभूषिते ।
रम्यरूपार्णवे रामे रमन्ते सनकादयः ॥११०॥

कोटि काम शोभा समेत सकल भूषन समेत महासुन्दर रूप में सनकादिक रमन करते हैं इहां सर्वत्र नाम नामी की एकता है ॥११०॥

अत एव रमुक्रीडा रामनाम्नः प्रवर्तते ।
रमन्ते मुनयः सर्वे नित्यं यस्यांघ्रिपंकजे ॥१११॥

जाते सब श्रीराम में रमन करते हैं, याही से रमुक्रीड़ा धातु का अर्थश्रीरामनाम से सिद्ध होता है । सब मुनीश्वर जिनके चरनकञ्ज में सदा रमन करते हैं ॥१११॥

अनेकसखिभिः साकं रमते रासमण्डले ।
अतएव रमुक्रीडा रामनाम्ना प्रवर्तते ॥११२॥

अनेक सखिन के साथ रासमण्डल में विहार करते हैं । ताते रमुक्रीड़ा रामनाम से प्रवरतन होत है ॥११२॥

ब्रह्मज्ञाननिमग्नो यो जनको योगिनां वरः ।
हित्वा तद्रमते रामे रमुक्रीडा ततोऽनघे ॥११३॥

ब्रह्मज्ञान में मगन जो श्रीजानकी जी के पिता जनक महाराज योगिन में शिरोमनि सो भी ज्ञानकाण्ड को त्यागि के श्रीरामस्वरूप में रमन करत भये, ताते रमु धातु का अर्थ यथार्थ नाम में सिद्धि है ॥११३॥

आबाल्यतो विरक्तो यो जामदग्न्यो हरिःस्मृतः ।
स एव रमते रामे रमुक्रीडा ततोऽनघे ॥११४॥

लड़काई से महाविरक्त योगी जो परशुराम जी सो भी श्रीरामनाम में रमन करत भये । हे पाप रहिते पार्वति ! ताते श्रीरामनाम से रमुक्रीड़ा सिद्ध जानो ॥११४॥

सप्तद्वीपाधिपास्सर्वे साधवोऽसाधवोऽपि वा ।
विदेहकुलसंभूता ये च सर्वे नृपोत्तमः ॥११५॥

सातों द्वीप के राजा भले बुरे श्रीजनकपुर में आये थे ।

तथा श्रीविदेहबंशी राजा सब श्रेष्ठ ॥११५॥

रामरूपहृता भूत्वा रमितास्तैर्निजा निजाः।
दत्तात्मजा रमुक्रीडा रामस्यैव इति श्रुतिः ॥११६॥

श्रीराम सुन्दर स्वरूप पेखि के उनके मन को हरन होत भयो। सब श्रीराममूर्ति में रमन करत भये, अपनी-अपनी बेटिन को श्रीराम के सङ्ग विवाह करिदेत भये; इह बात परम प्रसिद्ध है ॥११६॥

चित्रकूटमनुप्राप्य पितुर्वचनगौरवात।
रम्यमावसथं कृत्वा रममाणा वने त्रयः ॥११७॥

श्रीचित्रकूट में श्रीराम प्राप्त भये पिता बचन को श्रेष्ठ मानिके सुन्दर पर्नकुटी बनाय के तीनों रमन करन भये ॥११७॥

देवगन्धर्वसंकाशास्तत्र ते न्यवसन् सुखम्।
अतोऽस्य रामनाम्नो वै रमुक्रीडा प्रवर्तते ॥११८॥

श्रीजानकी लक्ष्मनजी सहित श्रीरघुनन्दन भक्त चित्तचन्दन बन में देव गन्धर्व सम बसते भये, ताते श्रीरामनाम से रमुक्रीड़ा सिद्ध होत है, माधुर्य अंश में दृष्टांत समुझना चाहिए ॥११८॥

राक्षसी घोररूपा या दुष्टत्वं कर्तुमागता।
साप्यासीद्रमिता रामे पतिवत् काममोहिता ॥११९॥

महाघोर रूप राक्षसी शूर्पणखा दुष्टता करने को आई थी सो भी श्रीराममनोहर रूप देखिके मोहित होत भई, पति मानि के काम से मोहित होयके ॥११९॥

चतुर्दशसहस्राश्च राक्षसाः खरदूषणाः।
मोहिता रामसद्रूपे रमुक्रीडात उच्यते ॥१२०॥

चौदह हजार राक्षस खर दूषनादिक श्रीराम स्वरूप देखिके मोहित होत भये ताते रसक्रीड़ा श्रीरामनाम से जानना चाहिये १२०

नाना मुनिगणा सर्वे दण्डकारण्यवासिनः ।
ज्ञानयोगतपोनिष्ठा जापका ध्यानतत्पराः ॥१२१॥

अनन्त प्रकार के मुनि दण्डक बनवासी ज्ञान योग तप में निष्ठ, जप ध्यान में तत्पर, सो सब ॥१२१॥

मुनिवेशधरं रामं नीलजीमूतसन्निभम् ।
रमन्ते योषितीभूता रूपं दृष्ट्वा महर्षयः ॥१२२॥

श्रीरघुनन्दन मुनि वेषधारी सुन्दर श्यामघन मनोहर वेषको विलोकि के वामाकार होत भये और श्रीराम के साथ विहार करने की इच्छाकरत भये समस्त महर्षि सनेह से व्याकुल होयके ॥१२२॥

ईषद्धास्ये कृते रामे दृष्ट्वा तेषामिमां गतिम् ।
यूयं धन्यतरा ज्ञानं मत्प्रसन्ने हि सांप्रतम् ॥१२३

या रीति की भावना महामुनिन को ध्यानमय देखिके श्रीराम चन्द मुसक्यान करते भये । हे मुनीश्वर ! तुम धन्य हो जाते मेरी प्रसन्नता से तुमको दिव्यज्ञान प्राप्त होता भया है ॥१२३॥

मन्निदेशात् तपो यूयं चरध्वं भो महर्षयः ।
ईप्सितास्ते भविष्यन्ति द्वापरे वर्तते युगे ॥१२४॥

अबमेरी आज्ञा से आप सब शृङ्गार भावनारूप तप करते हुये इसी बन में एकाग्र होय के बैठे रहें, तुम्हारा मनोरथ द्वापर के रास में सिद्ध होयगा । श्रीरामरास सब युग में होत है, अपने अधिकार अनुकूल जीव प्राप्त होते हैं, अन्य बात न विचारना कभी ॥१२४॥

अजरामरतनुं त्यक्त्वा रामाल्लब्धं विलोक्य सः ।

राम एवारमद्वाली रमुक्रीडात उच्यते ॥१२५॥

अजर अमर शरीर श्रीराम से पायके अङ्गीकार नहीं करत भये श्रीरामनामाभेद रूप अनूप अभिराम में रमन करत भयो, बाली। ताते रमुक्रीड़ा श्रीरामनाम में सिद्ध है ॥१२५॥

यतोऽयं रमते रामे सदैव पवनात्मजः ।
दग्ध्वा लंकां ततः सीतां वीक्ष्यायातः सुखेन सः ॥१२६

श्रीमारुत सुवन सर्वदा श्रीरामस्वरूप में रमन करते हैं। श्रीरामनाम प्रताप से लंका जलाय के सुख समेत श्रीजानकीजी का दर्शन पायके श्रीराम के समीप आवत भये ॥१२६॥

रमिता रामसद्रूपे राक्षसा रावणादयः ।
राम रामाहवेत्युक्त्वा राममेवाभिसंगताः ॥१२७॥

श्रीराम को परात्पर स्वरूप में रावनादि राक्षस रिपु मति करके रमन करते भये। श्रीरामनाम संग्राम में उच्चारन करके कृतार्थ होते भये श्रीराम में लीन भये ॥१२७॥

परधाम्नि गते रामेऽयोध्यायां ये चराचराः ।
रामेऽभिरमिता भूत्वा तच्छाकं जग्मुरेव हि ॥१२८॥

श्रीराम के गुप्तधाम में पधारने समय श्रीअवधवासी श्रीरामरूप में रमित होयके संग ही जात भये ॥१२८॥

रामनाम्नो विशेषेण रमुक्रीडात उच्यते ।
हेतुरन्यद् रमुक्रीडां शृणु त्वं सावधानतः ॥१२९॥

विशेष करिके रमुक्रीड़ा का अर्थ रमनरूप श्रीराम ही से सिद्ध होता है, और भांति गौण हैं। और भी हेतु रमुक्रीड़ा का सावधान होय के सुनो ॥१२९॥

वाच्यवाचकरामस्य कथितौ रूपनामनी ।
रामनाम परं ब्रह्म रमिता यच्चराचरे ॥१३०॥

श्रीरामरूप वाच्य है, श्रीरामनाम वाचक है, चराचर में श्रीरामनाम पूरन है ॥१३०॥

रमन्ते मुनयो यस्मिन् योगिनश्चोद्‌र्ध्व रेतसः ।
अतो देवि रमुक्रीडा रामनाम्नेव वर्तते ॥१३१॥

जौन श्रीरामरूप नाम में मुनीश्वर उर्ध्वरेता रमन करते हैं ताते रमुक्रीड़ा श्रीरामनाम से प्रवर्त्तत है। श्रीरामनाम की महिमा अकथ है ॥१३१॥

पोषणं भरणाधारं रामनाम्नो जगत्सु च ।
अतएव रमुक्रीडा परब्रह्माभिधीयते ॥१३२॥

जगत् में पोषन, पालन, धारन सब श्रीरामनाम शक्ति से बिचार करो, याही ते रमुक्रीड़ा सम्पन्न जो रामपद सो परंब्रह्म स्वरूप है ॥१३२॥

अंशांशे रामनाम्नश्च त्रयः सिद्धा भवन्ति हि ।
बीजमोङ्कारसोऽहं च सूत्रमुक्तमिति श्रुतिः ॥१३३॥

श्रीरामनाम के अंश के अंश से तीनों सिद्ध होते हैं। बीज, ओंकार, सोहं, शिव सूत्र से समुझना व्याकरन से भी सिद्ध होता है, श्रीरामनाम परत्व प्रसिद्ध है ॥१३३॥

श्रीपार्वती उवाच

कथमेतद्विजानामि संसिद्धा रामनामतः ।
बीजमोङ्कारसोऽहं च सूत्रमुक्तमि तिश्रुतिः ॥१३४॥

श्रीपार्वती जी पूछती हैं—हे शंकर जी ! हम कैसे जाने के

रामनाम के अंशांश से बीज, ओंकार, सोहं, उत्पत्ति होत हैं; सूत्र सम्बन्ध से श्रुति सिद्धांत है ॥१३४।

श्रीशिव उवाच

निश्चलं मानसं कृत्वा सावधानाच्छृणु प्रिये ।
गुह्याद् गुह्यतमं तत्त्वं वक्ष्येऽमृतमयं मुदा ॥१३५॥

श्रीशंकरजी महाराज बोले—निश्चल चित्त करिके सावधान समेत सुनो—गुप्त से महागुप्त परम तत्त्व अमृतमय हर्ष समेत ध्यान करो ॥१३५॥

रामनाम महाविद्ये षड्भिर्वस्तुभिरावृतम् ।
ब्रह्मजीवमहानादैस्त्रिभिरन्यद्वदामि ते ॥१३६॥

हे महाविद्या स्वरूपे ! श्रीरामनाम षट पदार्थ करिके युक्त हैं, ब्रह्मजीव महानाद ॥१३६॥

स्वरेण बिन्दुना चैव दिव्यया माययापि च ।
पृथक्त्वेन विभागेन सांप्रतं शृणु पार्वति ॥१३७॥

स्वर, बिन्दु, दिव्य माया, अब भिन्न-भिन्न इनका स्वरूप सुनिये, हे प्रिये ! ॥१३७॥

परब्रह्ममयो रेफो जीवोऽकारश्च मश्च यः ।
ह्रस्याकारो महानादो राया दीर्घस्वरात्मिका ॥१३८॥

अर्द्धमात्रा जो रेफ है सो परमब्रह्म श्रीराम सीता स्वरूप है औ मकार में जो रकार है सातों प्रकार जीवों का कारन है । रकार में ह्रस्व अकार है सो महानाद स्वरूप है, दशोंनाद का कारन है रकार में दीर्घ अकार है सो सब स्वरन का कारन है ॥११८॥

मकारो व्यञ्जनं बिन्दुर्हेतुः प्रणवमाययोः ।
अर्धभागादुकारः स्यादकारन्नादरूपिणः ॥१३९॥

मकार जो अकार रहित आधा व्यञ्जन है सोई बिन्दु है। ओंकार माया का कारन है। रकार में जो महानादरूप ह्रस्वाकार तिसको उकार किया ॥१३९॥

रकारगुरुराकार तथा वर्णविपर्ययः।
मकारव्यञ्जनं चैव प्रणवं चाभिधीयते ॥१४०॥

दीर्घाकार को उलटि करिके अकार उकार समेत ओ भया। मकार को हल करिके बिन्दु ओ के ऊपर गयो, ओंकार श्रीरामनाम के अंस से सिद्ध भयो ॥१४०॥

मस्यामसवर्णितं मत्वा प्रणवे नादरूपधृक्।
अन्तर्भूतो भवेद्रेफः प्रणवे सिद्धिरूपिणो ॥१४१॥

मकार की अकार सवर्ण मानिके प्रणव में नादरूप होयके विराजमान भयो। प्रणव जब सिद्ध हो चुका तब रेफ परंब्रह्म रूप ओंकार में साक्षीरूप होयके स्थित भयो। रेफ का विसर्ग करिके फिर उकार करिके पुनि अकार। दीर्घाकार को सवर्ण करिके अकार उकार को ओं करिके मकार को हल करिके विन्दुओं के मस्तक पर गयो, ओं सिद्ध भयो, मकार को अकार लोप भयो इह व्याकरन रीति से सिद्ध जानो ॥१४१॥

रामनाम्नः समुत्पन्नः प्रणवो मोक्षदायकः।
रूपं तत्त्वमसेश्चासौ वेदतत्त्वाधिकारिणः ॥१४२॥

श्रीरामनाम से प्रणव उत्पत्ति भया मोक्षदायक है। तत्त्वमसी भी श्रीरामनाम से सिद्ध होता है वेदतत्त्वाधिकारिन को इनका स्वरूप लक्ष्य होता है ॥१४२॥

अकारः प्रणवे सत्त्वमुकारश्च रजोगुणः।
तमोहलमकारस्स्यात् त्रयोऽहङ्कारमुद्भवः ॥१४३॥

प्रणव में अकार सतोगुण, उकार रजोगुण, हल मकार तमोगुण है। सात्विक, राजस, तामस, अहंकार इनसे प्रगट भयो ॥१४३॥

चराचरसमुत्पन्नो गुणत्रयविभागतः ।
अतः प्रिये रमुक्रीडा रामनाम्नैव वर्तते ॥१४४॥

चराचर सृष्टि तीन गुन से उत्पन्न होत भई, ताते श्रीरामनाम से सबकी रमनता जानना श्रीराम सबमें रमन करते हैं ॥१४४॥

यथा च न प्रणवो ज्ञेयो बीजं तद्वर्णसंभवम् ।
स शब्देन हकारेण सोऽहमुक्तं तथैव च ॥१४५॥

जैसे प्रणव की उत्पत्ति कही तैसे ही आधा मकार करिके बीज मात्र को उत्पत्ति जानना सकार हकार जब ओंकार में आगम किया तब सोहं भी सिद्ध हो जाता है ॥१४५॥

इत्यादयो महामन्त्रा वर्तन्ते सप्त कोटयः ।
आत्मा तेषां च सर्वेषां रामनाम्ना प्रकाशते ॥१४६॥

इस तीन मंत्र से लेकर के सातकोटि महामन्त्रहैं,सोसबका आत्मा श्रीरामनाम करिके प्रकाशित होता है ॥१४६॥

अतः प्रिये रमुक्रीडा तेषामर्थे प्रवर्तते ।
सनकाद्याः फणीशाद्या रामनाम भजन्त्यतः ॥१४७॥

ताते सब में रमुक्रीड़ा की शक्ति विराजमान है। ताही ते सनकादिक शेष महेश श्रीरामनाम ही का भजन करते हैं सब साधन छोड़िके ॥१४७॥

रामनामगुणैश्वर्यं संक्षेपेण प्रभाषितम् ।
रूपमेवप्रतापं च रामनाम्नो वदामि ते ॥१४८॥

श्रीरामनाम का गुन ऐश्वर्य्य रूप शक्ति सामान्य से हमने

कहिके सुनाया अब विशेष से रूप प्रताप का वर्णन करते हैं सो सावधान होय के श्रवन करो ॥१४८॥

शृणुष्व परमं गुह्यं यन्न जानन्ति केऽपि च ।
केऽपि केऽपि विजानन्ति रामानुक्रोशयैव च ॥१३६॥

परम गुप्त रहस्य तुम श्रवन करो जिसको कोई नहीं जानता है, जो कोई जानता भी है सो राम कृपा से जानता है ॥१४६॥

तेजोरूपमयो रेफः श्रीरामाम्बककञ्जयोः ।
कोटिसूर्यप्रतीकाशः परं ब्रह्म स उच्यते ॥१५०॥

श्रीरामनाम ही में रामरूप की भावना करना चाहिए। महातेज प्रकाशमय जो रेफ है सो श्रीराम का नयनकञ्ज है, कोटिन सूर्य्य सम प्रकाशमान परंब्रह्म स्वरूप ॥१५०॥

सोऽपि सर्वेषु भूतेषु सहस्रारे प्रतिष्ठितः ।
सर्वसाक्षी जगद्व्यापीनित्यं ध्यायन्ति योगिनः १५१

सब जीवन में तथा सहस्रदल कमल में विराजमान हैं सकल के साक्षी जगत् व्यापी हैं। सदा योगीजन ध्यान करते है ॥१५१॥

रामस्य मण्डलस्यैवतेजोरूपं वरानने ?
कोटिकन्दर्पशोभाढ्यो रेफाकारो हि विद्धि च ॥१५२॥

श्रीराम सुखधाम का मुखमण्डल महा तेजोमय कोटिन काम की शोभा सम्पन्न कोटिन प्रकाशमय सो रेफ का अकार ह्रस्व है यह समझो ॥१५२॥

अकारस्सोऽपि रूपश्च वासुदेवस्स कथ्यते ।
मध्याकारो महारूपः श्रीरामस्येव वक्षसः ॥१५३॥

सोई अकार वासुदेव का कारन है औ मध्य का अकार महा चमत्कार बल पराक्रम पुञ्ज समेत सो श्रीरामनाम का

वक्षस्थल कहिये हृदय स्वरूप ॥१५३।

सोऽप्याकारो महाविष्णोर्बलवीर्यस्वरूपकः ।
सर्वेषामेव भूतानामाधारस्त्वं च विद्धि सः ॥१५४॥

सोई अकार बल वीर्य्य स्वरूप महाविष्णु का कारन रूप है, सकल सृष्टि का आधार इन्हीं को जानो ॥१५४॥

मस्याकार भवेद् रूपः श्रीरामकटिजानुनी ।
सोऽप्याकारो महाशम्भुरुच्यते यो जगद्गुरुः ॥१५५॥

मकार को अकार श्रीराम को कटि व जंघा है, सोई अकार महा शम्भुरूप सब विश्व को गुरु है, उपदेष्टा है ॥१५५॥

इच्छाभूतं च रामस्य मकारं व्यञ्जनं च यत् ।
सा मूलप्रकृतिर्ज्ञेया महामायास्वरूपिणी ॥१५६॥

श्रीराम की महा आश्चर्य्य रूप इच्छा सो व्यञ्जन विंदुरूप समुझो सोई मूल प्रकृति महामाया स्वरूपिनी सब सृष्टि की कारन विचार करौ । या रीति से श्रीरामनाम में सब ईश्वर, सब लोक शक्ति स्थिति है । श्रीनाम से भिन्न कोई पदार्थ नहीं है, जिसको जौन अभिलाष होय सो श्रीरामनाम से ले लेवे विलम्ब बिना । एकबार श्रीनाम में सांची प्रीति प्रतीति करना चाहिए फेर सब सुगम हो जायगा ॥१५६॥

भाषितेयं रमुक्रीडा गुह्याद् गुह्यतरा परा ।
अन्यं प्रकरणं वक्ष्ये त्वत्तोऽहं चारुलोचने! ॥१५७॥

रमुक्रीड़ा महागुप्त से गुप्त सबसे श्रेष्ट हमने तुमसे कहा श्रीरामनाम प्रताप अनन्त है बिना सावधान समेत रटन किये जानो नहीं जाय है । अब और प्रकाशन से हे सुन्दर नेत्रवाली प्राणप्यारी! तुमसे कहते हैं सावधान समेत श्रवन मनन निदिध्यासन

करो, महा प्रमोदसागर श्रीरामनाम विचार है ॥१५७॥

नारायणो रकारः स्यादकारो निर्गुणात्मकः।
मकारो भक्तिरेव स्याद् महाह्लादाभिधायिनी॥१५८॥

परम ब्रह्मरूप रेफ है, ह्रस्वाकार परनारायन हैं। दीर्घाकार निर्गुन स्वरूप हैं, मकार भक्तिस्वरूप महाप्रमोद को बढ़ावती है १५८

विज्ञानंतु रकारः स्यादकारो ज्ञानरूपकः।
मकारः परमाभक्तिः रमुक्रीडोच्यते ततः ॥१५९॥

रकार विशद विज्ञान स्वरूप, आकार ज्ञान स्वरूप, मकार परम भक्तिस्वरूप है ताते सब में पूरन श्रीरामनाम विहारी हैं ॥१५९

चिद्वाचको रकारः स्यात् सद्वाच्याकार उच्यते।
मकारानन्दकं वाच्यं सच्चिदानन्द मव्ययम् ॥१६०॥

चिद् वाचक रकार है, सद् वाचक अकार है, मकार आनन्द वाचक है तीनों मिलिके सच्चिदानन्द स्वरूप सिद्धि होता है एक रस अविनासी स्वरूप है ॥१६०॥

रकारस्तत्पदो ज्ञेयस्त्वं पदोऽकार उच्यते।
मकारोऽसि पदं खंजं तत्त्वमसि सुलोचने!॥१६१॥

रकार तत्पद वाचक है, अकार त्वंपद वाचक है, मकार असिपद वाचक व्यापक स्वरूप है, तीनों मिलिके तत्त्वमसी सिद्ध होत है १६१

ब्रह्मेति तत्पदं विद्धि त्वं पदो जीवनिर्मलः।
ईश्वरोऽसि पदं प्रोक्तं ततो माया प्रवर्तते ॥१६२॥

ब्रह्म तत्पद, जीव त्वं पद, विमल रूप मकार असि पद ईश्वर स्वरूप जानो, ईस को इच्छा सोई माया है ॥१६२॥

वेदसारमहावाक्यं यत्तत्त्वमसि कथ्यते।

रामनाम्नश्च तत् सर्वा रमुक्रीडा प्रवर्तते ॥१६३॥

वेद का सार महावाक्य जो तत्त्वमसी आदि से ले करिके चारि हैं सो सब श्रीरामनाम से सिद्ध होते हैं। श्रीरामनाम के जपे से सबका जप सिद्ध हो जाता है। इह सब कथन का प्रयोजन इह है के श्रीरामनाम जापक नाम से भिन्न कोई पदार्थ न विचारे ॥१६३॥

अन्यं प्रकरणं त्वत्तो भक्त्या शृणु वदाम्यहम्।
संक्षेपेणैव यद् भेदं क्षराक्षरनिरक्षरैः ॥१६४॥

अब और प्रकरन तुमसे कहते हैं सनेह समेत श्रवन करो—संक्षेप से क्षर अक्षर निरक्षर का भेद तुमको ॥१६४॥

व्यञ्जनाच्च क्षरोत्पत्तिरकाराद् ब्रह्म चाक्षरः।
रेफो निरक्षर ब्रह्म सर्वव्यापी निरञ्जनः ॥१६५॥

बिन्दु से चराचर संसार क्षर रूप उत्पत्ति भया। अकार ते ब्रह्म आत्मा दोनों प्रगट भये, रेफ निरक्षर ब्रह्म महाप्रकाशमान सबमें पूर्ण माया रहित जानो ॥१६५॥

क्षरोऽभिधीयते माया ब्रह्मात्मानो तु चाक्षरः।
परमात्मा परब्रह्म निरक्षर इति स्मृतः ॥१६६॥

क्षर सब माया का स्वरूप है, तेज स्वरूप कूटस्थ ब्रह्म औ जीवात्मा अक्षर का स्वरूप है, परमात्मा परंब्रह्म निरक्षर स्वरूप है ॥१६६॥

सकल व्यापिनस्त्रेधा क्षराक्षरनिरक्षराः।
रामनामरमुक्रीडा प्रवीणेऽतः समुच्यते ॥१६७॥

क्षर अक्षर निरक्षर ये तीनों सबमें व्यापक हैं। रामनाम की सत्ता से अपने-अपने कार्य्यन में रमन करि रहे हैं, श्रीरामनाम से रमुक्रीड़ा धातु सिद्ध होता है। हे प्रवीण स्वरूपे प्रिये ! श्रीरामनाम सर्वोपरि हैं ॥१६७॥

रामनाम गुणं त्वत्तो संक्षेपेण प्रभाषितम् ।
रामनामप्रतापं च साम्प्रतं सूक्ष्मतः शृणुः ॥१६८॥

श्रीरामनाम का गुन संक्षेप से हमने कहा है, अब श्रीरामनाम प्रताप श्रवन संक्षेप से करो ॥१६८॥

रकारोऽनलबीजं स्याद् ये सर्वे वाडवादयः ।
कृत्वा मनोमलं सर्वं भस्म कर्म शुभाशुभम् ॥१६९॥

रकार अग्निबीज है, सकल बड़वादिक अग्नि को कारन हैं, ऐसा समुझि के रकार का उच्चारन करते हैं तिका शुभाशुभ कर्म भस्म हो जाता है ॥१६९॥

अकारो भानुबीजं स्याद् वेदशास्त्रप्रकाशकः ।
मकारश्चन्द्रबीजं च पीयूषपरिपूर्णकम् ॥१७०॥

अकार सूर्य्य बीज है वेद शास्त्र चराचर के प्रकाशक है । अविद्या तम को नाश करि देते हैं जो अनादिकाल से हृदय में स्थित है ॥१७०॥

त्रितापं हरते नित्यं शीतलत्वं करोति च ।
नाशयत्यथ सद्दीप्त्याभिद्यते हृदये तमः ॥१७१॥

मकार चन्द्र बीज है, अमृत से पूर्ण है, तीनों ताप दैहिक दैविक भौतिक विनाश करि देते हैं, परम शीतलता देते हैं ॥१७१॥

रकारोहेतुर्वैराग्यं परमं यच्च कथ्यते ।
अकारो ज्ञानहेतुश्च मकारो भक्तिहेतुकः ॥१७२॥

महातीव्रतर वैराग्य का कारन रकार है । इनको सनेह सावधानता समेत रटन करे तो ब्रह्मलोकादिक सुख से अरुचि हो जाय । अकार परम ज्ञान को कारन है, मकार पराभक्ति को कारन है ॥१७२॥

अतो देवि! रमुक्रीडा रामनाम्नः समुच्यते ।
सम्यक् शृणु प्रवीणे! त्वं हेतुरन्यद् वदामि ते ।१७३।

ताते हे देवि! रमुक्रीड़ा श्रीरामनाम से प्रगट समुझना चाहिये सब सम श्रीनाम की शक्ति रसनरूप सबमें पूरन हैं। हे प्रवीणे प्रिये! अब और कारन कहते हैं सावधान समेत श्रवन करो ॥१७३॥

वेदे व्याकरणे चैव ये च वर्णाः स्वरास्मृता ।
रामनाम्नैव ते सर्वे जाता नैवात्र संशयः ॥१७४॥

वेद व्याकरन में जेते वरन स्वर समुदाय हैं सो सब श्रीरामनाम से उत्पत्ति भये हैं। संशय इसमें नहीं समुझना किसी भांति से ॥१७४॥

रकारो मूर्द्धिन संचारस्त्रिकुटयाकार उच्यते ।
मकारोऽधरयोर्मध्ये लोमे लोमे प्रतिष्ठितः ॥१७५॥

रकार के उच्चारन का स्थान शीश है अकार के उच्चारन का स्थान त्रिकुटी है, मकार के उच्चारन का स्थान दोनों ओठ है और राम-राम श्रीरामनाम का स्थान है ॥१७५॥

रकारो योगिनां ध्येयो गच्छन्ति परमं पदम् ।
अकारो ज्ञानिनां ध्येयस्ते सर्वे मोक्षरूपिणः ॥१७६।

रकार का ध्यान योगीश्वर करके मस्तक पर परमपद जाते हैं अकारका ध्यान विचारि करिके ज्ञानी सब मोक्षरूप हो जाते हैं १७६

पूर्ण नामं मुदा दासा ध्यायन्त्यचलमानसाः ।
प्राप्नुवन्ति परां भक्तिं श्रीरामस्य समीपकम् ।१७७।

भक्त लोग अचल चित्त करिके पूर्ण नाम जपते हैं। श्रीराम की समीपता परभक्ति दोनों शीघ्र पावते हैं ॥१७७॥

अन्तर्जपन्ति ये नाम जीवन्मुक्ता भवन्ति ते ।
तेषां न जायते भक्तिर्न च रामसमीपका: ॥१७८॥

भीतर जपते हैं सो जीवन्मुक्त होते हैं । तिनको प्रेम लच्छना भक्ति श्रीराम की समीपता नहीं प्राप्त होती है, इहां अनुराग समेत का सिद्धांत है ॥१७८॥

जिह्वयाऽप्यन्तरेणैव रामनाम जपन्ति ये ।
ते च प्रेमपरा भक्ता नित्यं रामसमीपका: ॥१७९॥

अनुरागिन को आग्रह न चाहिए, जीभ से भीतर सभी जप करे । जो दोनों तरह से जप करते हैं सो परम प्रेमी भक्त हैं, श्रीराम के सदा समीपी हैं ॥१७९॥

योगिनो ज्ञानिनो भक्ता: सुकर्मनिरताश्च ये ।
रामनाम्नि रतास्सर्वे रमुक्रीडा त एव वै ॥१८०॥

योगी, ज्ञानी, भक्त कर्मकाण्डी, संसारी सब श्रीरामनाम में रमे हैं श्रीरामनाम की सत्ता पायके अपने अपने धर्म स्थित हैं, ताते रमुक्रीड़ा का अर्थ श्रीरामनाम से जानो ॥१८०॥

शृणुष्व मुख्यनामानि वक्ष्ये भगवत: प्रिये ।
विष्णुर्नारायण: कृष्णो वासुदेवो हरि: स्मृत: ॥१८१॥

श्रीभगवान् के मुख्य नामन का हे पार्वति ! तुम श्रवन करो—विष्णु नारायन, कृष्ण, वासुदेव, हरि ॥१८१॥

ब्रह्म विश्वम्भरोऽनन्तो विश्वरूप: कलानिधि: ।
कल्मषघ्नो दयामूर्ति: सर्वग: सर्वसेवित: ॥१८२॥

ब्रह्म, विश्वम्भर, अनन्त, विश्वरूप, कलानिधि कल्मषघ्न, दयामूर्ति, सर्वज्ञ सर्व सेवित ॥१८२॥

परमेश्वरनामानि संत्यनेकानि पार्वति !
परन्तु रामनामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमम् ॥१८३॥

परमेश्वर के अनन्त नाम हैं तिनमें श्रीरामनाम सबसे श्रेष्ठ महामुख्य है ॥१८३॥

ग्रहाणां च यथा भानुर्नक्षत्राणां यथा शशी ।
निर्जराणां यथा शक्रो नराणां भूपतिर्यथा ॥१८४॥

नवोग्रहन में जैसे सूर्य्य मुख्य है, नक्षत्रन में चन्द्रमा, देवतन में इन्द्र, मनुष्यन में राजा श्रेष्ठ है ॥१८४॥

यथा लोकेषु गोलोकः सरयू निम्नगासु च ।
कवीनां च यथाऽनन्तो भक्तानामञ्जनीसुतः ॥१८५॥

लोकन में गोलोक, नदिन में श्रीसरयूजी परम श्रेष्ठ हैं, कविन में शेषजी, भक्तन में महाश्रेष्ठ श्रीहनुमान्जी अञ्जनीनन्दन ।१८५।

शक्तीनां च यथा सीता रामो भगवतामपि ।
भूधराणां यथा मेरुः सरसां सागरो यथा ॥१८६॥

सब शक्तिन में महामुख्य श्रीजानकीजी, सब भगवानन् में प्रधान श्रीरघुनाथजी गिरिनमें प्रधान सुमेरु, सरन में मुख्य सागर १८६

कामधेनुर्गवां मध्ये धन्वीनां मन्मथो यथा ।
पक्षिणां वैनतेयश्च तीर्थानां पुष्करो यथा ॥१८७॥

गौअन में कामधेनु प्रधान है, धनुषधारिन में मुख्य कामदेव, पक्षिन में गरुड़, तीर्थन में पुष्कर मुख्य है ॥१८७॥

अहिंसा सर्वधर्माणां साधुत्वेऽपि दया यथा ।
मेदिनी क्षमिणां मध्ये मणीना कौस्तुभो यथा ॥१८८॥

सब धर्मन में श्रेष्ठ हिंसा का त्याग मुख्यतर है, साधुताई

में प्रधान दया है, क्षमाशीलन में भूमि प्रधान है, मनिन में कौस्तुभ मनि प्रधान ॥१८८॥

धनुषां च यथा शार्ङ्गः खड्गानां नन्दको यथा ।
ज्ञानानां ब्रम्हज्ञानं च भक्तीना प्रेमलक्षणा ॥१८९॥

सब धनुष में शारङ्ग धनुष श्रेष्ठ है । खड्गन में नन्दक विष्नु खड्ग श्रेष्ठ है। ज्ञानन में ब्रह्मज्ञान श्रेष्ठ है, भक्तिन में प्रेमलच्छना भक्ति श्रेष्ठ है ॥१८९॥

प्रणवः सर्वमन्त्राणां रुद्राणामहमेव च ।
कल्पद्रुमश्च वृक्षाणां यथाऽयोध्या पुरीषु च ॥१९०॥

सब मन्त्रन में ओंकार श्रेष्ठ है, रुद्रन में हम श्रेष्ठ हैं वृक्षन में कल्पवृक्ष श्रेष्ठ है, पुरिन में श्रीअयोध्याजी श्रेष्ठ हैं ॥१९०॥

कर्मणां भगवत्कर्म अकारश्च स्वरेष्वपि ।
किमत्र बहुनोक्तेन सम्यग् भगवतः प्रिय ॥१९१॥

कर्मन में भगवान् सम्बन्धी कर्म श्रेष्ठ हैं। स्वरन में अकार श्रेष्ठ है । बहुत कहने से कौन काम है ॥१९१॥

पार्वत्युवाच

नाम्ना तथा च सर्वेषां रामनाम परं महत् ।
नाम्नामेव च सर्वेषां रामनाम परं महत ॥१९२॥

सब भगवान् के नाम से श्रीरामनाम सर्वोपरि विराजमान हैं, भली भांति से तुमको भी समुझना चाहिए। पार्वतीजी पूछती हैं— सब नामन से श्रीरामनाम परम श्रेष्ठ आपने कहा है उसकी रीति कहिये ॥१९२॥

इदं त्वया कथं प्रोक्तं एतदर्थं वद प्रभो ।
त्वमेव सर्वं जानासि रामनाम सुवैभवम् ॥१९३॥

श्रीरामनाम सर्वोपरि आपने कहा तिसका अर्थ कृपा करिके कहिये, हे प्रभो! आप श्रीरामनामका वैभव यथार्थ जानते हैं १६३

श्री शिव उवाच

नाम्नामर्थमहं देवि संक्षेपेण वदामिते ।
नाम्नां भगवतोऽनेका गुणार्था कोटिकोटयः ॥१९३॥

श्रीशंकरजी बोले—सब नामन का अर्थ संक्षेप से हम कहते हैं। श्री परमेश्वर का अनन्त नाम है गुनके सम्बन्धी सो सुनो चित्त देय के ॥१६४॥

अप्सु नारे गृहं यस्यतेन नारायणः स्मृतः ।
जीवा नाराश्रया यस्य तेन नारायणोऽपि वा ॥१६५॥

जल में जिसका घर होय अथवा सब मनुष्यन जीव मात्रन में निवास करे सो नारायन कहे जाते हैं ॥१६५॥

सर्वं वसति वै यस्मिन् सर्वस्मिन् वसतेऽपि वा ।
तमाहुर्वासुदेवं वै योगिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥१६६॥

सब में जो बसे अथवा सब जिसमें बसे सो वासुदेव हैं, योगी तत्त्वदर्शी कहते हैं ॥१६६॥

व्यापकोऽपिहि यो नित्यं सर्वं चैव चराचरे ।
विशप्रवेशने धातोर्विष्णुरित्यभिधीयते ॥१६७॥

चराचर में जो व्यापक हैं सबमें प्रवेश किये हैं सबको घेर लिया है ॥१६७॥

कथ्यते स हरिर्नित्यं भक्तानां क्लेशनाशनः ।
भरणं पोषणं विश्वं विश्वंभर इति स्मृतः ॥१९८॥

भक्तन के भीतर बाहर का कठिन क्लेश जो हर लेवे सो हरिनाम का अर्थ है, सब विश्व का धारन पोषन करे सो विश्वम्भर है ॥१६८॥

वायुवद् गगने पूर्णं जगतामेव वर्तते ।
सर्वभिन्नं निराकारं निर्गुणं ब्रह्म उच्यते ॥१९९॥

पवन सम आकाश सम सब जगत में पूरन, सबसे भिन्न, निराकार निर्गुन तिसको ब्रह्म कहते हैं। ज्ञानी लोग अपने आत्मा को ब्रह्म से अभेद मानिके कृतार्थ होते हैं॥१९९॥

यस्यानन्तानि रूपाणि यस्य चान्तं न विद्यते ।
श्रुतयो यन्न जानन्ति सोऽप्यनन्तोऽभिधीयते २॥००॥

दोहा—रामनाम अनुपम मुकुर तामधि मनु मुख देखु ।
युगलानन्यशरन सुधा चाखिय तजि जगद्वेषु ॥

जिसके अनन्त रूप हैं और जिनका अन्त नहीं, जिनको वेद नहीं जानते हैं, सो अनन्त नामका अर्थ समझो ॥२००॥

यो विराजस्तनुर्नित्यं विश्वरूपमथोच्यते ।
कला वैधिष्ठितान् सर्वान् यस्मिन्निति कलानिधिः २०१

सब विश्व जिनका स्वरूप है सो विराट भगवान का अर्थ है, अनन्त कला जिसमें स्थित है सो कलानिधि कहावै हैं।२०१

सर्वाण्येतानि नामानि मया प्रोक्तानि यानि च ।
सच्चिदानन्द रूपाणि नामान्येतिनि सर्वशः ॥२०२॥

जितने नाम हमने कहा है सो सब सच्चिदानन्द स्वरूप हैं ॥२०२॥

परन्तु नामभेदश्च संक्षेपेण वदामि ते ।
सच्चिदानन्दरूपैश्च त्रिभिरेभिः पृथक् पृथक् ॥२०३॥

परन्तु नाम का भेद हम तुमसे कहते हैं सच्चिदानन्द पद के अभिप्राय को। श्रीरामनाम में यथार्थ भिन्न-भिन्न तीनों पद स्पष्ट झलकते हैं ॥२०३॥

वर्तते रामनामेदं सत्यं दृष्ट्वा महेश्वरि !
नामान्यन्यान्यनेकानि मया प्रोक्तानि पार्वति !२०४॥

श्रीरामनाम में सत्य ज्यों का त्यों सच्चिदानन्द पदका अर्थ है, और में यथार्थ नहीं घटता है ॥२०४॥

कस्मिन् मुख्यौ सदानन्दौ चिद्गमनं तथोच्यते ।
कस्मिंश्चित्सतौमुख्यौ चानन्दं गमनं स्मृतम् ।२०५॥

कोई नाम में सत आनन्द मुख्य हैं, चिद् गमन है, कोई में चित सत मुख्य है, आनन्द गमन है ॥२०५॥

त्वमेवमेव नामानि विद्धि सर्वाणि पार्वति ! ।
नामभेदं वदाम्यन्यं प्रवीणे! शृणु भक्तितः ॥२०६॥

याहि भांति से सब नाम में तीनों पद मुख्य गमन जानो और श्रीरामनाम का भेद श्रवन करो सावधान होयके, जाते तुम परम प्रवीन हो तुमसे कहनेमें हमको बड़ा हर्ष प्राप्त होता है २०६

अन्यानि यानि सर्वाणि नामानिसाक्षराणि च ।
निर्वर्णं रामनामेदं केवलं च स्वराधिपम् ॥२०७॥

और जितने नाम हैं सो अक्षर समेत हैं । श्रीरामनाम निरक्षर है सब स्वरन के राजा हैं ॥२०७॥

मुकुटं छत्रं च सर्वेषां मकारो रेफव्यञ्जनम् ।
रामनाममयास्सर्वे नामवर्णाः प्रकीर्तिताः ॥२०८॥

मुकुट छत्र स्वरूप हैं बिन्दु और रेफ सबके शिर पर विराजमान हैं। सब नाम सब अक्षर में श्रीरामनाम व्यापक हैं ॥२०८॥

अतएव रसक्रीडा नाम्नामीशाः प्रवर्तते ।
निजमत्यनुसारेण रामनामप्रभाषितम् ॥२०९॥

ताते श्रीरामनाम सब नामन में स्वामी हैं, सबके प्रेरक हैं सत्य जानना, हे प्रिये ! श्रीरामनाम का गुन स्वरूप प्रतापादिक संक्षेप से अपने मति के अनुसार कहा ॥२०९॥

रामनामप्रभावोऽयं केन वक्तुं न शक्यते ॥२१०॥

श्रीरामनाम के यथार्थ प्रभाव को कोई कहने में समर्थ नहीं है। ब्रह्मादिकन की बुद्धि अति सिथिल हो जाती है ॥२१०॥

कोटि तीर्थानिदानानि कोटियोगव्रतानिच ।
कोटियज्ञजपाश्चैव तपसः कोटि कोटयः ॥२११॥

कोटिन तीर्थ, दान अनन्त प्रकार के नाना प्रकार के अनन्त भांति के योगि अगनित प्रकारके व्रत कोटिन यज्ञ जप, तप,२११

कोटिज्ञानैश्च विज्ञानैः कोटिध्यानसमाधिभिः ।
सत्यं वदामि तैस्तुल्यं रामनाम नवर्तते ॥२१२॥

कोटिन ज्ञान विज्ञान, समाधि, अनन्त कल्प पर्य्यन्त करिके जो फल पुण्य प्राप्त होता है, सो श्रीरामनाम के उच्चारन सदृश नहीं, हम सत्य सत्य कहते हैं ॥२१२॥

परावाण्या भजेन्नित्यं रामनामपरात्परम् ।
त्यक्त्वा मोहं च मात्सर्य्यं वाक्यं चैवानृतं तथा ॥२१३

परावानी से कहिये प्रेमरूप उज्जवल रसना से श्रीरामनामको भजन करे। संसारी मोहकाम कोह मत्सर झूठ वचन ॥२१३॥

हृन्मलं क्रोधकामाद्या लोभमज्ञानमेव च ।
रागद्वेषं च दुःसंगं त्यक्त्वा दुर्वासनामपि ॥२१४॥

राग, द्वेष, मनका मल, लोभ, द्रोह, कुसङ्ग, दुर्वासना सबको त्यागिके श्रीरामनामका भजन करो, सब इन्द्रिनको जीतिके।२१४

सर्वेन्द्रियजितो भूत्वा पूतो वाह्यान्तरस्तथा ।
इत्थं नाम जपेन्नित्यं रामरूपो भवेन्नरः ॥२१५॥

भीतर बाहर पवित्र होयके श्रीरामनाम को जपो तब महा-

प्रमोद पावोगे। साक्षात् श्रीरामरूप सम दिव्य गुन सम्पन्न हो जावोगे, श्रीरामनाम का बड़ा प्रताप है ॥२१५॥

रहः पठति यो नित्यमेतत् कमललोचने !।
सर्वध्यानफलं तस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥२१६

एकांत में जो सदा इह श्रीनाम परत्य अध्याय का पाठ करेगा, हे प्रिये कमलनयने ! सकल ध्यान का फल तिसके सम किंचित् न हो सकेगा ॥२१६॥

शठाय परशिष्याय विषयाढ्याय मानिने ।
न दातव्यं न दातव्यं श्रीरामोपासकं विना ॥२१७॥

शठ, पराये का शिष्य, विषयी, मानी, श्रीरामनाम सनेह हीन को कदाचित् किसी भांति से न देखाना न देना न देना। बारम्बार हमने वरजि दिया है। श्रीरामोपासक बिना और को रहस्य कहना महा अयोग्य है ॥२१७॥

यदि दातव्यमन्येषां सद्यो मृत्युः प्रजायते ।
महतामेव सर्वेषां जीवनं प्रोच्यते यतः ॥२१८॥

जो और को लालच बस देगा तिसकी मृत्यु हो जायगी शीघ्रही, अभिप्राय इह है के प्रभु से विमुख हो जायगा सब महात्मन का परम जीवन धन श्रीरामनाम है ॥२१८॥

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके भाषाटीकायां श्रीनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरण संगृहीते श्रीरामायणवाक्यप्रमाण-निरूपणंनाम नवमः प्रमोदः ॥ ९ ॥

अथ श्रुत्युक्तवचनानि

यजुर्वेदे

मर्त्ता मर्त्तस्य ते भूरि नाममनामहे विप्रासो जातवेदसः१

यजुर्वेद में कहा है—आप जो अमर हैं, तिनका नाम जो मरन शील मनुष्य बारम्बार स्मरन मनन करते हैं सो विप्रादिक बरन अग्निसम तेजस्वी हो जाते हैं ॥१॥

अथर्बणोपनिषदि

जपात्तेनैव देवतादर्शनं करोति कलौ नान्येषां भवति।२

अथर्वणोपनिषद् में कहा है—श्रीरामनाम जप से श्रीरामका दर्शन होगया, कलियुग में अन्य साधनन से श्रीपरमेश की प्राप्ति दुर्ल्लभ है ॥२॥

यजुर्वेदे

यस्य नाम महद्यशः ॥३॥

यजुर्वेद में कहा है-श्रीरामका नामही महायश स्वरूप है ॥३॥

रामनाम जपादेव मुक्तिर्भवति ॥४॥

श्रीरामनाम जपही से मोक्ष होता है ॥४॥

भाल्लेयश्रुतिः

सर्वाणि नामानि यमाविशन्ति ॥५॥

भाल्लेय श्रुति—सब नाम अन्त में श्रीरामनाम में प्रवेश करि जायँगे अपना कारन जानिके ॥५॥

अथर्वणे

यश्चाण्डालोऽपि रामेति वाचं वदेत् तेन सह संवदेत्। तेन सह संवसेत् तेन सह सम्भुंजीयात् ॥६॥

अथवनवेद में कहा है—जो चांडाल भी श्रीरामनाम का रसना से उच्चारन करता है सो परम पावन है, उनके संग बोलना बैठना भोजन पावना परम उचित है, ग्लानि करना कदाचित न चाहिये ॥६॥

ऋग्वेदे

ॐपरं ब्रह्म ज्योतिर्मयं नाम उपास्यं मुमुक्षुभिः ॥७॥

ऋग्वेद में कहा है—मंगलमय परम प्रकाश रास श्रीरामनाम मुमुक्षुन को उपासना करना चाहिये ॥७॥

सामवेदे

ॐमित्येकाक्षरं यस्मिन् प्रतिष्ठितं तन्नाम ।
ध्येयं संसृतिपारमिच्छोः ॥८॥

सामवेद में कहा है—ओंकार एकाक्षर ब्रह्म श्रीरामनामांतरगत है ताते संसार तरने निमित्त श्रीरामनाम की उपासना करना चाहिये ॥८॥

श्रीरामोत्तर तापनीये

अकाराक्षरसंभूतः सौमित्रिर्विश्वभावनः ।
उकाराक्षरसंभूतः शत्रुघ्नस्तैजसात्मकः ॥९॥

श्रीरामोत्तरतापनी में श्रीराम का अर्थ कहा है—प्रणव से अभेद मानिके प्रथम अकार श्रीलक्ष्मन वाचक है। सब सृष्टि विश्व का कारन दूजा अकार उकार रूप शत्रुघ्न वाचक तैजसका कारन है ॥९॥

प्रज्ञात्मकस्तु भरतो मकाराक्षरसंभवः ।
अर्द्धमात्रात्मको रामो ब्रह्मानन्दैकविग्रहः ॥१०॥

मकार भरत जू का वाचक प्राज्ञ का कारन है। अर्द्धमात्रा रेफ श्रीराम वाचक ब्रह्मानन्द स्वरूप है ॥१०॥

श्रीरामपूर्वतापनीये

यथैव बटबीजस्थः प्राकृतश्च महान्द्रुमः ।
तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् ॥११॥

श्रीराम पूर्वतापनी में कहा है—जैसे बट बीज में प्राकृत

महा वटबृक्ष है तैसे ही श्रीराम बीज में चराचर सबसृष्टि है॥११

यथा बीजात्मको मन्त्रो मन्त्रिणोऽभिमुखो भवेत्॥ १२

जैसे वाच्य का वाचक शब्द से सन्मुख हो जाता है तैसे श्रीरामनाम मन्त्रसे श्रीराम सन्मुख इस जीव के हो जाते हैं १२

धर्ममार्गं चरित्रेण ज्ञानमार्गं च नामतः ।
तथा ध्यानेन वैराग्यमैश्वर्यं तस्य पूजनात् ॥१३॥

श्रीरामपरमानन्द धामने बरनाश्रम धर्मकी राहअपने शुभाचरन द्वारा लोगों को उपदेश किया और ज्ञान का मार्ग अपने नाम जप द्वारे उपदेश किया, अभिप्राय इह है के बिना नामके स्वरूप बोध न हो सकेगा और अपने महा मधुर मनहरन स्वरूप ध्यान करि वैराग्य की राह उपदेश किया और पूजन द्वारे अनमादिक ऐश्जर्य्य मात्र को राह उपदेश किया ॥१३॥

रामनाम भुवि ख्यातमभिरामेण वा पुनः ।
अग्निसोमात्मकं विश्वं रामबीजप्रतिष्ठितम् ॥१४॥

करुनासिंधु जू के श्रीरामनाम लोक में ख्यात है, रमता सुन्दरता समाधि से अग्नि चन्द्रात्मक जगत् श्रीराम बीज में स्थित हैं ॥१४॥

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि ।
इति रामपदेनासौ परंब्रह्माभिधीयते ॥१५॥

सब योगीजन सच्चिदानन्द आनन्द स्वरूप में रमन करते हैं इसी कारन से श्रीराम परब्रह्म स्वरूप हैं ॥१५॥

रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्यापकं चष्टे ।
येनासावमृता भूत्वा स्वर्गी भवतीति ॥१६॥

श्रीमहादेव जी तारक नाम उपदेश करते हैं जिसके सुनने

से जीवमात्र महामोक्ष को प्राप्त होते हैं ॥१६॥

श्रीरामोपनिषदि

राम एव परं ब्रह्म राम एव परं तपः ।
राम एव परं तत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम् ॥१७॥

श्रीराम उपनिषद में कहा है—श्रीराम परंब्रह्म स्वरूप परम तत्त्व स्वरूप हैं, संसार से तारक हैं ॥१७॥

स्व भूर्ज्योतिर्मयोऽनन्तरूपी स्वेनैव भासते ।
जीवत्वेनेदमो सृष्टिस्थितिहेतुर्लयस्य च ॥१८॥

श्रीरामनाम आपही करिके प्रकाशित हैं। अनन्तरूप शक्ति सम्पन्न हैं, प्रनव के प्रान हैं, सृष्टि स्थिति लयके कारन हैं ॥१८

रेफारूढो मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एव चेत् ॥१९॥

रेफ में सब ईश्वर सब शक्ति स्थिति है। श्रीरामनाम से भिन्न कोई पदार्थ नहीं है, सबमें श्रीरामनाम की सत्ता पूर्ण है ॥१९॥

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदविवासे परात्परैश्वर्यदायके भाषाटीकायां श्रीनामपरत्वप्रकाशिकायां श्रीयुगलानन्यशरण संगृहीते श्रुतिवाक्यप्रमाण-निरूपणंनाम दशमः प्रमोदः ॥ १० ॥

अथ संग्रह श्लोकानि

नानापुराणस्मृतिसंहितादि
ग्रन्थोक्तवाक्यानि विचारितानि ।
नाम्नः परत्वानि समुद्धृतानि
श्रीमद्युगानन्य प्रपन्नकेन ॥१॥

अथ संग्रह करने वाला अपना श्लोक श्रीरामनाम माहात्म्य प्रतिपादक लिखता है—नाना पुरान, संहिता, स्मृतिन का सार

तम विचारिके श्रीरामनामप्रतापप्रकाश ग्रंथ रचना किया है। श्री रामनाम अनुरागिन के सुख बोधार्थ सो विशेष श्रवन किया चाहिये ॥१॥

ये सर्वसौख्यदमिदं रघुनन्दनस्य
नाम्नः परत्वमखिलार्य्यवरैरुपास्यम्।
शृण्वन्ति शुद्धमनसा च पठन्ति नित्यं
श्रीरामनाम्नि परमां रतिमाप्नुवन्ति ॥२॥

जौन जन सकल सुखदायक श्रीरामनाम परत्व प्रतिपादक ग्रन्थ को श्रवन मनन पठन करते हैं सो श्रीरामकी प्रीति अनपायनी पावेंगे। श्रीरामनाममय ग्रन्थ सब महात्मन करिके उपास्य है ॥२॥

श्रीरामनामरसिकाः प्रपठन्ति भक्त्या
शृण्वन्ति चैव सततं सुधियः प्रयत्नात् ।
नाम्नः परत्व मखिलागमसारभूतं
निन्दन्ति नष्टमतयो ह्यधमा महान्धाः ॥३॥

जौन रसिक पण्डित सावधान होयके श्रीरामनाम को श्रवन मनन करते हैं सो धन्य हैं। सब श्रुति पुरान का सार श्रीरामनाम माहात्म्य की निन्दा करते हैं सो महामूढ़ अंध तम कूप में पड़े हैं, घोर नरक में जांयगे ॥३॥

श्रीरामनाममाहात्म्यं श्रुत्वा यो नैव हृष्यति ।
राक्षसं तं विजानीयात् महापापौघनिकृन्तनम् ॥४॥

श्रीरामनाम परत्व सुनिके जिसके भीतर बाहर हर्ष प्राप्त नहीं होता तिसको राक्षसाधम जानना चाहिये, महापापन को ढेर उसको जानना ॥४॥

श्रीरामनाममय ग्रंथ सर्वदा श्रवन पठन विचारन योग्यहै श्रीराम नाम उपासक बिना औरनको सुनावना कदाचित् न चाहिये ॥१०

आनन्दाख्य संहितायाम्

जपन्ति यद् विष्णुशिवस्वयंभुवो
लक्ष्म्यादिवैकुण्ठचराश्च नित्याः ।
तदेव तत्त्वं च मुनीन्द्रयोगिनां
श्रीरामनामामृतमाश्रयं मे ॥११॥

आनन्दाख्य संहिता में कहा है–जौन श्रीरामनामको ब्रह्मा विष्णु, महेश तथा चौदह मनु श्रीलक्ष्मीजी आदिक नित्य पार्षद महात्मा मुनीद्र योगिन सब जपते हैं। सबका परम सिद्धान्त तत्त्व श्रीरामनाम महामोदधाम परम अभिराम है। श्रीरामनामसे परे अपर तत्त्व मन्त्र नाम जो प्रतिपादन करते हैं वे चाहे लोक में महात्मा सिद्ध पूजनीय होंय परन्तु उनका संग श्रीराम भक्तन को न करना चाहिये कबहीं ॥११॥

रे मन तुमने रामनाम प्रताप प्रकाश को भली भांति पढ़ा और पढ़ कर समझा, जाना भी रामनाम महिमा का ज्ञान भी प्राप्त किया रामनाम की महिमा जान करके तुम भी श्रीरामनाम का श्रद्धा पूर्वक भजन करो।

"राम भजे हित होय तुम्हारा"

यथाः—

सदा राम जपु, राम जपु, राम जपु, राम जपु
राम जपु, मूढ़ मन बारबारं ।
सकल सौभाग्य सुख-खानि जिय जानि सठ
मानि विश्वास बद बेदसारं ॥१॥

कोसलेन्द्र नव-नीलकंजाभतनु
मदन-रिपु-कंजहृदि चंचरीकं ।
जानकीरमन, सुखभवन, भुवनैक प्रभु
समर-भंजन परमकारुनीकं ॥२॥
दनुज-वन-धर्मधुज, पीन आजानुभुज
दण्ड-कोदंडवर-चंड-बानं ।
अरुन कर चरन मुख, नैन राजीव, गुन,
अयन महुमयन-सोभा-निधानं ॥३॥
वासनावृन्द-कैरव-दिवाकर काम-क्रोध
मद कंज-कानन-तुषारं ।
लोभ-अतमत्त-नागेन्द्र-पंचाननं
भक्तहित हरन संसार-भारं ॥४॥
केसवं, क्लेसहं, केस- वदित
पदद्वन्द मंदाकिनी-मूलभूतं ।
सर्वदानन्दसंदोह, मोहापहं
घोर संसार-पाथोधि-पोतं ॥५॥
सोक-संदेह-पाथोदपटलानिलं
पाप-पर्वत-कठिन-कुलिसरूपं ।
संतजन-कामधुक-धेनु विस्रामप्रद
नाम कलि कलुष-भंजन-अनूपं ॥६॥
धर्म-कल्पद्रुमाराम हरिधाम-पथि
संबलं मूलमिदमेव एकं ।
भक्ति-वैराग्य-विज्ञान-सम-दान-दम
नाम-अधीन साधन अनेकं ॥७॥

तेन तप्तं, हुतं, दत्तमेवाखिलं
तेन सर्वं कृतं कर्मजालं ।
येन श्रीरामनामामृतं पानकृत
मनिशमनवद्यमवलोक्य कालम् ॥८॥

सुपच खल भिल्लजमनादि हरिलोकगत
नामबल विपुल मति मलिनपरसी ।
त्यागि सब आस-संत्रास भवपास-असि
निसित हरिनाम जपु दासतुलसी ॥९॥

—:०००:—

दोहा-टीका नाम प्रताप प्रिय परम प्रकाश निवास ।
श्रावन शुक्ला सप्तमी रवि दिन पूरन खास ॥१॥
सम्वत् शुचि उन्नीसशत बाइस मुद मन दानि ।
श्रीटीका पूरन भई पढ़त सुनत सुखखानि ॥२॥
श्रीसरयूतट लखन कट कोट मध्य हरषाय ।
नाम प्रताप प्रकाश पर टीका रची बनाय ॥३॥
प्रथम तीन टीका करी गई सो जहँ तहँ देश ।
अब तुरीय टीका नवल रची सयुक्ति विशेषि ॥४॥
युक्ति सयुक्ति अनुक्तिबर भुक्ति मुक्ति प्रद जानि ।
वानी श्रीमहाराज की सकल सुमङ्गल खानि ॥५॥

इत्ययं ग्रन्थः समाप्तः

भजन

१-श्रीराम राम राम, श्री राम राम राम, श्री राम राम राम।

प्रेम मुदित मनसे कहो राम राम राम ॥

पाप कटैं दुःख मिटै लेत राम नाम।

भव समुद्र तरन सुखद एक राम नाम ॥

राम० राम राम राम, श्री राम राम राम श्री राम राम राम।

प्रेम मुदित मनसे कहो राम राम राम।

परम शान्ति सुख निधान एक राम नाम।

मरन काल मुक्ति करत कहत राम नाम ॥

राम०टेक राम राम राम, श्री राम राम राम श्री राम राम राम।

प्रेम मुदित मनसे कहो राम राम राम ॥

मात पिता बन्धु सखा सबई राम नाम।

भक्त जनन जीवन धन एक राम नाम ॥

राम० राम राम राम श्री राम राम राम श्री राम राम राम

प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम ॥

नारदादि शिव बिरंचि कहत रामनाम।

राम गुरु को प्राण सम्बल एक राम नाम।

राम० राम राम राम, श्री राम राम राम, श्री राम राम राम ॥

२-राम ही नाम विश्राम है जीव को, और विश्राम कछु नाहि दीषै।
सरग अरु नरक पाताल छूटै नाहि, जहां जिय जाय तहँ कालपीसै।
देखु भवसिंधु में नाम नौका बनो, तासु के बीच जब जीव आवै।
तरै भवसिंधु सुखधाम पहुँचेसही, कालके चोट पुनि नाहि खावै।

३-नामही ज्ञान अरु ध्यान पुनि नामही, नामही भक्ति वैराग्य भाई।
नामही सूर्य अरु तेज पुनि नामही, नामही से योग की युक्ति पाई।
नामही शील अरुसाँचु पुनि नामही, नामही याग जप तप कीन्हा।
कहें गुरुदेव कर्त्तव्य कछु न रहा, सम जब नामही नाम चीन्हा ॥

श्लोक।

अहंभवन्नामगृणन् कृतार्थो वसामिकाश्यामनिशंभवान्या
मुमूर्षमाणस्य विमुक्तयेऽहं दिशामि मन्त्रं तव रामनाम
यही है अमर मन्त्र तथा श्रीरामनाम प्रताप प्रकाश।

* शवरी की भजन *

भजन नं० १

मैं कर रही रास्ता साफ राम मेरे घर कब आओगे।
मैंने कब की आशा धारी, अब बैठी करमा मारी,
मोदीन हीन मतिहीन भीलनी को, कब अपनाओगे ।। मैंकर०।।
मैंने चाख चाख फल राखे सुन्दर मीठे मधु माखे।
शिवरी के जूठे बेरों का नाथ कब स्वाद बताओगे।। मैंकर०।।
कवि भाल कहें यों चरके सब जीव जन्तु जग भरके।
अब भजन करो सियावर के वही वैकुण्ठ पहुँचावेंगे ।। मैंकर०।।

भजन नं० २

रामा रामा रटते रटते बीती रे उमरिया,
रघुकुल नन्दन कब आओगे दासी की झोपड़िया।
मैं शिवरी भिलनी की जायी भजन भाव न जानूँ रे,
नाथ तेरे दर्शन के कारण बनमें जीवन पालूँ रे।
चरण कमल से पावन करदो शिवरी की झोपड़िया ।।रामा०।।
रोज सबेरे बनमें जाकर फल चुन चुन कर लाऊँगी,
सन्मुख नाथ बिठाकर तुमको प्रेम से भोग लगाऊँगी,
मीठे मीठे बेरों की भर लाई मैं छबरिया ।।रामा०
शवरी देखि राम गृह आये। गुरु के बचन समुझि हिय भाये।।
शवरी पड़ी चरन लपटाई।
कन्दमूल फल सुरस अति दीन राम कहँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाये बारम्बार बखानि।

कन्दमूल तो गौण है प्रधानता तो फल की है फलों में भी प्रधानता बेर की है शबरी मतङ्ग ऋषि की शिष्या थी वहां बेर का जंगल था उसी बेर को चाख चाख कर जमा करती थी, श्रीराम लक्ष्मण को घर आये देखकर शबरी कृत-कृत्य होगयी। बैर का भोग लगायी श्रीराम जी बैर प्रशंसा करते हुए खाये किन्तु लक्ष्मण जी नहीं पाये। तो श्रीराम जी बोले भैय्या! ऐसा फल तो कभी न पाया, जिसने दिलसे दिल चिपकाया। माता ने जो दूध पिलाया, वही स्वाद इसमें भी पाया ॥ आज स्वर्ग के भोग मिले, अरमान आज निकले दिलके।

उसी जगह शबरी को स्वजातीय बहुत से भील बालक आये श्रीराम जी को देख कर मुग्ध हो गये। और चारों तरफ घेर कर खड़े हो गये और प्रार्थना करने लगे।

भाषा 'भोजपुरी'

तू राज बाबू हउआ रौआ।
हम बनवासी कोल भील के बेटउआ ॥रौआ०॥
हम बनबासी लोग, नाही बानी तोहरा जोग।
मन रीझि गैल तोहर देखके सुभउआ ॥रौआ०॥
का खिलाईं का पिलाईं कहवां आसन लगाईं।
हमनि के धन, फल फूल ओ पतउआ ॥रौ०॥
केहीं तोहरा घरे माहीं, माई बाप बा की नाहीं।
तपसी वेष तोहार लागता बनउआ ॥रौ०॥
चल हमरा घरे रह, चलब की ना किछुकह।
मर्जीबा तोहार किछु नाहीं बा दबउआ ॥रौ०॥

भाग हमारो आगमन राउर कोशलराय।
वेद बचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन।
बचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक बैन ॥

इस प्रकार भगवान श्रीरामचन्द्र—
बन बस कीन्हें चरित अपारा। श्रुति शारदौ न बरनै पारा ॥
इत्यादि लङ्का पर्यन्त भक्तों का कल्यान करते हुये १४ वर्ष की यात्रा पूर्ण करके वापस श्री अयोध्या आये।
राज बैठ कीन्हें बहु लीला। कहत महामुनि बरद सुशीला।
पुनः माता कौशल्या का राजभोग—

—:श्री राम जी का छप्पन भोग व राजभोग:—

अयोध्या में माता श्री कौशल्या और गुरु पत्नी अरुन्धती माता तीसरा जनकपुर में सुनैना माता के द्वारा चौथा दण्डक बन में शबरी माता के द्वारा; तीन राजभोग और शबरी का महाराज भोग। जिसको तुलसी दास जी विनयपत्रिका में लिखते हैं राम जी कह रहे हैं कौशल्या माता को—

घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जहँ जहँ पहुनाई।
तहँ तहँ कह शबरी के फलन की रुचिमाधुरी न पाई ॥

यथा—

१- परम आनन्द भयो अवध में श्री राम के काज।
श्री आनन्द अनन्द उमेद में श्री रामचन्द्रके राज ॥
छप्पन रंग प्रकार के व्यञ्जन धरे सम्हार।
व्यंजन धरे हैं सम्हार परसे सैकड़ों ही थार ॥
और सोंनेकी मँगवाई भरके गंगा जल की झारी है ॥

२- सैकड़ों अमखोरे और कटोरे अरु गिलास धरे।
सींचि के पनवारौ बन्दोबस्त कियो भारी है ॥

३- दही को परोस जामें शक्करहू भुकाइ दीनी।
पूड़ी और कचौड़ी जिनके संग में सुहारी है ॥

४- लड्डू मोतीचूर मुठिया, बेसनी, मगध के दिव्य।

खोओं के करनशाही, चूरमा की तयारी है ॥

५- पेठे की मिठाई, फैनी खुरमा, खजला, बालूसाही।
मोदक कुटवाइ जामें अच्छी दाख डारी है॥

६- घेवड़ों में रंग सोहतों दे धरे आबदार।
पेड़ों की तारीफ कोई जाने क्या अनारी है ॥

७- लच्छे घीया के मेवावाटी सन्देश छांना।
बासोंदी खुरचन और रबड़ी खूब गाड़ी है ॥

८- जद्री में गुलाबी पाक पिस्ता में कुंद खेंच्यौ।
सिकरन और मिश्री स्वेत कुंजा की जमाई है ॥

९- सीता भोग. राम भोग कृष्ण भोग माखन है।
सोंन पापड़ी और सोन हलुआ की ही अति बहारी है॥

१०- हलुआ सूजी कौ मूंगदाल कौ सुदिल खुश्याल।
माखन बड़ा कुलफी में शीतलता न्यारी है ॥

११- जबलों अनेक रूप परसीं मिठाई कौशल्या जी।
तबलों सुमित्रा जी ने रसोई भेजी प्यारी है।

१२- एक ओर सखरी में सोहत खिलेमां भात।
भात मीठे बादशाही जिनपै केसर रंग भारी है॥

१३- नाना देश देशन की बिधि सों बनी चारौदार।
छोटी छोटी फुलकियन की गड्डीयां सम्हारी है ॥

१४- कढ़ी नुकती की पोदीना की पकौड़िन की।
पापड़ अचार चटनी कई रूप वारो है ॥

१५- भुनीं भई मिरचा कचरी भुजिया अनेक रंग।
केला के पत्तन पै परसी खीर प्यारी है ॥

१६- जबलग परसगार करें परसगारी तभी।
सेवक लै आये नमकीन हर्ष भारी है।

१७- झमकें नमकीन सोहतोंदे खटाई नाहि ।
किसमिसन के रायते में रोचक बड़ी प्यारी है ॥
१८- निकती सुआर मिरचोंनी है मसालेदार ।
कौला के बीज दालमोट धरी न्यारी है ॥
१९- अव्वल पापड़ करें भुजवाइ घी में छोंक दीनी धोवादार।
अरुई की पकौड़ी मूँग बड़ी साजी है ॥
२०- सुन्दर समोसा मजा मोंहन की मठरीन पै ।
गर्मागर्म खस्ता उतरने की तैयारी है ॥
२१- सेउकिरब भजिया और परमी गाँठिया हू ।
तबलों परसगार ले आए फल फलारी है ॥
२२- मूँगफली आम अनानाश और छिले अनार ।
छोटे छोटे टूक कर गंगलियां सम्हारी है ॥
२३- खिन्नी नाशपाती और नारंगियों की फाँक धरी ।
दोनन में परस दीनी जामुन बड़ी कारी है ॥
२४- अव्वल तो चकोतरा को छिलके अँमनियां कियो ।
खीरा, ककरी, अमरूदों की चाट की बहारी है ॥
२५- परसे काश्मीरी सेव संतरा मौस्समी छिली ।
खुल रही पिटारी परसी अंगूरों की डारी है ॥
२६- इतने बीच परसतही परसगार खड़े भए ।
छोटी छोटी बेलिन में मुरब्बा की तैय्यारी है ॥
२७- रस भरे नीबू अरु इमरतबान आँनधरे ।
अदरक कौ अचार हरी मिर्च धरी न्यारी है ॥
२८- सोंठ कौ कुआरौ बड़ादहीकौ मसालेदार ।
जलजीरे के संग टिकियां फूली सोहैं न्यारी है ॥
२९- दिल पसन्द नौरतन सो बादशाही चटनी धरी।
पिस्ता बदाम तलकें तस्तरी सम्हारो है ॥

३०, टेंटी को परस के माता सब विनती करें ।
जीवों प्यारे रघुबर ये सब महिमा तिहारी है ॥
३१- ऐसी प्रीति भारी सब अवधपुरी में सोर भयो ।
माताहू आनन्दमय सुधि सब बिसारी है ॥
३२- श्री भरत जी बोले लक्ष्मण जी तुम शीघ्र जाओ महलन में।
पान और मसाले की बीरी करो त्यारी है ॥
३३, चन्दनहू लगायौ श्री सीताराम जी अंग मांहि ।
फूलन सुगन्ध भरी माला उर डारो है ॥
३४- चाहे रहे सन्त सुधि लीजियो कृपा निधान ।
भेजिए प्रसादी जाके हम भी अधिकारी हैं ॥
३५- और और व्यञ्जनन की कहाँ लौं बड़ाई करे विमल ।
जेवत श्री राम जेवावत कौशल्या सुखकारी है ॥

श्लोक-मङ्गलं कौशलेन्द्राय महनीय गुणाब्धये ।
चक्रवर्ति तनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥
तदेवलग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चंद्रबलंतदैव।
विद्याबलं धर्मबलं तदैव सीतापते तेङ्घ्रिं युगंस्मरामि ।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणिपश्यंतु, माकश्चिद्दुःख भाग्भवेत् ।
यदक्षरं पदंभ्रष्टं मात्राहीनं यद्भवेत् ।
तत्सर्वंक्षम्यतां देव प्रसीद रघुनन्दनम् ॥

—:०:—

माता श्रीकौशल्या जी का आशीर्वाद

यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्व देव नमस्कृते,
वृत्रनाशे समभवत्तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥१॥
यन्मङ्गलं सुपर्णस्य विनताऽकल्पयत्पुरा,
अमृतं प्रार्थयानस्य तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥२॥
अमृतोत्पादने दैत्यान्घ्नतो वज्रधरस्य यत्,
अदितिर्मङ्गलं प्रादात्तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥३॥
त्रिविक्रमाप्रक्रमतो विष्णोरतुल तेजसः,
यदासीन्मङ्गलं राम! तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥४॥
ऋतवः सागरा द्वीपा वेदा लोका दिशश्च ताः,
मङ्गलानि महाबाहो! दिशन्तु तवमङ्गलम् ॥५॥
मयार्चिता देवगणाः शिवादयो,
महर्षयो भूतगणाः सुरोरगाः ।
अभिप्रयातस्य चिरं चिराय ते,
हितानिकाङ्क्षन्तु दिशश्चराघवः ॥६॥